राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत
RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय
मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-२, अंक-३ नवी मुंबई दिसम्बर २०१५ विक्रमी सं. २०७२ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-२४ रु. १०

प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा के दौरान भारत के रंग में रंगा ब्रिटेन

लंदन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत के लिए लंदन सज चुका था। रॉयल एयरफोर्स ने प्रधानमंत्री का औपचारिक स्वागत किया और सलामी दी। साथ ही लंदन आई को तिरंगे के रंगों में रंग दिया गया। लंदन में भारतीय मूल के काफी लोग रहते हैं। उन सब लोगों में पीएम नरेंद्र मोदी की तीन दिन की यात्रा को लेकर काफी खुशी थी।

लंदन के किंग्स कॉलेज में जब पत्रकारों ने विद्यार्थियों से बात की तो सबका यह कहना था कि भारत की ओर पूरी दुनिया देख रही है इसीलिए प्रधानमंत्री की यह यात्रा अहम है। उन्होंने गुजरात को मॉडल स्टेट बनाया, अब भारत को बनाएंगे, ऐसा सभी

छात्रों का मनाना है।

यह पूछने पर कि क्या भारत की इमेज असहनशीलता जैसे मुद्दों से खराब हुई है, उनका कहना था कि भारत की इमेज ठीक करने के लिए सभी राजनीतिक पार्टियों को जिम्मेवार बनाने की जरूरत है।

निवेशकों को भी प्रधानमंत्री की यात्रा से काफी उम्मीद रही। लॉर्ड बिलि मोरया जो कि मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं, ने इस बारे में कहा कि भारत और ब्रिटेन में काफी समानताएं हैं। ये व्यापार को आगे बढ़ाने में मददगार होगा। भारत में रिफॉर्म हो रहे हैं, लेकिन कुछ जो अटके हैं, जैसे जीएसटी, लैंड रिफॉर्म उन्हें जल्द लागू करने की जरूरत है। भारत निवेशकों के लिए बहुत बड़ा डेस्टिनेशन है।

प्रधानमंत्री मोदी के स्वागत में ब्रिटिश प्रधानमंत्री कैमरन की पत्नी एक भारतीय नारी की तरह साड़ी पहने हुए दिखायी दीं, जो एक विलक्षण बात है। उनके ऊपर भी भारतीय संस्कृति का रंग चढ़ा मालूम होता था। ■

नीतीश ने की बिहार में शराब बंदी की घोषणा

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नई आबकारी नीति के तहत अगले १ अप्रैल से राज्य में शराब बंदी की घोषणा की है। पांचवी बार बिहार का कार्यभार संभालने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का यह बड़ा कदम है। चुनावों से पूर्व उन्होंने महिलाओं से वोट मांगते समय इस बात का वादा किया था कि वह अगर दोबारा सत्ता में आते हैं तो राज्य में पूरी तरह शराब पर पाबंदी लगा देंगे।

पांचवी बार मुख्यमंत्री का पद संभालने के बाद नीतीश कुमार ने अपने चुनावी वादे को पूरा करना शुरू कर दिया है। उन्होंने १ अप्रैल २०१६ से राज्य में पूरी तरह शराब पर पाबंदी लगाने की घोषणा की है।

पटना में पत्रकारों से बात करते हुए नीतीश ने कहा कि बिहार में अगले साल से नशाबंदी लागू कर दी जाएगी। इसके लिए एक्शन प्लान तैयार किया जा रहा है, जिसे जल्द ही अमल में लाया जाएगा।

नीतीश ने कहा कि शराब के कारण बिहार के गरीब इलाकों में लोगों का जीवन स्तर काफी बिगड़ गया है। गरीब परिवारों के लोग शराब के नशे में अपना जीवन तबाह कर रहे हैं इसलिए सरकार ने शराब पर पूर्णतः पाबंदी लगाने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि वह अपना वादा पूरा कर रहे हैं। ■

अब आसान होगी कैलाश मानसरोवर यात्रा

नई दिल्ली। कैलाश मानसरोवर के यात्रियों के लिए चीन से नाथू ला का सड़क मार्ग खुलवाने के बाद मोदी सरकार ने चीन में स्थित इस पवित्रतम तीर्थ को जाने वाले उत्तराखंड के पारंपरिक दुर्गम रास्ते पर पर शानदार चार लेन की

सड़क बिछाने का काम शुरू कर दिया है, जो दो साल में बन कर तैयार हो जाएगी।

उत्तराखंड के पारंपरिक लिपुलेख सीमा तक की शानदार सड़क बन जाने के बाद तीर्थयात्री सड़क मार्ग से कैलाश मानसरोवर के दर्शन करके भारत से एक दिन में ही भारत लौट सकेंगे। हालांकि कैलाश पर्वत की परिक्रमा के लिए लोगों को वहां रुकने की आवश्यकता पड़ेगी। यह सड़क सेना के सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) द्वारा ऋषिकेश-अल्मोड़ा-धारचूला-लिपुलेख सीमा तक बनायी जा रही है। इसके लिए पहाड़ काटने के लिए ऑस्ट्रेलिया से विशेष अत्याधुनिक मशीनें मंगवाई गई है जिन्होंने करीब तीन माह के अंदर ३५ किलोमीटर से अधिक पहाड़ काट लिया है और दिन-रात तेजी से काम चल रहा है।

लिपुलेख दर्रे के पार चीन में सीमा से मानसरोवर की दूरी महज ७२ किलोमीटर है और सीमा से वहां चीन ने शानदार सड़क पहले ही बना रखी है। मोदी सरकार की योजना धारचुला में पर्यटक आधार शिविर को विकसित करने की है जहां से तीर्थयात्री एक दिन में ही मानसरोवर का दर्शन करके भारत लौट सकेंगे।

इस सड़क के बन जाने से कैलाश मानसरोवर जाने वाले यात्रियों की संख्या में खासा इजाफा होने की उम्मीद है। लिपुलेख दर्रे के दुर्गम मार्ग से पैदल यात्रा पर जाने वाले यात्रियों को करीब एक से डेढ़ लाख रुपए प्रति यात्री व्यय करने पड़ते हैं और सुविधाओं के अभाव के कारण दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। दूसरा इस यात्रा में १५-१६ दिन का समय लगता है।

सूत्रों के अनुसार नई सड़क के बन जाने के बाद यात्रा अवधि और लागत में भारी कमी आना तय है। उन्होंने यह भी बताया कि इस सड़क के बन जाने से एक और फायदा यह होगा कि कुमाऊ के पिछड़े इलाके

(शेष पृष्ठ २ पर)

ISIS के खिलाफ हमले तेज, फ्रांस और रूस ने जमकर बरसाए बम

पेरिस। पेरिस में हुए आतंकी हमले और एक रूसी विमान को बम से उड़ाने की घटना के बाद फ्रांस और रूस एक असामान्य गठबंधन के तहत सीरिया में इस्लामिक स्टेट के आतंकियों को निशाना बनाने के लिए अपनी सैन्य और सुरक्षा सेवाएं समन्वित करने पर सहमत हुए हैं। दोनों देशों के युद्धक विमानों ने आईएस के गढ़ राक्का पर बमबारी की है। दोनों देशों ने आईएस को खत्म करने का संकल्प लिया है।

फ्रांस की पूर्वी भूमध्यसागर में अपने प्रमुख युद्धपोत भेजने की तैयारी के बीच रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि फ्रांसीसियों के साथ सीधा संपर्क स्थापित करना और उनके साथ सहयोगी के तौर पर काम करना जरूरी है। पूर्वी भूमध्यसागर में रूसी नौसेना पहले से ही तैनात है।

फ्रांसीसी राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलोंद ने आईएस के खिलाफ सहयोग मजबूत करने के लिए २६ नवंबर को पुतिन के साथ मास्को में वार्ता की। वह इससे पहले २४ नवंबर को वाशिंगटन में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा से मिले। फ्रांस में पुलिस ने पेरिस हमलों के बाद सुरागों का पता लगाने की कोशिशों के बीच गिरफ्तारियां तेज कर दीं और हथियार जब्त किए।

उल्लेखनीय है कि शुक्रवार १३ नवम्बर की रात पेरिस में हुए सिलसिलेवार आतंकी हमलों में १२९ लोग मारे गए थे और सैकड़ों अन्य घायल हुए थे। इन हमलों की जिम्मेदारी आतंकी संगठन आईएसआईएस ने ली थी, जिसने सीरिया और इराक के बड़े हिस्से पर कब्जा कर रखा है। ■

मोदी ने ब्रिटेन यात्रा में किए १४ अरब डॉलर के समझौते

लंदन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीन दिवसीय ब्रिटेन दौरे के दौरान दोनों देशों के उद्यमों के बीच १४ अरब डॉलर के समझौते हुए। इसमें ब्रिटेन की ओपीजी पावर वेंचर्स कंपनी द्वारा अगले कुछ वर्षों में तमिलनाडु में ४,२०० मेगावाट क्षमता की नई विद्युत सृजन इकाई में ४.४ अरब डॉलर की निवेश योजना भी शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरन के बीच लगभग दो दर्जन निवेश समझौते हुए, जिसमें मर्लिन एंटरटेनमेंट २०१७ तक नई दिल्ली में मैडम तुसाद मोम संग्रहालय खोलेगा। इसके साथ ही वोडाफोन भारत सरकार की ३डिजिटल इंडिया३ और ३मेक इन इंडिया३ अभियानों को मदद देने के लिए १.४ अरब डॉलर का निवेश करेगा।

इसके अलावा, यूरोप की सबसे बड़ी सौर ऊर्जा कंपनी लाइटसोर्स का कहना है कि वह भारत में अगले पांच साल में भारतीय कंपनियों की साझेदारी में तीन गीगावाट सौर ऊर्जा के बुनियादी ढांचागत इकाई के डिजाइन, स्थापना और प्रबंधन के लिए लगभग तीन अरब डॉलर का निवेश करेगी।

दोनों देशों के प्रमुखों के बीच आधिकारिक वार्ता के बाद जारी साझा बयान के मुताबिक, प्रधानमंत्री कैमरन और मोदी ने दोनों देशों के बीच अभिन्न एवं मधुर संबंधों का उल्लेख किया। इस दौरे के दौरान दोनों देशों के बीच ९.२ अरब पाउंड (१४ अरब डॉलर) के व्यावसायिक समझौते हुए हैं।

इस दौरान हुए अन्य प्रमुख समझौते-

- स्टैंडर्ड लाइफ, बूपा और अवीवा कंपनियां अपनी भारतीय संयुक्त उपक्रमों में कुल ३६.५ करोड़ डॉलर का निवेश करेंगी।

- जीटीएल के २७,४०० दूरसंचार टावरों के लिए स्वच्छ ऊर्जा प्रदान कराने हेतु ब्रिटेन की प्रौद्योगिकी कंपनी इंटेलिजेंट एनर्जी के साथ १.८ अरब डॉलर का करार।

- भारत में अगले पांच साल में १,००० स्टोर शुरू करने के लिए अपोलो का हॉलैंड एंड बैरेट इंटरनेशनल के साथ समझौता।

- ब्रिटेन की क्लाउडपैड मोबिलिटी रिसर्च कंपनी का भारत में स्मार्ट वॉचेज और टैबलेट बनाने के लिए निवेश।

- टीवीएस कंपनी साउथ यॉर्कशायर के बार्नूघ्सले में उन्नत भंडारण इकाई की स्थापना करेगी।

- बांड और शेयर जारी करने में सहयोग के लिए लंदन स्टॉक एक्सचेंज और यस बैंक के बीच करार।

- विप्रो का ब्रिटेन में निवेश बढ़ाने पर जोर।

साझा बयान के मुताबिक, दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने तकनीकी सहयोग, विशेषज्ञता साझा करने और कारोबार समझौतों के जरिए भारत की महत्वाकांक्षी शहरी विकास लक्ष्यों को हासिल करने में मदद के लिए तीन भारतीय शहरों इंदौर, पुणे और अमरावती के साथ साझेदारी की है। स्वच्छ नदी प्रणाली के लिए 'टेम्स-गंगा' साझेदारी शुरू करने का भी ऐलान किया गया। ■

(पृष्ठ १ का शेष) **कैलाश मानसरोवर...**

में विकास को बढ़ावा मिलेगा और इसे चीन के साथ एक और व्यापारिक मार्ग के रूप में भी प्रयोग लाया जा सकेगा। मोदी सरकार के एजेंडे में कैलास मानसरोवर की यात्रियों की सुविधा का मुद्दा हमेशा से अहम रहा है। पिछले साल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चीन से सिक्किम में नाथू ला का मार्ग खुलवाया था। ■

कार्टून

चारा चोर-चंदा खोर भाईचारा -- मनोज कुरील

ग़ज़ल

ख्वाब की तरह से आँखों में छिपाये रखना
हमको दुनिया की निगाहों से बचाये रखना
बिखर न जाऊँ कहीं टूट के आंसू की तरह
मेरे वजूद को पलकों पे उठाये रखना
आज है गम तो यकीनन खुशी भी आएगी
दिल में इक शम्मा उम्मीदों की जलाये रखना
तल्ख एहसास से महफूज रखेगी तुझको
मेरी तस्वीर को सीने से लगाये रखना
गजल नहीं, है ये आइना-ए-हयात मेरी
अक्स जब भी देखना
एहसास जगाये रखना
गमों के साथ मोहब्बत,
है ये आसान 'नदीश'
खुशी की ख्वाहिशों से
खुद को बचाये रखना

-- लोकेश नदीश

सुभाषित

एतदर्थ कुलीनानां नृपाः कुर्वन्ति संग्रहम्।
आदिमध्याऽवसानेषु न त्यजन्ति च ते नृपम्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- राजा लोग कुलवान व्यक्तियों का संग्रह इसलिए करते हैं कि वे प्रारम्भ में, बीच में और अन्त समय में भी कभी भी राजा का साथ नहीं छोड़ते।

पद्यार्थ- प्रारम्भ मध्य और अन्त में कुलवान देते साथ हैं।
इसलिए नृप भी सदा ही रखते उनको साथ हैं।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

आस्तीन के साँप

आज देश में देशभक्ति का जैसा वातावरण बन गया है, उससे प्रत्येक देशभक्त को प्रसन्नता और संतोष होना स्वाभाविक है। देश के प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी का पूरे संसार में भारी स्वागत किया जा रहा है और सर्वत्र जय-जयकार हो रही है, जो पहले किसी प्रधानमंत्री को उपलब्ध नहीं हुई। संसार के अनेक देशों में रहने वाले भारतवंशी इन गौरव के क्षणों को भरपूर जी रहे हैं और 'मोदी-मोदी' के नारों से आकाश गुंजा रहे हैं।

इसमें संदेह नहीं कि देश में समस्यायें हैं, जो हमेशा रही हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि वर्तमान सरकार इन समस्याओं के तात्कालिक नहीं बल्कि दीर्घकालिक समाधान के लिए जी-तोड़ प्रयास कर रही है। विदेशों से निवेश आ रहा है जिससे नये रोजगार पैदा हो रहे हैं और होंगे। इनका सकारात्मक प्रभाव अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है, जिसका पता विभिन्न सूचकांकों और निष्पक्ष आकलन करने वाली संस्थाओं की रिपोर्टों से चलता है।

लेकिन यह वातावरण उन लोगों को रास नहीं आ रहा है जिनकी घुट्टी में ही देशद्रोह के कीटाणु घोलकर पिलाये गये हैं। देश में कुछ आस्तीन के साँप हैं जो नहीं चाहते कि मोदी जी सफल हों और देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो। मोदी जी ने ऊपरी स्तर के भ्रष्टाचार पर प्रभावी लगाम लगाकर न केवल उनका शाश्वत धंधा चौपट कर दिया है, बल्कि उनकी पिछली करतूतों के लिए दण्ड देने की संभावनायें भी पैदा कर दी हैं, जो न्यायिक प्रक्रिया के कारण धीमी गति से चल रही हैं।

जो लोग अभी तक देश को दोनों हाथों से लूट रहे थे वे मोदी जी के हर काम में टांग अड़ाना अपना अधिकार समझते हैं। दुर्भाग्य से राज्यसभा में अभी वे इतनी संख्या में हैं कि मोदी जी का रास्ता कठिन कर सकते हैं और उसे बंद भी कर सकते हैं। यही कारण है कि सरकार के कई अहम विधेयक, जिनके पारित हो जाने से अर्थव्यवस्थो को सुदृढ़ता मिलेगी, जानबूझकर लटकाये जा रहे हैं। कारण केवल राजनैतिक है। विपक्षी नहीं चाहते कि मोदी सरकार को अच्छे कार्यों का श्रेय मिले। इससे देश की अर्थव्यवस्था को हानि पहुंचे तो उनकी बला से।

इस स्थिति पर केवल यही कहा जा सकता है कि यह देश का घोर दुर्भाग्य है कि संसद में ऐसा विपक्ष है जो हर सरकारी कार्य में अड़ंगा लगाता है यह जानते हुए भी कि यह देश के हित में है। अगर यह स्थिति शीघ्र न बदली गयी तो मोदी सरकार को संसद का संयुक्त अधिवेशन बुलाकर वे विधेयक पारित कराने पड़ेंगे, जिसमें और अधिक समय नष्ट होगा।

देश की प्रबुद्ध जनता इन आस्तीन के साँपों की गतिविधियों को ध्यान से देख रही है और अपनी तरह से प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर रही है। ऐसा अनुभव विपक्षी दलों के नेताओं को कई स्थानों पर हुआ है। अगर शीघ्र ही उन्होंने अपने रवैये में उचित सुधार नहीं किया तो जनता का क्रोध फूट पड़ेगा, जिसका दायित्व केवल विघ्नसंतोषी विपक्षी दलों का ही होगा। हम तो केवल प्रार्थना ही कर सकते हैं कि ईश्वर उनको सद्बुद्धि दे और वे सरकार के विकास कार्यों में सहयोग करें।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

अभी-अभी पत्रिका को देखा आपने हमारी भी गजल को प्रकाशित किया है। बहुत बहुत शुक्रिया। -- **दिलीप विश्वकर्मा**

विजय भाई, पत्रिका अच्छी से अच्छी हो रही है, आप को वधाई हो। मेरी कहानी 'दो रुपए का नोट' आप लगाना भूल गए। कोई बात नहीं जब भी चांस लगे लगा देना। यह कहानी साईट पे भी नहीं लगाईं गई थी, हो सके तो कभी लगा देना। धन्यवादी हूँगा। -- **गुरमेल सिंह भमरा, लंदन**

दीपावली की शुभकामनाओं के साथ अति उत्तम रचनाओं से सुसज्जित अंक के लिए बधाई। विशेष जी की कहानी 'एक भूल' विशेष लगी। -- **लीला तिवानी**

सधन्यवाद निवेदन है कि जय विजय का नवम्बर २०१५ अंक मिल गया है। एक बार जल्दी से पूरी पत्रिका देख डाली। पत्रिका के रंग व रूप तथा साज सज्जा ने मन को मोह लिया। हार्दिक धन्यवाद। अब इसे पूरी पढूंगा। -- **मन मोहन आर्य**

बहुत शानदार अंक रहा। बहुत धन्यवाद। -- **प्रिया वच्छानी**

विजय जी आपके द्वारा भेजा गया नवंबर अंक मिला। मेरी रचना को स्थान दिया आपने। बहुत बहुत आभार। बेहद शानदार अंक है। बधाई। -- **नीरजा मेहता**

इस बार आपका अंक मिल गया। अंक पर अथक मेहनत कर अंक तैयार करने के लिए आपका आभार। -- **ओम प्रकाश क्षत्रिय**

सदैव की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय अंक। बधाई। -- **डॉ डी एम मिश्र**

'जय विजय' का नवम्बर अंक प्राप्त हो गया है। अंक उम्दा और खुबसूरत बन पड़ा है, इसके लिए बहुत-बहुत बधाई! -- **मनोज चौहान**

अंक मिल गया, शुक्रिया। अंक अच्छा बना है। इस बार समसामयिक विषयों पर अच्छे लेख आये हैं। बधाई। -- **अनन्त आलोक**

पत्रिका 'जय विजय' का नवम्बर २०१५ अंक मुझे प्राप्त हुआ, पढ़कर अपार हर्षानुभूति हुई। आपने मेरे द्वारा रचित गीतिका को पेज संख्या १४ पर स्थान दिया। हम पत्रिका के संपादक का तहेदिल से आभारी हूँ। -- **राज किशोर मिश्र**

आपकी पत्रिका ईमेल द्वारा प्राप्त हुई। बहुत अच्छा संयोजन किया गया है। आपका प्रयास जनमानस के मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करे। आपको शुभकामनायें व हार्दिक बधाई। -- **सम्भव जैन**

बेहतरीन अंक, सभी कुछ उम्दा, सभी आलेख सार गर्भित, कविताओं का क्या कहें, सार्थक पत्रिका। -- **सुधीर सिंह**

नवम्बर अंक के लिए धन्यवाद एवं हार्दिक अभिनंदन आपका!
-- **मोहन सेठी 'इंतजार'**

अंक मिल गया। अंक काफी अच्छा है। पिछले अंकों में मेरी कहानियों को स्थान न मिलने से मैं थोड़ा निराश हूं। -- **सुधीर मौर्य**

पत्रिका के सुंदर अंक को भेजने के लिए धन्यवाद। -- **डा विवेक आर्य**

पत्रिका में मेरी कहानी छापने के लिए धन्यवाद। -- **वैभव कुमार**

'रहूंगा कैसे टपकते हुए मकानों में?' एक बेहतरीन शेर आपने कहा है। उदय भान पांडेय 'भान' की गजल भी काबिले-तारीफ है। दिन-ब-दिन 'जय विजय' का कलेवर सुंदर से सुंदरतम होता चला जा रहा है। बधाई। -- **देवकी नंदन 'शांत'**

सुंदर और पठनीय नेट पत्रिका। आपको शुभकामनायें। - **डॉ संगीता सक्सेना**

बहुत सूचनाप्रद एवं पठनीय पत्रिका! -- **एल.यू. विजय कुमार**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

कुंडलियाँ

आजादी की आड़ में, हिंसा है आबाद
इतने वर्षों बाद भी, झेल रहे अवसाद
झेल रहे अवसाद, किसी को काम न मिलता
खटकाएं हर द्वार, खूब तलाश में फिरता
'लक्ष्मण' बढती देख, देश में अब आबादी
मिले सभी को काम, तभी सच्ची आजादी

शिक्षा के पद बिक रहे, यह व्यापक व्यापार
गीता के सन्देश है, शिक्षा का आधार
शिक्षा का आधार, कर्म का पाठ पढाता
चक्षु ज्ञान के खोल,दिशा का बोध कराता
कह 'लक्ष्मण' कविराय, ज्ञान की मांगे भिक्षा
गीता के सन्देश, कर्म की देते शिक्षा

-- लक्ष्मण रामानुज लड़ीवाला

बाबा रामदेव की उपलब्धियों को समझें

डा. मनोहर लाल भंडारी

हमारे देश के अधिकांश पढ़े लिखे और खासतौर पर वरिष्ठ लोगों की मानसिकता को लेकर एक कहानी लोकजीवन में बहुत प्रचलित है, जिसे हम गाहे बगाहे सत्य सिद्ध करने की उतावली में दिखाई देते हैं। बात थोड़ी पुरानी है, इंग्लैण्ड की महारानी के महल में विश्व के तमाम तरह के केंकड़ों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। दुनियाभर के देशों के केंकड़ों को बड़े-बड़े कांच के मर्तबानों में रखा गया था। सब पर ढ़क्कन अच्छे से और सावधानीपूर्वक लगाए गए थे। बड़ा अच्छा प्रयास था, किस्म किस्म के केंकड़े थे। रंगबिरंगे केंकड़ों को देखकर परमात्मा की रंगीन मिजाजी का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता था।

उन्हें देखकर महारानी बेहद खुश हुई। प्रदर्शनी देखते-देखते, उनकी नजर अचानक एक तुलनात्मक रूप से छोटे मर्तबान में रखे बड़े-बड़े एवं खतरनाक दिखने वाले केंकड़ों पर पड़ी। उन्होंने देखा कि उस मर्तबान पर ढक्कन भी नदारद है, भयभीत होकर वे वहां से तत्काल बाहर आ गई। उन्हें बेहद गुस्सा आया।

आयोजक की तत्काल पेशी हुई। उसने महारानी साहिबा को अदब के साथ बताया कि ये केंकड़े विश्वगुरुत्व से पदावनत होकर गुलामी की यात्रा कर चुके भारत के हैं। हजारों मील की यात्रा तय करने के बावजूद ये केंकड़े इस मर्तबान से बाहर नहीं निकल पायें हैं। ये भारत से इसीतरह यहां तक लाये गए हैं। एक दो दिन तो क्या ये जिन्दगी भर भी ऐसे रखे जाएँ तो भी इनके बाहर निकलने का रत्तीभर भी खतरा नहीं है। यदि किसी केंकड़े ने ऊपर चढ़ने की कोशिश की तो दूसरे सारे के सारे केंकड़े तत्काल उसे नीचे खींचने में अपनी सारी ताकत झोंक देंगे।

उनकी मानसिकता अधिकांश पढ़े लिखे भारतीयों जैसी ही है। किसी की भी कामयाबी उन्हें तनिक भी रास नहीं आती है। यदि अपने आसपास या क्षेत्र के किसी व्यक्ति ने ऐसे काम को साकार कर दिखाया है, जिसे वे स्वयं नहीं कर पाए हैं (या कर पाने की कोई सम्भावना नहीं है) तो उसको आगे बढ़ते हुए देखकर अन्य सारे लोग पारस्परिक परम्परागत एवं जगजाहिर शत्रुता का परित्याग कर अनपेक्षित और असम्भव सी एकजुटता का परिचय देते हुए सामूहिक रूप से अपनी चतुरता, शातिराना प्रतिभा, छल, कपट, निन्दा, सभी तरह के बल, पहुंच यानी एप्रोच, षड्यंत्र बुद्धि आदि लगाकर उसे गिराने, बदनाम और तबाह करने में जुट जाते हैं। खासतौर पर अपने से किसी भी मामले में कमतर समझें (उनकी अपनी दृष्टि में) जाने वाले व्यक्ति की सफलता उन्हें बेचैन कर डालती है, इस हेतु वे सब अपनी अनिवार्य नवजीवनदायिनी नींद का भी त्याग कर डालते हैं। कई बार तो निकट के परिजन भी ऐसा कर बैठते हैं।

वर्तमान सन्दर्भ में श्री नरेन्द्र मोदीजी और बाबा रामदेव के साथ कुछ-कुछ ऐसा ही हो रहा है। रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने वाले और बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक प्रचारक श्री नरेन्द्र मोदीजी की सफलता और वैश्विक लोकप्रियता ने सुनिश्चित रूप से नए विश्व कीर्तिमान रच डाले हैं।

बाबा रामदेव की बात करें तो उन्होंने जो कीर्तिमान रचे हैं, वे भी हतप्रभ कर देने वाले हैं। एक अकेले बन्दे ने सायकल पर च्यवन प्राश बेचते-बेचते स्वदेशी व्यापार का जो साम्राज्य स्थापित किया है वह किसी रीगन, धीरुभाई अम्बानी या बिल गेट्स से कम नहीं है। मेरे अपने निजी मत में वे इस दृष्टि से विश्व के किसी भी व्यक्ति से सैकड़ों गुना श्रेष्ठ हैं, क्योंकि उन्होंने विश्व की अनेक बेहद शक्तिशाली मल्टी नेशनल कम्पनियों की कूटनीतिक व्यापारिक बुद्धि, साम, दाम, दण्ड और भेद आधारित तथा आकर्षक-आक्रामक विज्ञापनों से पोषित और सेलिब्रिटी आधारित सुस्थापित वृहद साम्राज्य के समक्ष अपनी स्वदेशी सोच के बलबूते पर विविध आयामी घरेलू दैनन्दिन उपयोग की वस्तुओं का गुणवत्ता आधारित, निरापद, ठेठ देसी और प्राकृतिक सूत्रों (फार्मूलों) के आधार पर निर्माण कर बहुत बड़ा और सफल बाजार स्थापित किया है। लाखों साधारण नागरिकों को व्यापारी बना दिया। आयुर्वेदिक दवाओं का निर्माण और हरिद्वार में उनके चिकित्सालय की सफलता को भी हम अनदेखा नहीं कर सकते हैं।

भारतीय योग विज्ञान को वैश्विक विधा में रूपान्तरित कर विश्व योग दिवस तक ले जाने में बाबा रामदेव की भूमिका को भले ही कोई नकारे, परन्तु उनकी महती भूमिका सुनिश्चित रूप से है ही। दुखद है कि हम बाबा रामदेव की अनूठी देशभक्ति, राष्ट्रनिष्ठा, ध्येयनिष्ठा, संस्कृति के प्रति अनुपम प्रेम, जिजीविषा आदि को नजरअंदाज कर उनके साम्राज्य को ध्वस्त करने की कोशिशों में लगे हुए हैं या उनकी सफलता को नकारने में अपनी सारी ताकत झोंक रहे हैं। उनके विराट आकार ले चुके व्यावसायिक साम्राज्य को शक और आलोचना की निगाह देखते हैं। हालांकि मेरे कई उच्च शिक्षित मित्र और रिश्तेदार, जो पहले मल्टी नेशनल कम्पनियों के उत्पादों का उपयोग करने में विश्वास करते थे, हमारे कहने पर उन्होंने बाबाजी के उत्पादों का दैनिक जीवन में उपयोग किया तो वे बेहद प्रभावित हुए और आज वे तथा उनकी मित्रमण्डली

(शेष पृष्ठ २३ पर)

बॉडी सर्विसिंग कार्यक्रम

विजय कुमार सिंघल

बॉडी सर्विसिंग पर अपने पिछले लेख के तारतम्य में मैं यहाँ एक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा हूँ जिसका पालन करके कोई भी व्यक्ति अपने शरीर की सर्विसिंग सरलता से केवल आठ दिनों में कर सकता है, वह भी बिना किसी विशेष खर्च के।

व्यायाम आदि सभी दिनों में

१. प्रातः काल ६ बजे उठते ही एक गिलास गुनगुने पानी में आधा नीबू का रस और एक चम्मच शहद घोलकर पियें। फिर ५ मिनट बाद शौच जायें।

२. शौच के बाद ३ मिनट तक पेडू (नाभि से नीचे का पेट का आधा भाग) पर खूब ठंडे पानी में तौलिया गीली करके पोंछा लगायें, फिर टहलने जायें। कम से कम डेढ़-दो किमी टहलें।

३. टहलने के बाद पार्क में या घर पर नीचे दी गयी क्रियाएं करें।

- चन्द्रासन, कटिचक्रासन, त्रिकोणासन, आगे-पीछे झुकना, कमर गोलाई में घुमाना
- जॉगिंग (एक जगह खड़े खड़े दौड़ना) १ मिनट
- पवन मुक्तासन १-२ मिनट
- भुजंगासन १-२ मिनट
- शवासन १-२ मिनट तक।
- रीढ़ के व्यायाम
- नेत्र, मुख और ग्रीवा व्यायाम
- उंगली, कलाई, कोहनी, कंधों के व्यायाम
- भस्त्रिका प्राणायाम ५ चक्र प्रतिदिन
- कपालभाति प्राणायाम २०० बार
- अनुलोम-विलोम प्राणायाम ५ मिनट
- अग्निसार क्रिया ३ बार
- कर्णशक्ति विकासक प्राणायाम ३ बार
- भ्रामरी ३ बार
- उद्गीत (ओंकार ध्वनि) ३ बार
- तितली व्यायाम १ मिनट

४. व्यायाम के बाद लहसुन की तीन कली छीलकर छोटे-छोटे टुकड़े करके सादा पानी से निगलें या चबायें।

५. रात्रि १०-१०.३० बजे सोते समय एक चम्मच त्रिफला चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लें।

भोजन

पहला दिन- नाश्ता-अंकुरित अन्न तथा फल, दोपहर भोजन- रोटी, उबली हरी सब्जी और सलाद, दोपहर बाद- फल का जूस, रात्रि भोजन- दोपहर जैसा।

दूसरा दिन- नाश्ता अंकुरित अन्न तथा फल, दोपहर भोजन- उबली हरी सब्जी और सलाद, दोपहर बाद- फल का जूस, रात्रि भोजन- दोपहर जैसा।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

भक्ष्य व अभक्ष्य पर महर्षि दयानन्द के विचार

मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द वेद एवं वैदिक साहित्य सहित वैद्यक व चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद के भी विद्वान थे। उन्होंने धर्माधर्म व वैद्यक शास्त्रोक्त दृष्टि से भक्ष्य व अभक्ष्य पदार्थों पर अपने विचार सत्यार्थ प्रकाश में प्रस्तुत किये हैं। उनके विचार आज भी प्रासंगिक एवं अज्ञानियों के लिए मार्गदर्शक हैं। वे लिखते हैं कि भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार का होता है। एक धर्मशास्त्रोक्त तथा दूसरा वैद्यकशास्त्रोक्त। जैसे धर्मशास्त्र में- 'अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवाणि च। मनु.।' इसका अर्थ है कि द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को मलीन विष्ठा मूत्रादि के संसर्ग से उत्पन्न हुए शाक फल मूल आदि न खाना। इसका तात्पर्य है कि शाक, फल व अन्न आदि पदार्थ शुद्ध व पवित्र भूमि में ही उत्पन्न होने चाहिये तभी वह भक्ष्य होते हैं। मलीन विष्ठा मूत्रादि से दूषित भूमि में उत्पन्न खाद्य पदार्थ भक्ष्य श्रेणी में नहीं आते। महर्षि दयानन्द आगे लिखते हैं- 'वर्जयेन्मधुमांसं च। मनु.।' अर्थात् जैसे अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि। 'बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।।' वचन को उद्धृत कर वह कहते हैं कि जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं, उन का सेवन कभी न करें और जितने अन्न सड़े, बिगड़े दुर्गन्धादि से दूषित, अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्य, मांसाहारी, म्लेच्छ आदि जिनका शरीर मद्य, मांस के परमाणुओं ही से पूरित है, उनके हाथ का (पकाया व बना) न खावें।

वे आगे लिखते हैं कि जिसमें उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से गाय की एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुंचता है वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दे। जैसे किसी गाय के जन्म भर के दूध लाखों मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। एक गाय की चार पीढ़ियों से कई गुना मनुष्य पालित होते हैं। इससे भिन्न बैल बैलगाड़ी सवारी भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकारक होते हैं तथा गाय दूध से अधिक उपकारक होती है, परन्तु जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंस भी है परन्तु गाय के दूध घी से जितने बुद्धिवृद्धि से लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्योपकारक आर्यों ने गाय को गिना है।

बकरी के दूध से लगभग २५ सहस्र आदमियों का पालन होता है वैसे हाथी, घोड़े, ऊंट, भेड़, गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं । इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानने चाहिए।

जब आर्यो (वेद के मानने वाले श्रेष्ठ मनुष्यों) का राज्य था तब ये गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे। क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न व रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। क्योंकि 'नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।' जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल फूल कहां से हों?

महर्षि दयानन्द एक काल्पनिक प्रश्न कि 'जो सभी अंहिसक हो जाये तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जायें कि सब गाय आदि पशुओं को मार खायें तुम्हारा पुरूषार्थ ही व्यर्थ जाय?' का उत्तर देते हुए कहते हैं कि यह राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हों उन्हें दण्ड देवें और प्राण भी वियुक्त कर दें। (प्रश्न) फिर क्या उनका मांस फेंक दें? (उत्तर) चाहें फेंक दें, चाहें कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती, किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।

जिन पदार्थों से स्वास्थ्य रोगनाश बुद्धि-बल-पराक्रम-वृद्धि और आयु-वृद्धि होवे उन तण्डुलादि, गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध, घी, मिष्टादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाक मेल करके यथोचित समय पर मिताहार भोजन करना सब भक्ष्य कहलाता है। जितने पदार्थ अपनी प्रकृति से विरुद्ध विकार करने वाले हैं, जिस के लिए जो पदार्थ वैद्यकशास्त्र में वर्जित किये हैं, उनका सर्वथा त्याग करना और जो जिस के लिए विहित है उन-उन पदार्थों का ग्रहण करना यह भी भक्ष्य है।

गोकरुणानिधि पुस्तक में पशु हिंसक मनुष्य का काल्पनिक पक्ष प्रस्तुत कर महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि 'देखो ! जो शाकाहारी पशु और मनुष्य हैं वे बलवान् और जो मांस नहीं खाते वह निर्बल होते हैं, इसलिए मांस खाना चाहिये।' इसका प्रतिवाद करते हुए महर्षि दयानन्द पशु रक्षक की ओर से कहते हैं कि देखो, सिंह मांस खाता और सुअर वा अरणा भैंसा मांस कभी नहीं खाता, परन्तु जो सिंह बहुत मनुष्यों के समुदाय में गिरे तो एक वा दो को मारता और एक दो गोली या तलवार के प्रहार से मर भी जाता है और जब जंगली सुअर वा अरणा भैंसा जिस प्राणि समुदाय में गिरता है, तब उन अनेक सवारों और मनुष्यों को मारता और अनेक गोली, बरछी तथा तलवार आदि के प्रहार से भी शीघ्र नहीं गिरता, और सिंह उससे डर के अलग सटक जाता है और वह अरणा भैंसा सिंह से नहीं डरता।

जिस देश में सिवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मिलता, वहां आपत्काल अथवा रोगनिवृति के लिये क्या मांस खाने में दोष होता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि यह कहना व्यर्थ है क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं, वहां पृथिवी अवश्य होती है। जहां पृथिवी है वहां खेती वा फल-फूल आदि होते हैं और जहां कुछ भी नहीं होता, वहां मनुष्य भी नहीं रह सकते। और जहां ऊसर भूमि है, वहां मिष्ट जल और फल-आहार आदि के न होने से मनुष्यों का रहना भी दुर्घट है। आपत्काल में भी मनुष्य अन्य उपायों से अपना निर्वाह कर सकते हैं जैसे मांस के न खाने वाले करते हैं। बिना मांस के रोगों का निवारण भी ओषधियों से यथावत् होता है, इसलिये मांस खाना अच्छा नहीं।

महर्षि गोकरुणानिधि पुस्तक में उपदेश करते हुए कहते हैं कि ध्यान देकर सुनिये कि जैसा दुःख-सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों को भी समझा कीजिये। और यह भी ध्यान में रखिये कि वे पशु आदि और उन के स्वामी तथा खेती आदि कर्म करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट होता जाता है, इसीलिये राजा प्रजा से कर लेता है कि उन की रक्षा यथावत् करे न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश किया जावे। इसलिये आज तक जो हुआ सो हुआ आगे आंखे खोल कर सबके हानिकारक कर्मों को न कीजिये और न करने दीजिये। हां हम लोगों का यही काम है कि आप लोगों को भलाई और बुराई के कामों को जता देवें, और आप लोगों का यही काम है कि पक्षपात छोड़ सब की रक्षा और उन्नति करने में तत्पर रहें।

वेद और महर्षि दयानन्द संसार के सभी मनुष्यों को एक ही ईश्वर की सन्तान मानते हैं। उनकी यह विशिष्टता वैदिक विचारधारा के कारण थी। इसी को अपनाकर ही संसार में सभी विवादों का हल, शान्ति व सुख का वातावरण तैयार हो सकता है। ■

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. कंस की बहिन का क्या नाम था?
२. कडाईकनाल हिल स्टेशन किस राज्य में है?
३. रावण का सौतेला भाई कौन था?
४. भारत के किस प्रधानमंत्री को पढ़ते समय शांतिनिकेतन से निकाला गया था?
५. प्रकाश पादुकोणे किस खेल के खिलाड़ी हैं?
६. पुराणों के अनुसार कौन से देवता चीते की खाल पहने दिखाये जाते हैं?
७. चन्द्रमुखी और पारो किस उपन्यास के चरित्र हैं?
८. एक मीटर में कितने मिलीमीटर होते हैं?
९. वैदिक युग में आज की किस नदी का नाम शतद्रू था?
१०. महाभारत के अनुसार कर्ण किस देश का राजा बनाया गया था?

उत्तर

१. देवकी; २. तमिलनाडु; ३. कुबेर; ४. इंदिरा गांधी; ५. बैडमिंटन; ६. शिव; ७. देवदास; ८. एक हजार; ९. सतलुज; १०. अंग देश।

मुझसे युद्ध-क्षेत्र से भागने का
मौका तक छीन लिया, क्यों ?
क्यों मुझे अर्जुन बना दिया कि
अपने गांडीव का निशाना अपनों को ही बनाऊं
और उन्हें पराजित कर अपनी जीत पर गर्व करूँ
ऐसी उपलब्धि का क्या करूँ
जिसे कोई बाँटने वाला ही न हो
मेरी आँखों में धुँधलापन सा छा गया है
मेरी बाँहें शिथिल हो गयी हैं और हृदय विदीर्ण
अगर हो सके तो मुझे छोड़ दो मेरे हाल पर
मुझे कृष्ण का साथ नहीं चाहिए
अपना रथ मैं खुद ही हाँक लूँगा
क्योंकि मुझमें अपनों पर
तीर चलाने की सामर्थ्य नहीं
मुझे अर्जुन सा वीर नहीं बनना
मुझे अर्जुन नहीं बनना ...

-- अनिता अग्रवाल

(कविता संग्रह '**अन्तर्मन के स्पन्दन**' से साभार)

कुछ धधक रहा है मेरे अंदर
तलाश में हूँ मैं उस आग की
राख कर सके जो मुझे जला कर
होती हैं कुछ लोगों की इच्छा कि
बाद मरने के उनकी अस्थियाँ
बहा दी जाए गंगा में
ताकि जाने के बाद भी
उनका कुछ कण कण में रहे...
ऐसे ही खुद को
रख रही हूँ मैं जीते जी सारी रचनाओं में
अपनी जिन्दगी का कुछ कण कण भर...!

-- रितु शर्मा

पुस्तकें सच्ची साथी होती हैं/उम्र भर की
कभी साथ नहीं छोड़तीं/कभी हाथ नहीं छोड़ती
जीवन में सही मार्ग दिखाती हैं/और ज्ञान भी बढाती हैं
इन्ही पुस्तकों ने/गीता, रामायण रची है
जिससे आज भी
संस्कारों की छवि बसी है
पुस्तकें वो मार्गदर्शक है
जो सही चुनो तो
व्यक्तित्व निखारती है
गलत चुनो तो भविष्य बिगाड़ती हैं

-- एकता सारदा

प्यार है ये व्यापार नहीं
प्यार के बदले प्यार की चाह
बेमायने थी ये दिल की राह
नासमझ थी, न समझ पायी
प्यार है ये व्यापार नहीं
पर अब जो आई है बात समझ मे
तो रूह को आराम आया,
सारे एहसास सारी तड़प सिमट गयी है
तुझे प्यार देने की चाह में...

-- रेवा टिबड़ेवाल

सुनहरी चादर ओढ़े रंग खुद से खुद तपते रहे
तुम्हारे तले तुम संग हम भी जरा-जरा जलते रहे
थी तपिश कुछ प्यार भरी, माथे पर कुछ बूंदें गिरी
अधर जरा सूखे-सूखे मानो पत्ते हों रूखे-रूखे
शाख से गिरे-गिरे, सुहाग सेज बिछे-बिछे
नयन झरोखे चाहे देखना
चमक तुम्हारी चहु ओर बिखेरना
किरण ताप चुभती नयन में मानो हया भरी हो चक्षु में
जीवन संगिनी बनी प्रहर प्यासे अधर ढूंढे नहर
जल अगन आहिस्ता उठती लचक बदन धीरे से गिरती
गिरना उठना रहा निरंतर, नारी केश लहराता मन्तर
उतर तरंग तन शीतल जल जल
सुनहरी चादर शीत लगे तब
तपिश बूंद बदल शीतल जल
तन स्थिर ना उड़ता आंचल
बूंद बूंद से बिखरा काजल
शीत लगे सुनहरी चादर

-- संगीता कुमारी

(कविता संग्रह '**हृदय के झरोखे**' से साभार)

मन की आँखें खोल/धीरे से झाँका मैंने
एक दबी सी चाह/अंतस में छलांगे मार रही थी
चुपके से कह उठी
है मुझे पूर्ण विश्वास
भर जाएँगे मेरे जीवन में
फिर वही रंग
नहीं बुझेगा निराशा में
मेरी आशा का दीप

-- नीरजा मेहता

आज दिए की लौ को गौर से न देखना
वो शरमा के बुझ जायेगी !
आज उसके मंद मुस्कान को छेड़ न देना
वो बल खा के गिर जायेगी !
आज दिए की लौ को बुझने न देना
वो हवा से रिश्ता तोड़ लेगी
आज उसे यह राज बता न देना
हवा के बिना वो भी न बचेगी
आज दिए की लौ को बड़ी न करना
वरना वो बाती को देख लेगी
उसकी जलन को देख रो पड़ी
तो बाती की मंजिल ही छीन लेगी
दिए की लौ को शमा न कहना वो शायरी जान जायेगी
किसी परवाने को मरता देख भी/खुद पर ही इतरायेगी
आज दिए की लौ के रंगों को न देखना
घी और तेल का फर्क जान जायेगी
उस आँगन के तेल की लौ को/खुद से कम आंकेगी
आज दिए की लौ को/दिवाली है मत बताना कभी
हर रात गरीब के घर रहना/वो अपनी तौहीन समझेगी
आज दिए की लौ के/पटाखे पास न रखना
इस मानव निर्मित बला से/वो नहीं खेल पायेगी
आज दिये की लौ का/जलजले से रिश्ता न बता देना
रौशनी की यह कन्या/मुफ्त में बदनाम हो जायेगी

-- सचिन परदेशी 'सचसाज'

सागर कब था इतना सुन्दर?
ये तो उसके श्वेत चमकीले बालू के तट हैं
जो उसे ओढ़ा देते हैं चादर गम्भीरता की
और देते हैं अधिकार कहलाने का सागर!
सागर तट पर बैठे हम घंटों निहारते हैं
उत्तेजित लहरों की सुंदरता
और रह जाता है तट अकेला
वही उपेक्षित तट सहेज लेता है
हमारे पदचिह्नों को
और इंतजार करता है कि
कोई आये पास अपने पदचिह्नों को खोजता
और हम कभी नहीं समझ पाते उसकी गम्भीरता!

-- डा. रचना शर्मा

(कविता संग्रह '**अन्तर-पथ**' से साभार)

खुद से मिलने अक्सर/साहिल पर आ जाती
चैन ओ' सुकून पा यहाँ/खुद को मानो पा जाती
उठती-गिरती लहरें इसकी/अंतर्मन को भिगो जाती
इसकी शीतल-नम सी रेत/तन की थकान हर जाती
समुद्र-संग सटे पत्थर पर बैठ/खुद से मैं बतियाती
अथाह समुद्र का विस्तार देख/अचम्भित सी रह जाती
तट का इक छोर तो दिखता
दूजा छोर कहीं ना पाती
समुद्र के इस अनंत विस्तार में
जीवन का रहस्य भी पाती
समुद्र सदृश ही जीवन के
अदृश्य छोर खोज नही मैं पाती

-- शशि शर्मा 'खुशी'

तुम ने कहा था एक दिन/शरीफे के पेड़ के नीचे
'शरीफ लड़कियों' की निशानी है/ये देह का बुरका
मैने मान लिया था/उस शाम तुम्हारी उस बात को
मेरे गले लगते ही चिहुंक पड़ी थी तुम
उस सुनहरी शाम में और आँख बंद करके
तुमने उतार दिया था/वो काला बुरका अपनी देह से
आँखों में आंसू भर के/न जाने कितनी देर
तुम दिखाती रही थी/अपनी देह के वो नीले निशान
जो बनाये गए थे/तुम्हें शरीफ लड़की बनाये रखने के लिए
उस रात तुम हांफती साँसों के साथ
भाग कर आ गई थी मेरे घर
मेरे हाथों के स्पर्श से हौसला पाके
तुमने कहा था सिसकते हुए
तुम्हें मंजूर है
शरीफ लड़की की जगह
बदनाम लड़की होना
और उस रात की सुबह
मैने लिख दिया था
अपनी डायरी के किसी कोने में
मैं प्रेम करता हूँ
दुनिया की सबसे ज्यादा शरीफ लड़की से।

-- सुधीर मौर्य

(दूसरी और अंतिम किस्त)

जगमग दीप जले

सुरेखा शर्मा

प्रतिमा ने चुटकी लेते हुए माँ जी को फिर छेड़ा, 'माँ जी गुड्डू के पापा बताते हैं कि आप नाना जी के घर भी कभी-कभी जाती थी, बाबू जी का मन आपके बिना लगता ही नहीं था। क्या ऐसा ही था माँ जी?'

'चल हट... शरारती कहीं की! कैसी बातें करती है... देख गुड्डू स्कूल से आता होगा!' बनावटी गुस्सा दिखाते हुए माँ जी नवयौवना की तरह शरमा गयीं। शाम की सब्जी काटते देख माँ जी बोली, 'बहू तुम कुछ और काम कर लो, ला सब्जी मैं काट देती हूं!'

माँ जी रसोईघर में गई तो प्रतिमा ने मनुहार करते हुए कहा, "माँ जी, मुझे भरवां शिमला मिर्च बनानी नहीं आती, आप सिखा देंगी? यह कहते हैं, जो स्वाद माँ के हाथ के बने खाने में है, वह तुम्हारे में नहीं।'

'हां...हां...क्यों नहीं, मुझे मसाले दे मैं बना देती हूं।' धीरे-धीरे रसोई की जिम्मेदारी माँ ने अपने ऊपर ले ली थी और तो और गुड्डू को मालिश करना, उसे नहलाना, उसे खिलाना -पिलाना सब माँ जी ने सम्भाल लिया। अब प्रतिमा को गुड्डी की पढ़ाई के लिए बहुत समय मिलने लगा। इस तरह प्रतिमा के सिर से कार्य भार कम हो गया था साथ-ही-साथ घर का वातावरण भी खुशनुमा रहने लगा। श्रवण को प्रतिमा के साथ कहीं बाहर जाना होता घूमने तो वह यही कहती कि माँ से पूछ लो, मैं उनके बिना नहीं जाऊंगी।

एक दिन पिक्चर देखने का मूड बना। आफिस से आते हुए श्रवण दो पास ले आया। जब प्रतिमा को चलने के लिए कहा तो वह झट से ऊंचे स्वर में बोल पड़ी, 'माँ जी चलेंगी तो मैं चलूंगी अन्यथा नहीं।' वह जानती थी कि माँ को पिक्चर देखने में कोई रुचि नहीं है। उनकी तू-तू, मैं-मैं सुनकर माँ जी बोली, 'बहू, क्यों जिद्द कर रही हो? श्रवण का मन है तो चली जा, गुड्डू को मैं देख लूंगी!' माँ जी ने शांत स्वर में कहा।

'अन्धा क्या चाहे दो आंखें' वे दोनों पिक्चर देखकर वापिस आए तो उन्हें खाना तैयार मिला। माँ जी को पता था श्रवण को कटहल पसन्द है, इसलिए फ्रिज से कटहल निकाल कर बना दिया। चपातियां बनाने के लिए प्रतिमा ने गैस जलाई तो माँ जी बोली, 'प्रतिमा तुम खाना लगा लो रोटियां मैं सेंकती हूं।'

'नहीं माँ जी, आप थक गयी होंगी, आप बैठिए, मैं गरम-गरम बना कर लाती हूं।' 'सभी एक साथ बैठकर खाएंगे, तुम बना लो प्रतिमा।' श्रवण बोला।

एक साथ खाना खाते देख माँ जी की आंखें नम हो गयी। श्रवण ने पूछा तो माँ बोली, 'आज तुम्हारे बाबू जी की याद हो आई, आज वो होते तो तुम सबको देखकर बहुत खुश होते?'

'माँ मन दुखी मत करो।' श्रवण बोला।

प्रतिमा की ओर देखकर श्रवण बोला, 'कटहल की सब्जी ऐसी बनती है, सच में माँ बहुत दिनों बाद इतनी स्वादिष्ट सब्जी खाई है, माँ से कुछ सीख लो प्रतिमा!'

'माँजी सच में ही सब्जी बहुत स्वादिष्ट है मुझे भी सिखाना माँ।'

'बहू, खाना तो तुम भी स्वादिष्ट बनाती हो।'

'नहीं माँ जी, जो स्वाद आपके हाथ के बनाए खाने में है वह मेरे में कहाँ?' प्रतिमा बोली।

श्रवण को दीपावली पर बोनस के पैसे मिले तो देने के लिए उसने प्रतिमा को आवाज लगाई। प्रतिमा ने आकर कहा, 'माँ जी को ही दीजिए ना!' श्रवण ने लिफाफा माँ के हाथ में रख दिया। सुनन्दा (माँ) लिफाफे को उलट- पलट कर देखते हुए रोमांचित हो उठी। आज वे स्वयं को घर की बुजुर्ग व सम्मानित सदस्य अनुभव कर रही थीं। श्रवण व प्रतिमा जानते थे कि माँ को पैसे से कुछ लेना-देना नहीं। ना ही उनकी कोई विशेष आवश्यकताएं थी। बस उन्हें तो अपना मान सम्मान चाहिये था।

अब घर में कोई भी खर्चा होता या कहीं जाना होता तो प्रतिमा माँ से ही पूछ कर करती। माँ जी भी उसे कहीं घूमने जाने के लिए मना नहीं करतीं। अब हर समय माँ के मुख से प्रतिमा की प्रशंसा के फूल ही झरते। दीपावली पर घर की सफाई करते-करते प्रतिमा स्टूल से जैसे ही नीचे गिरी तो उसके पांव में मोच आ गयी। माँ ने उसे उठाया और पकड़कर पलंग पर बिठाकर पांव में आयोडेक्स लगाई और गर्म पट्टी बांधकर उसे आराम करने को कहा। यह सब देखकर श्रवण बोला- 'माँ मैंने तो सुना था बहू सेवा करती है सास की, पर यहाँ तो उल्टी गंगा बह रही है।'

'चुप कर, ज्यादा बक-बक मत कर, प्रतिमा मेरी बेटी जैसी है, क्या मै इसका ध्यान नहीं रख सकती? बोलो !' प्यार से डांटते हुए माँ बोली।

"माँ जी, बेटी जैसी नहीं, बल्कि बेटी कहो। मैं आपकी बेटी ही तो हूं।' सुनते ही माँ जी ने सिर पर हाथ रखा और बोली, तुम सही कह रही हो बहू, तुमने बेटी की कमी पूरी कर दी।

घर में होता तो वही जो श्रवण चाहता, पर एक बार माँ की अनुमति जरूर ली जाती। बेटा चाहे कुछ भी कह दे, पर बहू की छोटी-सी भूल भी सास को सहन नहीं होती। इससे सास को अपना अपमान लगता है। यह हमारी परम्परा सी बन चुकी है, जो धीरे धीरे खत्म हो रही है।

माँ जी को थोड़ा- सा मान सम्मान देने के बदले में उसे अच्छी बहू का दर्जा व बेटी का स्नेह मिलेगा इसकी तो कल्पना ही नहीं की थी प्रतिमा ने। घर में हर समय प्यार का, खुशी का वातावरण रहने लगा। दीपावली नजदीक आ गयी थी। माँ व प्रतिमा ने मिलकर पकवान, मिष्ठान्न बनाए। लगता है इस बार की दीपावली एक विशेष दीपावली रहेगी। सोचते-सोचते वह बिस्तर पर लेटा ही था कि अमेरिका से भैया का फोन आ गया। उन्होंने माँ के स्वास्थ्य के बारे में पूछा और बताया कि इस बार माँ उनके पास से नाराज होकर गुस्से में गयी हैं। तब से मन बहुत विचलित है।

यह तो हम सभी जानते हैं कि नन्दिनी भाभी और माँ के विचार कभी नहीं मिले, पर अमेरिका में भी उनका झगड़ा होगा, इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी। भैया ने बताया कि वह माफी माँग कर प्रायश्चित करना चाहता है अन्यथा हमेशा मेरे मन में एक ज्वाला-सी दहकती रहेगी। आगे उन्होंने जो बताया वो सुनकर तो मैं खुशी से उछल ही पड़ा। बस अब दो दिन का इन्तजार था, क्योंकि दो दिन बाद दीपावली थी।

इस बार दीपावली पर प्रतिमा ने घर कुछ विशेष प्रकार से सजाया था। मुझे उत्साहित देखकर प्रतिमा ने पूछा, 'क्या बात है, आप बहुत खुश नजर आ रहे हैं?' 'अपनी खुशी छिपाते हुए मैंने कहा, 'तुम सास- बहू का प्यार हमेशा ऐसे ही बना रहे बस...इसलिए खुश हूं।'

'नजर मत लगा देना हमारे प्यार को' प्रतिमा खुश होते हुए बोली। दीपावली वाले दिन माँ ने अपने बक्से की चाबी देते हुए कहा, 'बहू लाल रंग का एक डिब्बा है उसे ले आ।' प्रतिमा ने 'जी माँ जी' कहकर डिब्बा लाकर दे दिया। माँ ने डिब्बा खोला और उसमें से खानदानी हार निकालकर प्रतिमा को देते हुए बोली, 'लो बहू, ये हमारा खानदानी हार है, इसे सम्भालो। दीपावली पर इसे पहन कर घर की लक्ष्मी इसे पहनकर पूजा करे, तुम्हारे पिता जी की यही इच्छा थी।' हार देते हुए माँ की आंखें खुशी से नम हो गयी।

प्रतिमा ने हार लेकर माथे से लगाया और माँ के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। मुझे बार-बार घड़ी की ओर देखते हुए प्रतिमा ने पूछा तो मैंने टाल दिया। दीप जलाने की तैयारी हो रही थी। पूजा का समय भी हो रहा था, तभी माँ नेआवाज लगा कर कहा, 'श्रवण, पूजन का समय साढ़े आठ बजे तक है, फिर गुड्डू के साथ फुलझड़ियां भी तो चलानी हैं। मैं साढ़े सात बजने का इन्तजार कर रहा था, तभी बाहर टैक्सी रुकने की आवाज आई। मैं समझ गया मेरे इन्तजार की घड़ियां खत्म हो गयी, मैंने अनजान बनते हुए कहा, 'चलो माँ पूजा शुरू करें।' 'हां, हां, चलो प्रतिमा!' आवाज लगाते हुए कुरसी से उठने लगी तो नन्दिनी भाभी ने माँ के चरण स्पर्श किए, आदत के अनुसार माँ के मुख से आशीर्वाद की झड़ी लग गयी, सिर पर हाथ रखे बोले ही जा रहीं थी 'खुश रहो, सदा सुहागिन रहो' आदि आदि।

भाभी जैसे ही पांव छूकर उठी तो माँ आश्चर्य से देखती रह गयीं। आश्चर्य के कारण पलक झपकाना ही भूल गयीं। हैरानी से माँ ने एक बार भैया की ओर एक

(शेष पृष्ठ २३ पर)

पर्व आया ज्योति का दीपक जलाते जाइए
घोर तम जो छा रहा उसको मिटाते जाइए
एक भी घर में अंधेरा रह न जाये भाइयो
अब से घर-घर में दिवाली यूं मनाते जाइए
रह सकें अपने घरों में चैन से सब लोग अब
देश से आतंक-भय मिलकर भगाते जाइए
याद रक्खें आपको सब लोग सदियों तक यहां
जिन्दगी का पंथ यूं द्युतिमय बनाते जाइए
जिन्दगी के दर्द-दुख सब आज बिल्कुल भूलकर
खुद हंसें औरों को भी जी भर हंसाते जाइए
आज महफिल काव्य की भी खूब जगमग हो रही
गीत-ग़ज़लें-छंद कुछ 'नासिर' सुनाते जाइए

-- डा. मिर्ज़ा हसन नासिर

(ग़ज़ल संग्रह 'ग़ज़ल गुलज़ार' से साभार)

बहस की बात से हम साफ कर इन्कार जाते हैं
अगर उनको खुशी मिलती, खुशी से हार जाते हैं
वो कहते-हमसे मिलना है तो आओ पार दरिया के
हमें मिलना ही होता है, नदी के पार जाते हैं
छपा था उनके सँग फोटो कभी इक बार अपना भी
कहीं भी जाते हम लेकर वही अखबार जाते हैं
जहाँ इतवार को उनसे मिले थे वर्षों पहले हम
अभी भी हम वहाँ कुछ पल को हर इतवार जाते हैं
कभी बीमार, हो जाते हैं अच्छे इश्क में पड़कर
कभी कुछ इश्क में पड़ते तो हो बीमार जाते हैं
वो रूठें, काम है उनका, मनाना काम है अपना
हमेशा रार करते वो, किये हम प्यार जाते हैं
वो-'जाओ-जाओ' कहते हैं मगर हम जो चल देते हैं
पकड़कर हाथ कहते वो- 'कहाँ सरकार जाते हैं'
लगाओ पेड़, छाया वो कभी तो देगा ही देगा
कभी भी काम नेकी के नहीं बेकार जाते हैं

-- डा. कमलेश द्विवेदी

चलो गुनगुना कर के हम देख लें
कोई गीत गाकर के हम देख लें
बहुत पी चुके आंसुओ की नमी
चलो मुस्कुरा कर के हम देख लें
जरा खोल कर पंख उडलें चलो
खुदी आजमा कर के हम देख लें
बहुत दाग नाकामियों के है सर
ये तोहमत मिटाकर के हम देख लें
बहे हैं बहुत संग धारा के हम
अलग राह जाकर के हम देख लें
मिलाते रहे उनकी बातों में हां
कुछ अपनी मनाकर के हम देख लें
अंधेरी गुजारी हैं रातें बहुत
नया चांद लाकर के हम देख लें

-- सतीश बंसल

जिदगी जलती हुई धूप में झुलसी ऐसे
कोयला बीन रही हो कोई लड़की जैसे
वक्त हालात के दरिया में कुछ ऐसे उतरा
चांदनी छिप के समन्दर में हो उतरी जैसे
मेरे दामन को भिगोते रहे आंसू प्रतिपल
घिरके बरसे कोई दुख दर्द की बदली जैसे
भींचकर होंठ वो इस तरह दुआ मांगे है
बंदगी की हो किसी शख्स ने बुत की जैसे
'शान्त' जीवन में कुछ इस तरह उठी है हलचल
सूखे जंगल में कहीं आग हो भड़की जैसे

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

(हिन्दी ग़ज़ल संग्रह 'तलाश' से साभार)

नहीं कुछ और इसमें मैंने खूने-दिल मिलाया है
तब कहीं जा के अपनी शायरी में रंग आया है
आँसू की स्याही को फैला गम के कागज पर
जुदाई की धीमी आँच पर उसको पकाया है
रिश्ता हंसके मिलने का कई लोगों से है लेकिन
याद तुम ही मुझे आए जब भी जी घबराया है
मुझे छूती है हल्के से गुलाबों की लिये खुशबू
हवा के कान में जाने क्या तुमने गुनगुनाया है
भरम रखा है उल्फत का हमने इस तरह से कुछ
तेरी हर चोट पर तेरा दीवाना मुस्कुराया है
बदलते वक्त के संग अब यहां रिश्ते बदलते हैं
सितारे जब हों गर्दिश में तो अपना भी पराया है

-- भरत मल्होत्रा

कुछ पा लेना, सब कुछ खोने से अच्छा है
छोटा घर भी, बेघर होने से अच्छा है
पर स्वतंत्र हों, पा लें चाहे रूखी रोटी
जर परोसते कैदी कोने से अच्छा है
नहीं जरूरी मिले सभी को पूरा सूरज
एक चक्षु भी, अँधा होने से अच्छा है
नवता के संग, परम्पराओं को भी पूजना
हर पल बोझिल जीवन ढोने से अच्छा है
जो हासिल है, साथ उसी के हँसकर जीना
पास नहीं, उसके हित रोने से अच्छा है
जल वो जीवन, जो कंठों की प्यास बुझाए
नदिया बनना, सागर होने से अच्छा है
सिर्फ जरूरत साथ रहे, यदि पार उतरना
बोझ बढ़ाकर नाव डुबोने से अच्छा है
खुले गों से सदा 'कल्पना' कदम बढ़ाना
ठोकर खा, दृग, नीर भिगोने से अच्छा है

-- कल्पना रामानी

सँग तुम्हारे आज फिर मैं गीत गाना चाहती हूँ
हार कर खुद को तुम्हें मैं जीत जाना चाहती हूँ
प्यार कुछ खट्टा कभी, मीठा कभी, खारा कभी हो
छेड़ कर, नाराज कर, तुमको मनाना चाहती हूँ
लो सम्भालो नाव मेरी तुम चलो पतवार थामो
मैं नदी की धार के सँग खिलखिलाना चाहती हूँ
नेह की पावन नदी का आचमन सुख दे रहा है
इस नदी में मैं सरापा डूब जाना चाहती हूँ
देह के संगीत का आनंद है क्षण मात्र भर का
नेह का मैं नाद अनहद गुनगुनाना चाहती हूँ
पढ़ सकूँ मन को तुम्हारे और मन की कह सकूँ मैं
कोई यों नजदीक रहने का बहाना चाहती हूँ
गीत गजलों से कहूँ या कुछ इशारों से कहूँ पर
बात अपने दिल की मैं हर इक बताना चाहती हूँ
जिस जगह मिलती धरा से आसमाँ की प्रीति पावन
उस क्षितिज तक सँग तुम्हारे मीत जाना चाहती हूँ

-- अर्चना पांडा

बदलते वक्त में मुझको दिखे बदले हुए चेहरे
माँ का एक सा चेहरा, मेरे मन में पसर जाता
नहीं देखा खुदा को है ना ईश्वर से मिला हूँ मैं
मुझे माँ के ही चेहरे में खुदा यारो नजर आता
मुश्किल से निकल आता, करता याद जब माँ को
माँ कितनी दूर हो फिर भी दुआओं में असर आता
उम्र गुजरी, जहाँ देखा, लिया है स्वाद बहुतेरा
माँ के हाथ का खाना ही मेरे मन में उतर पाता
खुदा तो आ नहीं सकता, हर किसी के बचपन में
माँ की पूज ममता से अपना ये जीवन संवर जाता
जो माँ की कद्र ना करते, नहीं अहसास उनको है
क्या खोया है जीवन में, समय उनका ठहर जाता

-- मदन मोहन सक्सेना

खो चुका जो वो सुहाना था बताती है मुझे
याद की खुशबू पहाड़ों से बुलाती है मुझे
शिल्पकारी से सजे सुंदर शिकारे खो गये
पीर अपनों से बिछडने की रुलाती है मुझे
पीर भोगी है वतन से भागने की इसलिए
खैर, टंडन, कौल की पीड़ा सताती है मुझे
क्या हसीं पल था प्रिया ने जब कहा था चूमकर
रेशमी होठों की रंगीनी लुभाती है मुझे
भाव विह्वल प्रेममय बादामी आँखों की अदा
क्या नशा होता है नारी में बताती है मुझे
स्वर्ण हूँ मैं दाम मेरे और बढ़ जाते हैं जब
हाथ की कारीगरी जेवर बनाती है मुझे

-- महेश सोनी 'कुमार अहमदाबादी'

सरप्राइज

सीमा के पति रिटायर्ड होने वाले थे। अभी तक ना मकान बना था और ना ही बच्चे किसी काम धंधे अथवा नौकरी से लगे थे, इसलिए वो आने वाले दिनों को लेकर चिंतित, अनमनी, खिड़की पे बैठी कहीं दूर निहारती विचारों में तल्लीन थी, तभी फोन की घंटी से उसकी तन्द्रा भंग हुई, तो रिसीवर कानों से लगा कर बोली- 'हेलो!'

'सुन दीदी, परसों तू हर हालत में यहाँ पहुँच जा, जरूरी काम है' और फोन कट गया। छोटे अमित भाई का फोन था। बचपन में दोनों की खूब तू-तू-मैं-मैं होती थी, और इतनी बढ़ जाती थी कि दोनों जिंदगी भर एक दूसरे से बात नहीं करने और एक दूसरे का मुँह नहीं देखने की धमकियाँ दिया करते थे। शादी के बाद भी सीमा तीन-चार सालों में ही मायके जा पाती थी। घबराई सी सीमा मायके पहुंची- 'क्या हुआ, भाई सब ठीक तो है ना?'

'हाँ ठीक है सब, एक सरप्राइज है, बस तू कार में बैठ!' कार एक सुन्दर से दोमंजिले मकान सामने रुकी। अमित ने मेन गेट खोला, सब लोग अंदर आ गये। पूरा घर दिखाने के बाद अमित बोला- 'कैसा है ये मकान?'

'बहुत अच्छा है, नया घर बनवाया है? वाह कब शिफ्ट कर रहा है?', सीमा ने आश्चर्य मिश्रित खुशी से पूछा। चाबी का गुच्छा और एक कागजों का लिफाफा सीमा को देते हुये अमित बोला- 'शिफ्ट मैं नहीं तू कर रही है, ये तेरा मकान है, ले चाबी!'

-- मंजु शर्मा

चुनौती

पिता की बड़ी इच्छा थी कि बेटी खूब पढ़े-लिखे और विदेश जाये। बेटी ने उच्च शिक्षा तो प्राप्त कर ली मगर विदेश न जा पाई। संयोग से विदेश में रहने वाला लड़का मिल गया और शादी के बाद वह विदेश चली गई। शीघ्र ही लाड़ली बेटी सुंदर से बेटे की माँ बन गई।

खुशियाँ दरवाजे पर दस्तक दे रही थीं पर बेटी ने अनुभव किया, पति बदल रहा है। बाहर कुछ ज्यादा ही समय देने लगा है। उस रात वह अनमनी सी पति के आने का इंतजार कर रही थी। पति आया पर बेमन से बोला- 'सोई नहीं?' 'सोती कैसे आपके बिना!'

'आदत डाल लो बिना मेरे सोने की। ज्यादा चुप रहकर तुम्हें और धोखा नहीं देना चाहता। मेरी पहले से ही एक विदेशी महिला से शादी हो चुकी है। दो बच्चों का बाप हूँ। मैं तो शादी करना ही नहीं चाहता था, पर मेरे माँ-बाप को तो वारिस चाहिए था, वह भी भारतीय बहू से। उनको उनका वारिस मिल चुका है। मेरी तरफ से तुम आजाद हो। कहीं भी रहो, कहीं भी जाओ।'

'अच्छा हुआ बता दिया। धोखा तो तुम दे ही चुके हो, पर मैं तुम्हें धोखे में नहीं रखूंगी। मैं एक वकील हूँ और एक वकील से तुम उसकी औलाद नहीं छीन सकोगे, यह मेरी चुनौती है।'

-- सुधा भार्गव

माँ पर पूत, पिता पर घोड़ा

'का हो बबुआ, घरे आई लछिमी कोनों ठुकरात है?' माँ के स्वर में थोड़ा दर्द और ज्यादा व्यंग था। राज यकायक अपने अतीत में जा डूबा। ठीक ऐसे ही उसने बाबा के लिए माँ से कहा था, जब बाबा ने रिश्वत का ब्रीफकेस दरवाजे से बाहर सड़क पर फेंककर राज को डांटना शुरू किया था, 'कितनी बार कहा है कि मेरे से बिना पूछे किसी को घर में मत घुसने दो, पर लाट साहब समझे तब ना? चले आते हैं बैग में रुपये लेकर मानवता खरीदने! मैं बिकाऊ नहीं हूँ, समझे?'

इस बीच राज ने ना जाने कितने सपने बुन डाले थे उन पैसों को लेकर, जिन्हें बाबा ने कागज के टुकड़ों की मानिंद हवा की सैर करा दी थी, उहं! बस एक बार ले लेते तो क्या बिगड़ जाता? बाबा के क्लर्क के घर में काठगोदाम की मजबूत लकड़ी का डिजाइनर फर्नीचर, बड़ा गोदरेज का फ्रिज, टोयटा कार और न जाने क्या-क्या और हमारे घर में मामूली चार कुर्सियां और छोटा तख्त! बड़ी शर्म आती थी जब क्लर्क का बेटा घर आकर हेय दृष्टि से देखता था!

आज विवेक बाबू नोटों से भरा सूटकेस थमा रहे थे और बाहर रामू काका अपनी हार होते देख, झुकी कमर और पनीली आँखों से हसरत से उसका मुँह निहार रहे थे! पत्नी को अच्छे प्राइवेट हास्पिटल में डिलिवरी करने का स्वप्न, माँ को चारों धाम घुमाने की लालसा और अपने लिए देखा देहरादून का बड़ा फ्लैट (जिसे विवेक बाबू देने वाले थे) बाहर खड़ी काली चमचमाती बीएमडब्लू कार का सम्मोहन एक तरफ और दूसरी तरफ बाबा का गौरवान्वित मुखड़ा और माँ का दंश देता वाक्य, रामू काका की पेंतालिस डिग्री झुकी कमान सी पीठ जो उस बेग को देख तनिक और झुक गयी लगी। चुनाव में पल भर का विलम्ब उसकी नीयत और सम्मान को चटाक से चटका दे, इसके पहले तीर सा निकल राज ने विवेक बाबू की कार को रोककर बैग वापिस कर उन्हें झुका डाला था !

माँ ने सुख की सांस लेकर पुनः कह डाला, 'माँ पर पूत, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा।'

-- पूर्णिमा शर्मा

नफरत

अखबार में प्लास्टिक की बोरी पर दीपक बेचते गरीब बच्चे की फोटो के साथ उसकी दास्ताँ छपी थी। जिसने अपनी मेहनत से अमेरिका में एरोनाटिक्स इंजीनियरिंग में मुकाम हासिल किया था। उस फोटो को देख कर हार्लिक बोला, 'कितना गन्दा बच्चा है! इसे देख कर खाना खाने की इच्छा ही न हो।'

'यदि मैं देख लूं तो मुझे उलटी हो जाए!' लुनिक्स ने अपना तर्क दिया, 'मम्मा! ये भारतीय बच्चे इतने गंदे क्यों होते हैं? आप तो भारत में रही हैं ना! आप वहां कैसे रहती थीं? ये तो नफरत के काबिल है!'

'क्यों लुनिक्स? मेहनत करना गलत है? फिर तुमने इसकी दास्ताँ भी पढ़ी नहीं है। ये कौन है क्या है?'

'नहीं मम्मा! मैं तो गंदे लोगों से नफरत करता हूँ। इसकी शक्ल भी देखना नहीं चाहता हूँ। दास्ताँ पढ़ना तो दूर की बात है।'

'तब तो बेटा, तुम इस घर के मुखिया के उद्यम को कभी जान नहीं पाओगे.' कहते ही मम्मा ने रामायण से वही फोटो निकाल कर माथे से लगा लिया और आँखों से आंसू निकल गए।

-- ओम प्रकाश क्षत्रिय

कैनवास

ट्रायपोड पर नया कैनवास लगा कर हाथ में कूची लिए वह देर तक बैठा सोचता रहा कि किस आकार और किस रंग से शुरू करूँ? कोरे सफेद कैनवास पर टकटकी लगाये आँखें जाने कितने ही रंग देख रही थी। अतीत के रंग उजले, चटकीले, चमकीले, धुंधले और स्याह रंग। और अंत में सभी रंग एक दूसरे में मिलकर कभी उदासी के गहरे काले रंग में तब्दील हो जाते तो कभी आशा के उजले कैनवास में लेकिन कोई आकृति अब भी उभर नहीं पा रही थी।

कितने ही दिनों से वह इस चित्र को बनाने की कोशिश में लगा था एक हँसता खिलखिलाता चित्र जो उनकी जिंदगी को खुशियों से भर दे, लेकिन नाकामयाब रहा। आज वह तय करके बैठा था लेकिन मन साथ नहीं दे रहा था। तभी उसने आकर कंधे पर हाथ रखा। उसकी आँखों में निश्चय की चमक थी। वह तुरंत निर्णय पर पहुँच गया और उसके हाथ उस कोरे कैनवास पर एक मुस्कुराते बच्चे का चित्र बनाने में जुट गये, उसी बच्चे का जिसे अभी वे अनाथालय में देख कर आये थे।

-- कविता वर्मा

गाँधी वाले राष्ट्र में, जलती नफरत आग
नेता खंडित कर रहे, आपस का अनुराग
आपस का अनुराग, सियासत को जो अखरे
ऐसी चलती चाल, भीत सहिष्णुता बिखरे
कह 'पूतू' कविराय, चली यह कैसी आँधी
बुझा प्रेम का दीप, सोचते होंगे गाँधी

-- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

ऐसी कोई बात होगी/फिर से कभी कोई मुलाकात होगी
पुरानी यादों से/ऐ जिन्दगी फिर कोई सौगात होगी
वक्त के पुराने दौर को फिर से संवार देना
उनसे फिर रूबरू करा देना/कई मित्र गुमनाम हो गये हैं
ऐ जिन्दगी ये पल दोबारा ला देना
कारवाँ बढ़ता रहे सबका/जिन्दगी में साथ रहे सबका
मन्जिल पर सभी पहुँचें/ऐ जिन्दगी साथ निभाना सबका
आकाश में तारे चमकते रहें/सूरज भी हमेशा चमकता रहे
इंसान की आरजू पूरी करने के लिए
ऐ जिन्दगी सबके सितारे चमकाती रहे
एक घरोंदा सबको मिले
जिन्दगी में अपना वजूद मिले
इज्जत से हर व्यक्ति आगे बढ़ सके
ऐ जिन्दगी ऐसी खुशी सबको मिले

-- नितिन मेनारिया

हाँ तुमने मुझे देखा सदा मुस्कुराते
हर उस अवसर पर/जिसपे शायद खुश होना ही चाहिए
नहीं देख सके तुम वह पैबंद
जो लगाया था मैं ने/अपने चिथड़े हुए दिल पर
नहीं देखा तुमने मरहम/सीने के उन जख्मों पर
जो हुआ था छलनी/तुम्हारी बोली के तीरों से...
देखी तुमने मेरी खूबसूरती
उन हीरे, जवाहरातों में
जो दिए तुमने उपहार में
नहीं देखी मेरी सुंदरता जो
छिपी थी मेरी खिलखिलाहट में
देखी तुमने मेरी आजादी
जो दी थी तुमने/कि तुम स्वयं आजाद रहो
नहीं दिखाई दी वह कैद/जिसने किया मजबूर
पहनने पर मुखौटा मुस्कुराहट का
चलो मैं न सही तुम तो हो खुश
कि मैं हूँ खुश मुस्कुरा रही हूँ मैं...

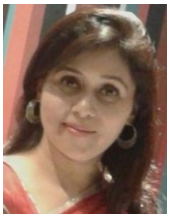

-- रोचिका शर्मा

पत्तियों का डाली से छूटना आया
पतझर में जैसे वृक्ष को रोना आया
परिंदों का था ये पत्तियों का पर्दा
छाँव छूटी और तपिश गहराया
पत्तियां भी होती बेटियों की तरह
वृक्ष/घर को ये कर जाती सूना
रूठ कर करती हैं जिद्दी फरमाइशें
पिता/वृक्ष कर देते पूरी फरमाइशें
नई कोपलें फूटने पर कोयल गाती
सूनेपन में फिर से खुशिया छा जाती
पूजे जाते हैं आज भी वृक्ष और बेटियां
वृक्ष पर ना करो वार, ना करो भ्रूण-हत्या
बेटियां और वृक्ष से ही तो कल है
इनसे ही जीवन जीने का एक-एक पल है
संकल्प लेना होगा इन्हें बचाने का आज
दुनिया बचाने का होगा ये ही एक राज

-- संजय वर्मा 'दृष्टि'

रुदाली

लाल आंखें
बिखरे बाल
काले कपड़े कातर आवाज
दारुण विलाप
पत्थर से बहे पानी
व्यथा यूं बखानी
दर्द...दुःख...गम
दम बेदम
विरह पीड़ा अंतस उजड़ा
हर नयन से नीर उमड़ा
साजन बिना सुहागिन
वैधव्य घनाघन
रोज ही तलाश
बिछे एक लाश
दर्द का स्वांग रचे
घर भर का पेट भरे
रुदाली ओ रुदाली
तू तो मौत की घरवाली

-- निवेदिता श्रीवास्तव

हर घर में खुशियां फैलाने
अपने दिल से अंधकार मिटाने
युवाओ को सही का पाठ पढ़ाने
उन्हें अवगुणों से दूर भागने
चलो एक दीप और जला लें
नशे की बेल को जड़ से हटाने
अपनों को अपनों से मिलाने/अपने दिल में करुणा जगाने
भूखे को रोटी खिलवाने/चलो एक दीप और जला लें

-- प्रिया मिश्रा

सूखा पत्ता हूँ मैं डाल का
कभी बेदर्दी से रौंदा जाता पैरों तले
कभी धूल में मिलाती आती-जाती गाड़ियाँ
कभी कोई ठोकर मारता खेल-खेल में
हुआ क्या डाल से जुदा होकर
खो गया मेरा वजूद ही मेरा
था कभी हरा भरा मुस्कुराता पत्तों के झुरमुट में
कभी हवा दुलारती/कभी सूरज की किरणें सहलाती
कभी पंछियों का कलरव गुदगुदाता
कितनी शान से मैं ऊपर से
देखता था मैं धरती की ओर
और आज पड़ा निढ़ाल धरा पर
देखता हूँ बेबस आसमां की ओर
और सोचता...
क्यों हो गयीं जुदा मुझ से खुशियाँ मेरी
और मिला मेरा वजूद धूल में
शायद जीवन का यही नियम है
मुस्कुराने की कीमत/उसे खोने के बाद ही पता चलती है
और जीवन का सबक भी वक्त ही सिखाता है

-- मीनाक्षी सुकुमारन

लाठी हाथ में लीजिए, बड़े काम की चीज
देखि के दुश्मन भी डरें, रहे हाथ को मीज
रहे हाथ को मीज, देखि लाठी को भइया
कहे राज कविराय, मची जग ता-ता थइया
जीव जन्तु समझाय, चली लहराती लाठी
पड़ी हाथ शैतान, चली इठलाती लाठी

-- राजकिशोर मिश्र 'राज'

गजलें

उलझाती ये बेचैनियां जाने क्या अंजाम लिखेंगी
टूटी उम्मीदें भला कैसे मुकम्मल पैगाम लिखेंगी
ख्वाबों में भी परदापोशी ही किया करते है पसंद
कैसे हथेलियां सुर्ख मेंहदी से उनका नाम लिखेंगी
रोशनी मे दीदार गंवारा नहीं उन नम निगाहों को
आफताबी किरणें भला कैसे धुंधली शाम लिखेंगी
इतना अदम भर डाला है जुदाई ने दिल के अंदर
उखड़ी धड़कनें भला कैसे बिना रुके आराम लिखेंगी
निकले ना इब्तिसाम तहजीबों से भी बचा करते हैं
खुश्कियां भला कैसे भीगी दास्तानें तमाम लिखेंगी
मिलके भी मिलने की ख्वाहिशें आदाब कहती नहीं
ऐसी मुलाकातें भला कैसे अलविदा-ए-सलाम लिखेंगी

-- मीनू झा

प्यास अधरों की बुझा कर जाइये
एक शमां दिल में जला कर जाइये
लूटते हो क्यों निगाहों से मुझे
बात दिल की बता कर जाइये
पास आओ तुम मेरे इतने कभी
खूबसूरत सी खता कर जाइये
और कितनी राह देखे हम भला
आज महफिल को जवां कर जाइये
हूँ मुसीबत में खुदा से तुम भला
एक अदद सी ही दुआ कर जाइये

-- दिनेश दवे

लौटी गीता अपने घर, है कितना सुन्दर अवसर
उठो आज लौटा आये, जिसका सम्मान उसीके घर
लौटाने की होड़ लगी, कोई बचपन भी लौटाएगा
लौटा दो माँ की ममता, जो टंगी हुयी है नभ पर
मांग रही है माटी हमसे, अपनी महक पुरानी
चलों आज लौटा आयें, हरियाली उसके पथ पर
पूछ रहे हैं गुरू हमारे किधर गया वह ज्ञान मेरा
उनकी पोथी उनको अर्पण, लौटाएं हम मिलकर
देता सम्मान शरण उनको, जो करते हैं सम्मान
छा जाती आँखों में करुणा, सुर्ख लबों पर आकर
खेल-खेल में बच्चों ने, तोड़ दिया गुलदस्ता एक
कैसी लगती हूँ बतलाओ, कहती तस्वीर बिखरकर
नीला पीला लाल हरा हर रंगों की पहचान अलग
सप्तरंगी वह इन्द्रधनुष, उग आया खुद अंबर पर

-- महातम मिश्र

कहानी सोनम की

केशव

'अबे फुरकान देख आ रही है वो' -शहजाद ने फुरकान को हाथ मारते हुए कहा। 'हाँ, भाई जान! आज बच के नहीं जानी चाहिए। अब इन्तेजार नहीं होता।' -फुरकान ने उत्तेजना और कामुकता मिश्रित आवाज में कहा। 'चल दीवार के पीछे छुप जाते हैं।'- शहजाद ने फुरकान का हाथ पकड़ के दिवार की तरफ खीचते हुए कहा।

यह पाकिस्तान के करांची शहर से लगभग २०० किलोमीटर दूर स्थित १००-१२० परिवार वाला एक गांव था जिसमें मात्र दो हिन्दू परिवार ही रहते थे। आजादी से पहले यह गाँव हिन्दू बहुल था परन्तु अधिकतर लोग बंटवारा होने के बाद भारत आ गए थे, कुछ लोग शहरों में जाके बस गए और गाँव मुस्लिम बहुल होता चला गया। अब दो ही परिवार बचे थे प्यारेलाल और रामआसरे, इन दोनों को ही अपने गाँव और अपनी जमीनों से प्यार था। आखिर पुरखों की जमीन और गांव को कैसे छोड़ दें? फिर रामआसरे की माँ अभी जिन्दा थी जिसकी उम्र लगभग ८० साल की थी वह गाँव छोड़ के जाना ही नही चाहती थी। रामआसरे की १० बीघा खेती रोड के किनारे थी जिसमें खेती कर वह अपने परिवार का गुजरा करता। फुरकान और शहजाद जिस लड़की का इन्तेजार कर रहे थे, वह रामआसरे की छोटी बेटी सोनम थी, जो गाँव से दूर कक्षा ७ में पढ़ने जाती थी। फुरकान और शहजाद पहले भी कई बार सोनम को स्कूल से आते-जाते छेड़ते थे पर आज उनके मन में खतरनाक इरादे पल रहे थे।

जैसे ही सोनम नजदीक आई दोनों अचानक दीवार के पीछे ने निकल सोनम के सामने आ गए। इससे पहले सोनम कुछ समझ पाती फुरकान ने सोनम मुंह पर हाथ रख के उसका मुंह बंद कर दिया। शहजाद ने सोनम के पैर पकड़ उसे उठा लिया, सोनम जोर से चीखते हुए हाथ पैर मार रही पर उन दोनों के सामने असहाय पक्षी की तरह हो गई थी। दोनों सोनम को उठाये एक खाली कमरे में ले गए वहां उन्होंने उसके हाथ पैर बाँध के बारी-बारी से बलात्कार किया। बलात्कार करने के बाद सोनम को दर्द में तड़पता हुआ छोड़ वहां से भाग गए।

उनके जाने के बाद सोनम घिसटती हुई और दर्द से बिलखती हुई किसी तरह कमरे से बाहर और फिर सड़क पर आ गई। जानवरों के लिए घास लेने जा रही एक महिला की नजर सोनम पर पड़ी और उसने उसे घर पहुँचाया। घर पर जब रामआसरे और घर के बाकी लोगो को पता चला तो हाहाकार मच गया। रामआसरे गुस्से भरा हुआ फौरन प्यारे लाल और तीन चार लोगो को ले फुरकान और शहजाद के घर पहुंचा। फुरकान और शहजाद का पिता जावेदअली अपने दरवाजे के बाहर ही बैठा मिल गया। जब रामआसरे ने उसे सारी बात बताई और पुलिस जाने की बात करने लगा तो जावेद अली शायद पहले से ही तैयार था और गुस्से में रामआसरे की गिरेवान पकड़ कर बोला। 'तू पुलिस में जायेगा... पुलिस में जायेगा... काफिर की औलाद, जा पुलिस में... अबे हरमजादे, अपनी लड़की को संभाल नहीं सकता और मेरे लौंडों पर इलजाम लगाता है।' रामआसरे ने जावेदअली की बात सुनी तो उसे और गुस्सा आ गया उसने भी जावेद अली की गिरेबान पकड़ ली और दोनों में हाथापाई शुरू हो गई।

तभी गाँव का मुखिया वहां आता है और दोनों का बीच बचाव करता हुआ बोला- 'रामआसरे! तुम्हे पुलिस में जाने की जरूरत नहीं है, इस गाँव में पुलिस का काम नहीं कल पंचायत बैठेगी और उसी में फैसला लिया जायेगा।' इतना कह मुखिया ने रामआसरे को समझाया तो रामआसरे मान गया और पंचायत बैठाने के लिए तैयार हो गया।

जब रामआसरे जावेद अली के घर से चला गया तो मुखिया बुन्दू खान को जावेद अली अपने घर में ले गया। घर में बुन्दू खान और जावेद अली की बहुत देर तक बात होती रही, जब बुन्दू खान जाने लगा तो जावेद अली ने एक ५० हजार की गड्डी बुन्दू खान को पकड़ा दी। बुन्दू खान मुस्कान लिए वहां से निकल गया।

अगली सुबह बाग में पंचायत लगी हुई थी, एक बड़े से चबूतरे पर मुखिया बुन्दू खान और बाकी पंच बैठे थे। नीचे दरी पर रामआसरे सोनम (सोनम की हालत अब भी खराब थी बड़ी मुश्किल से वह उठ-बैठ पा रही थी) को लेके बैठा था। दूसरी तरफ जावेद अली फुरकान और शहजाद को लेके। फैसला सुनने दूसरे गाँव के लोग भी आये हुए थे जिनमे ९९% मुस्लिम समाज से थे। पूरा माहौल कोलाहल भरा हुआ था।

बुन्दू खान ने ऊँची आवाज में बोलना शुरू किया- 'मौजूद हजरत और ख्वातीन, आप सबको यह इल्म होगा कि यह पंचायत क्यों बुलाई गई है। रामआसरे का यह आरोप है कि उसकी बेटी के साथ जावेद के बेटों ने बदसलूकी की है जबकि जावेद के बेटे यह कह रहे हैं कि जो भी हुआ वह रामआसरे की बेटी की रजामंदी से हुआ।'

बुन्दू खान का इतना कहना था कि रामआसरे बीच में ही खड़ा होके चीखता हुआ बोला- 'यह झूठ है। इसके दोनों बेटो ने मेरी बेटी से जबरजस्ती की है।' रामआसरे ने फुरकान और शहजाद की तरफ इशारा करते हुए कहा।

'खामोश! जलील इंसान हमारी बात बीच में काटने की हिम्मत करता है।' बुन्दू खान ने गुस्से से छड़ी दिखाते हुए रामआसरे को धमकाया। 'चुपचाप बैठा रह, और हमारी बात सुन पहले।' बुंदुखान ने कहना जरी रखा। 'तो, हजरात मैंने यह पता लगा लिया है कि जावेद के लड़कों से रामआसरे की लड़की का चक्कर था। मेरे पास गवाह है। सलीम, बताओ सारी बात।' बुन्दू खान ने जोर से किसी सलीम को पुकारते हुए कहा।

'जी' सलीम खड़ा होता हुआ बोला- 'मैं सोनम के साथ पढता हूँ और मुझे सोनम ने खुद बताया था कि वह फुरकान से प्यार करती है और उससे रोज अकेले में मिलती है।' सलीम ने कहना जारी रखा।

'नहीं यह झूठ बोल रहा है।' सोनम ने रोते हुए रामआसरे को बताया।

रामआसरे खड़ा होता हुआ बोला- 'बुन्दू खान जी, मुझे पता चल गया है कि यहां कैसा फैसला होने वाला है, मुझे अब पंचायत से इंसाफ नहीं चाहिए, अब पुलिस ही इंसाफ करेगी। मैं जा रहा हूँ।' इतना कह रामआसरे सोनम का हाथ पकड़ चला गया।

रामआसरे के जाने के बाद बुंदू खान और जावेद अली थोडा चिंतित हुए और पंचायत बर्खास्त कर दी गई। 'जनाब बुन्दू साहब, अब क्या होगा? यह हरमजादा काफिर की औलाद अगर पुलिस में चला गया तो क्या होगा?' -जावेद अली ने परेशान होते हुए कहा।

'कुछ नहीं होगा, तुम परेशां न हो।' बुन्दू खान ने इतना कह अपना मोबाइल निकाला और उस पर किसी से बात की। बात खत्म करने के बाद बुन्दू खान ने जावेद अली के कंधे पर हाथ रखते हुए कुछ कहा। उसके बाद दोनों गाँव के मदरसे के मौलवी के पास चल दिए। मौलवी के पास पहुँच के बुन्दू खान ने उसे कुछ समझाया, मौलवी बुन्दू खान की बातों से सहमति में सर हिला रहा था तो कभी मुस्कुरा रहा था।

इधर रामआसरे, सोनम और प्यारेलाल जिले के पुलिस थाने पहुँच चुके थे। थाने में जाके उन्होंने थानेदार से मिलने की कोशिश की पर मालूम चला कि थानेदार साहब थाने में नहीं हैं। उन्होंने अपनी रिपोर्ट लिखवानी चाही पर किसी ने भी उनकी रिपोर्ट नहीं लिखी और अगले दिन आने को कहा। शाम तक इन्तेजार और गुजारिश करने के बाद भी जब उनकी रिपोर्ट नहीं लिखी गई तो थक हार के वापस घर आ गए और अगले दिन फिर थाने जाने का इरादा करा।

अगली सुबह जैसे लोग जागे तो उन्होंने कई फटे हुए पन्ने रामआसरे के घर के आगे पड़े हुए देखे, कुछ पन्ने दरवाजे पर पड़े थे और कुछ दरवाजे के भीतर से झाँक रहे थे। जैसे ही लोगों ने पन्ने उठा के देखें तो उनके मुंह से चीख निकल गई। यह कुरान के पन्ने थे। लोगो गुस्से में रामआसरे का दरवाजा पीटने लगे। इतने में मौलवी भी वहां आ गया। उसने जब कुरान के पन्ने फटे हुए देखे तो सैकड़ों लानतें और गालियां देता हुआ रामआसरे को भला बुरा कहने लगा।

रामआसरे ने दरवाजा जैसे ही खोला तो मौलवी ने उसकी गर्दन पकड़ ली और पूछने लगा कि 'उसने कुरान का अपमान क्यों किया?'

(शेष पृष्ठ १३ पर)

चचिंता मत करना प्रियतम तुम, दूर कभी ना जाऊँगी!
पथ कितना भी पथरीला हो, लेकिन साथ निभाऊँगी!
अपनी किस्मत से लड़कर ही, मैंने तुमको पाया है!
मेरी सभी दुआओं में बस, नाम तुम्हारा आया है!
फिर तुमको अब छोड के प्रियतम, कैसे मैं जा पाऊँगी!
पथ कितना भी पथरीला हो, लेकिन साथ निभाऊँगी!
बेटी वाला फर्ज अधूरा, पहले मुझे निभाना है!
रूठे माँत पिता से कहकर, फिर तुमको अपनाना है!
सारे फर्ज निभाकर प्रियतम, तुमको इक दिन पाऊँगी!
पथ कितना भी पथरीला हो, लेकिन साथ निभाऊँगी!
नैनों को तेरी ही छवि से, मैंने रोज सजाया है!
तुम से ही तो सजकर मेरा, हर सपना मुस्काया है!
कैसे उन सपनों के प्रियतम, यूँ टुकड़े कर पाऊँगी!
पथ कितना भी पथरीला हो, लेकिन साथ निभाऊँगी!
जीवन मेरा अब तुम ही हो, सच मैंने ये जान लिया!
भूल गई मैं आज खुदाई, तुमको अपना मान लिया!
सरल नहीं है पथ यह प्रियतम, फिर भी चलती जाऊँगी!
पथ कितना भी पथरीला हो, लेकिन साथ निभाऊँगी!
गोपी बनकर चाहा तुमको, मीरा बनकर पूजा है!
रुक्मणी बन पाना है प्रण,
और न कोई दूजा है!
कृष्ण भले बन जाना तुम,
मैं राधा ना बन पाऊँगी!
पथ कितना भी पथरीला हो,
लेकिन साथ निभाऊँगी!

-- प्रिया वच्छानी

मेरी पायलिया छम छम बोले,
काहे भेद जिया के सारे खोले।
बहके कदम ले जाएं कहां हम,
अनजानी अनदेखी डगरिया।
तन मन बस में ना दिल बस में,
हुई बैरी देखो रे अपनी उमरिया।
मन की नदिया छल छल छलके,
कोई सुनो तो क्या क्या बोले। काहे भेद...!
डोरे गुलाबी हुए अंखियन के,
ताने सहें हम सब सखियन के।
एक पागलपन एक मदहोशी,
कजरारी बोझिल हुई री पलकें।
पुरवइया संग ऋतु मधुमासी
जीवन का अब पल पल डोले। काहे भेद...!
अमुवा की डारी सी महकी मैं,
गीतों में मेरे घुल गए सरगम।
हुए सिंदूरी सपने सब अब तो
सपने भी प्रीत जगाएं हरदम।
बाँसुरिया बावरिया मन की,
स्वर लहरी यों मधुरस घोले।
काहे भेद...!

-- शुभदा बाजपेयी

सत्य हमेशा कहता हूं अब खुल्लम खुल्ला बोलूँगा
कोई कुछ भी सोचे उनको, इक पलड़े में तोलूँगा
मैंने भी थे ख्वाब संजोये भाई भाई कहने के
मैंने भी प्रयास किये थे मिल जुल साथ में रहने के
लेकिन उनकी गद्दारी ने सारे सपने लूट लिये
मैंने मानवता की खातिर फिर भी कड़वे घूँट पिये
उनके अत्याचारों ने मेरे विश्वास को तोड़ दिया
उनकी खूनी हरकत ने अंतर मन तक झकझोर दिया
भूल नहीं पाता हूं बातें मैं उस काली रात की
भीतर तक सिहराती यादें घाटी के हालात की
उनकी सीनाजोरी भी बढ़नी थी जो बढती ही गयी
मेरे मन में गांठें भी पड़नी थी जो पड़ती ही गयी
लाख मनाले कोई पर उन गांठों को न खोलूँगा
कोई कुछ भी सोचे उनको, इक पलड़े में तोलूँगा
मैंने बटवारा भी माना मजहब के आधार पर
मैंने चुप्पी भी साधी अब तक हर नरसंहार पर
मैंने सोचा भाई है मानेगा थोड़ी देर सही
माफ किया अब तक उनको था आपस में हो बैर सही
लेकिन वो तो बटवारे संग माँ का मस्तक मांग रहा
भारत की धरती पे रहकर अपनी सीमा लांघ रहा
इनको समझ नहीं आती है राहें अब संवाद की
इनकी हर बातों में होती बातें बस उन्माद की
गजवा हिन्द की चाहत ले आँखें भारत पे ठहरी हैं
और हमारे देश में इनकी जड़ें हो रही गहरी हैं
अब इनकी नापाक जड़ों में मट्ठा मैं तो घोलूँगा
कोई कुछ भी सोचे उनको, इक पलड़े में तोलूँगा
उन लोगों ने सदा उछाले पत्थर जिन पर घाटी में
वे ही बचाने आये फरिश्ते बनकर अबके घाटी में
इनके सब आका भी इनको इस विपदा में छोड़ गए
और हमारे सैनिक इनकी रक्षा करने दौड़ गए
भूख प्यास से तड़प रहे तब ये गुहार लगाते है
पेट भरा और झट पलटे फिर से पत्थर बरसाते है
ये भारत के टुकड़े चाहने वाले अपनी जात दिखा बैठे
फिर से मौका पाते ही अपनी औकात दिखा बैठे
फिर से पंडित बस जाए ये चाहते शंकर घाटी में
साफ कर दिए सैलाबों
ने सारे कंकर घाटी में
थोड़े से जो बचे उन्हें तो
मैं खुद ही अब धो लूंगा
कोई कुछ भी सोचे उनको,
इक पलड़े में तोलूँगा

-- मनोज डागा 'मोजू'

(पृष्ठ १४ की शेष)

ग़ज़ल

मुखौटे हर तरफ दिखते हैं मुझको
कहीं दिखता नहीं क्यों आदमी है?
फिजा में गूँजता हर ओर मातम
कि फिर ससुराल में बेटी जली है
सभी मौजूद हों महफिल में, फिर भी
बहुत खलती मुझे तेरी कमी है
दहल जाए न फिर इंसानियत 'जय'
लड़ाई मजहबी फिर से छिड़ी है

-- जयनित कुमार मेहता

आज किसी टीपू के चरणों में देखो सरकार पड़ी
फिर से हम पर देखो झूठे इतिहासों की मार पड़ी
कब तक हिन्दू गौरव पर यूं हमले होते जाएँगे
रक्त सने इतिहास हमारे मुख पर पोते जायेंगे
कब तक घाव कुरेदे जाएंगे दुश्मन की गोली के
कब तक महिमा मंडन होंगे अफगानों की टोली के
कब तक यूँ गाया जायेगा तुर्क मुगलिया शानों को
कब तक नायक माना जायेगा टीपू सुल्तानों को
कब तक दौर गुलामी वाले, पुनः खरोंचे जाएँगे
कब तक केसरिया झंडे के धागे नोचे जायेंगे
क्रूर और निर्दयी राज को सहनशील दिखलाते हो
इस्लामी तानाशाही को भी स्वर्णकाल बतलाते हो
कर्नाटक की 'गौरव' गाथा इक टीपू की दास नहीं
लगता सिद्धरमैया ने है कभी पढ़ा इतिहास नहीं
याद रहा मैसूर मगर क्यों विजयनगर को छोड़ दिया
हिन्दू शासक ेष्ण देव से नाता अपना तोड़ दिया
कृष्णदेव संस्ंति के पोषक, कला-धर्म के राही थे
उनके पुरखे हरिहर बुक्का सच्चे वीर सिपाही थे
कर्नाटक का वीर वंश जेहादों से टकराया था
इस्लामी हमलों के आगे सिर को नहीं झुकाया था
वोटों की खातिर, सुल्तानों की गोदी में झूल गए
और विदेशी चालों में अपने पुरखे ही भूल गए
हृदय तुम्हारे निज गौरव का पुष्प कदाचित खिला नहीं
और जयंती की खातिर कोई भी ढंग का मिला नहीं
टीपू कर्नाटक का नायक? कभी नहीं हो सकता है
उसके पाप नहीं कोई भी गंगाजल धो सकता है
अंग्रेजों से लड़ा, मगर वो फ्रांसिसियों का मित्र रहा
दोनों ही थे परम लुटेरे, कैसे स्वच्छ चरित्र रहा
इस्लामी शासन के जिसने स्वर्णिम स्वप्न संजोये थे
और पांच सौ ब्राह्मणों के
सर जिसने कटवाए थे
श्वेत पृष्ठ पर कालिख का
उत्कर्ष नहीं हो सकता है
ये टीपू सुल्तान कभी
आदर्श नहीं हो सकता है

-- गौरव चौहान

आईना खुद नहीं देखते, न सारा जहान दिखता है
भारत माता के बेटों में, हिन्दू तालिबान दिखता है
शर्म करो इतिहास देख लो, दुनिया में संत्रास देख लो
देखो आतंकी हत्यायें, लहू-लहू आकाश देख लो
पेरिस की सड़कों पर क्या, उड़ता गुलाल दिखता है
भारत माता के बेटों में, हिन्दू तालिबान दिखता है
देखो सिसक रही मानवता, आतंकी उपहास कर रहे
गलत दिशा दे युवा शक्ति को, मजहब का उन्माद भर रहे
कलम कर रहे सर खंजर से, औ इसका गुमान दिखता है
भारत माता के बेटों में, हिन्दू तालिबान दिखता है
मासूमों की हत्याओं का, महिमा मंडन करने वालो
आतंकित होती दुनिया पर, एक नजर तुम भी तो डालो
सच बतलाओ तब दुनिया को, जैसा ये जहान दीखता है
भारत माता के बेटों में, हिन्दू तालिबान दिखता है

-- मनोज श्रीवास्तव

(दूसरी और अंतिम किस्त)

मेरी लाइफ लाइन

नीलिमा शर्मा (निविया)

निम्मी बीच में बोल उठी- 'पर माँ मैं तो अकेली हो जाऊंगी न घर में, अगर आप बच्चों को लेकर चली जाएगी। इनके पास तो वैसे भी वक्त नही है।' चेहरे पर हलकी सी नाराजगी का भाव लिये हुए निम्मी के चेहरे को देख सुनील आज परेशान नहीं हुआ उसका मन तो कुछ और ही सोचने लगा था।

बच्चों का मन तो गाँव जाने के नाम से ही खुश हो गया। दादी गांव में क्या-क्या होगा। दादू गांव में यह करेंगे वोह करेंगे। बस बच्चे और उनके दादी बाबा खुद में व्यस्त हो गये। रविवार को जाने का कार्यक्रम बन गया।

सबको खुश देखकर निम्मी और ज्यादा कुढने लगी। बर्तनों को समेटते हुए उसे खुद पर गुस्सा आने लगा। बेकार मैंने दिन भर किचन में बिताया। इनको तो मेरी परवाह ही नहीं, कैसे एक दम से बच्चों को गांव भेज रहे हैं। यहाँ रहते तो पढाई करते, कुछ सीखते। वहां क्या करेंगे? कौन देखेगा कि कितना होम वर्क किया। अब अच्छी बहू हूँ न, चुप ही रहना होगा पर सवाल बच्चो का है कैसे चुप रहूं? पर अंदर का सच कुछ और कहता था निम्मी को बच्चों के गांव जाने से नहीं अपने अकेलेपन से डर लग रहा था।

मन ही मन खीझती काम खत्म कर निम्मी कमरे में आई तो लाइट ऑफ थी। तो आज जनाब ने हमारे आने की इंतजार भी नहीं किया। ठीक हैं हम ही पागल हैं न, जो इनका मनपसंद खाना बनाये। इनके लिए आज सज संवरकर बड़ी वाली बिंदी लगाकर रेडी हुए। साहेब जी ने आँखें भरकर एक बार देखा भी नहीं। सही कहती हैं सविता, शादी के कुछ बरस बाद पति को पत्नी में रूचि नहीं रहती। मैं नहीं मानती थी यह बात पर आज सच लग रही है। गुस्से में निम्मी ने बाथरूम में घुसकर जैसे ही लाइट का बटन ऑन किया सामने शीशे पर उसकी लिपस्टिक से लिखा था- 'थैंक यू फॉर बैंगन और उफ्फ यह तेरी बड़ी सी बिंदी! सो जाऊं तो जगाना मत।'

अब तो निम्मी का गुस्सा काफूर और हंसी आ गयी उसको यह क्या है। मेरी नयी लिपस्टिक खराब कर दी और जगाना मत से क्या मतलब !!! पर बिंदी अरे हाँ इसका मतलब उन्होंने नोटिस किया मेरी बिंदी को मन पुलकित हो उठा।

निम्मी समझ नही पा रही थी वोह गुस्सा करे या जाकर हमेशा की तरह जगा दे सुनील को। 'नहीं! आज तो मैं नही जगाऊँगी' सोचकर निम्मी ने जोर से दरवाजा बंद किया और बिस्तर के दूसरे किनारे पर जाकर लेट गयी। कुछ पल बाद उसको मोगरे की भीनी भीनी खुशबू महसूस हुई। अरे नहीं यह मेरा वहम हैं सोचकर सोने की कोशिश करने लगी। कभी इस करवट कभी उस करवट पर मोगरे की खुशबू पूरे कमरे में फैल रही थी दरवाजे बंद होने के साथ। अब वोह जैसे निम्मी को अपने आलिंगन में लेने को आतुर थी। निम्मी ने झट से उठकर कमरे लाइट जला दी। सामने बिस्तर पर दोनों के तकियों के बीच में गजरा था उसके साथ एक लाल गुलाब और एक खत।

निम्मी ने पहले गजरे को उठाकर एक गहरी साँस ली। मानो उसकी खुशबू से अपने तन और मन को सुवासित कर लिया। मन के सारे कडवे कलुषित भाव मानो उड़ गये हो और एक प्रेम भावना ने उसको चारों तरफ से समेट लिया। और खत यह क्या है? खत को खोलते ही उसने देखा कि उत्तराखंड के एक पहाड़ी शहर में एक महीने रहने का मौका। निम्मी खत को पढ़ रही थी आँखों में खुशी के आंसू बह रहे थे। कितना मन था उसका कि शादी के बाद किसी पहाड़ी शहर में हनी मून पर जायेंगे पर तब आर्थिक हालत ऐसे न थे और अब उसको लगा कि सुनील पर बिला वजह गुस्सा करती आई थी वोह।

पर इतने पैसे कहां से आये? नहीं मना कर देगी वोह। सिर्फ मेरी खुशी के लिय इतने पैसे खराब करना सही नहीं है। बच्चों के लिए इस वक्त पैसे की जरुरत है। न अचानक उसको अपने चारों तरफ मजबूत बाँहों का घेरा कसते हुए महसूस हुआ 'तो आप सोये नही थे जनाब?' मुस्कराते हुए निम्मी ने कहा

'जी नहीं जब तक मेरी निम्मी न आ जाये, मैं आज तलक सोया हूँ। अब खुश हो न मैंने बच्चों को गांव भेजने का कार्यक्रम इसीलिए बनाया हैं ताकि तुम मेरे साथ अच्छे और बेफिक्र मन से आ सको। माँ को फोन करके सब पहले से बता दिया था उनका ही सुझाव था बच्चों के संग गांव चले जाने का और हाँ हमारा ज्यादा खर्च नहीं होगा क्योंकि कंपनी भेज रही है मुझे अपने काम से।

निम्मी की आँखे खुशी से छलछला उठीं। उसने झट से खुद को छुपा लिया सुनील की बाहों में और उसकी आँखें सपने देखने लगीं पहाड़ी मॉल रोड पर हाथ में हाथ लिये सुनील के साथ घूमने के।

छोटी-छोटी खुशियाँ झोली में समेट लेने को आतुर एक स्त्री का मन कितना कोमल होता है। इन्द्र धनुषी रंगों से सरोबार। कोई भी स्त्री ऐसी खुशियाँ नही मांगती जिनको देना संभव नहीं होता उसके पति के लिए और कोई भी पति अपनी पत्नी की छोटी-छोटी खुशियों को देकर जब चमकते हुए जुगनू उसकी आँखों में देखता हैं तो प्रफुल्लित हो उठता है। साकार लगता है उसको अपना वृक्ष होना जिस पर लता सी लिपटी रहती है उसकी लाइफ लाइन। निम्मी का दिल जोरों से धड़कने लगा और सुनील की बाहों के कसते घेरे संग प्रफुल्लित हो उठा उसके मन का हर कोना।

(समाप्त)

(पृष्ठ ११ का शेष)

कहानी सोनम की

रामआसरे ने अनभिज्ञता जाहिर की और हाथ जोड़ के गिड़गिड़ाने लगा। पर तब तक लोगो में बात फैल गई थी की रामआसरे ने कुरान का अपमान किया है। वे गुस्से में लाठी डंडों और धारदार हथियारों से लैस हो रामआसरे के घर की तरफ बढ़ने लगे। कुछ ही क्षणों में हुजूम का हुजूम इकठ्ठा हो चुका था, सब गुस्से में थे। अचानक मौलवी ने चीख कर कहा- 'मारो इसे, इसने पाक कुरआन की बेअदबी की है।'

बस फिर क्या था, सब रामआसरे पर टूट पड़े। कुछ लोग घर में घुस गए। उन्होंने बच्चों और बाकी सभी घर के लोगों को मारना-पीटना शुरू कर दिया। चारों तरफ चीख पुकार मच गई। लोगों की भीड़ ने ८० साल की रामआसरे की माँ को भी नहीं छोड़ा और उसके सर में लाठी मार दी कुछ देर तड़पने के बाद उसने दम तोड़ दिया। भीड़ में से एक दाढ़ी वाला आदमी निकला और उसने सोनम को उठा लिया और बाहर आ गया। सोनम रोती और चीखती रही पर किसी ने भी उसको नहीं बचाया। वह आदमी सोनम को उठाये भीड़ में गायब हो गया। मारने पीटने के बाद घर को आग लगा दी गयी।

इधर रामआसरे भी पिटाई के बाद अधिक खून बहने के कारण मर चुका था, पर अंधी भीड़ अब भी उस पर लात घूसे बरसा रही थी। प्यारे लाल का परिवार पहले ही घर छोड़ के भाग चुका था। कुछ दिन बाद रामआसरे के खेतों पर बुन्दू खान का कब्जा हो चुका था, सोनम मौलवी के पास पहुंचा दी गई थी और जावेद अली रामआसरे के बचे हुए घर पर अपना कब्जा जमा चुका था। ■

लघुकथा

नीच

माता पिता के साथ जा रही एक छह सात वर्ष की लड़की का अचानक पांव फिसला और गहरी खाई में जा गिरी। खून में लथपथ बेटी को उन्होने बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला और निकट ही एक घर पर ले गए। घायलावस्था में अचेत लड़की को वहां कुछ लोगों ने प्राथमिक उपचार दिया और उसे होश में ले आए। लड़की ने पीने के लिए पानी मांगा तो पिता ने यह कहते हुए मना कर दिया, 'ये लोग दलित जाति से संबंध रखते हैं और हम अपनी बेटी को नीच के हाथ का पानी नहीं पिला सकते।'

प्यासातुर घायल पुत्री को देख मां के भीतर का इन्सान जाग उठा और उसने पानी मंगवाकर पुत्री को पिलाते हुए पति से कहा, 'ये लोग समाज में भले ही दलित कहे जाते हों लेकिन नीच नहीं है, वास्तव में नीच तो आप हैं। प्यास से तड़पती अपनी बेटी से जो पानी छीन ले उससे बड़ा नीच भला कौन हो सकता है।'

-- अनन्त आलोक

सम्भलना है तुझे ज्यादा ये हिंदुस्तान है प्यारे
बहुत सस्ता यहां बिकने लगा ईमान है प्यारे
वतन मजहब वफादारी की उम्मीदे हैं नाजायज
चन्द टुकड़ों पे है पलता वहाँ अरमान है प्यारे
जहाँ बस्ती हो चोरों की वहीं गन्दा लहू होगा
रहा तू मुल्क से कैसे यहां अनजान है प्यारे
हुए जयचन्द है जिन्दा तेरे कुनबे की महफिल में
तरक्की तोड़ कर लिखते नया उनवान है प्यारे
तुम्हारी हर बुलंदी से निकल जाता है दम उनका
तुम्हारे नाम से क्यों आ रहा तूफान है प्यारे
बहुत मायूस है वो पाक का नापाक मंसूबा ि
सयासतदां लगे बनने वहां मेहमान है प्यारे है
जाहिल जंगली को सिर्फ जंगलराज से मतलब
देखता कौन अब तेरा
कहाँ एहसान है प्यारे
न ठग बन्धन कोई लूटे
बचाना फर्ज है तेरा
तुम्हारी जुस्तजू से बन
रही हर शान है प्यारे

-- नवीन मणि त्रिपाठी

जियो गुमनाम तुम जग में इजाजत दे नहीं सकती
विनय श्रृंगार है तेरा अदावत दे नहीं सकती
चलोगे साथ सच के जब जमाना साथ देता है
कपट ओ छल न करना तुम इजाजत दे नहीं सकती
कलम जब भी उठाना देश का अभिमान लिख देना
न बनना तुम कभी चारण इजाजत दे नहीं सकती
जो पल- पल मर रहा तन्हा सहारा तुम बनो उसका
कभी शोषण न करना तुम इजाजत दे नहीं सकती
खिलाफत की वजह हो तो शराफत छोड़ देना तुम
मरासिम खूब करना तुम
नदामत दे नहीं सकती
अकड़कर क्या मिलेगा जी
अदावत तोड़ देती है
मुहब्बत से जो मिलता है
सियासत दे नहीं सकती

-- छाया शुक्ला 'छाया'

अँधेरे जहां के भगाओ जरा
दीया प्यार का तुम जलाओ जरा
दवा जान के खा गए हम जहर
जो अब रूठी साँसें मनाओ जरा
नहीं जी सके भूल कर हम कभी
कहा हमने कब है बताओ जरा
लहू पी रही आज इंसान का
ये दीवार अब तो ढहाओ जरा
रहा है कहाँ धर्म ईमां यहाँ
जहां खूबसूरत सजाओ जरा
चमन को उजाड़े क्यों है ये हवा
सुधारो इसे अब हटाओ जरा
चरागों से लौ जा रही ए हवा
बढ़ा हाथ तुम रोक आओ जरा

-- अनिता मण्डा

आप चादर ओढ़ कर क्यों फिर रहे अभिमान की
बोझ सी है जिंदगी कीमत नहीं है जान की
राह पर सच की चला जो दूर सबसे हो गया
महफिलों में भीड़ कितनी आज बेईमान की
आज लाखों ऐब दिखते हैं मेरे किरदार में
लाज तो रख लीजिये मेरे किये अहसान की
मौन होकर देखता है सच भरे बाजार में
बात क्यों सब मान लेते हैं भला शैतान की
आज अपने देश में ही नारियाँ डर के जिएँ
नोचती है गिद्ध नजरें
हर तरफ हैवान की
'धर्म' तुम आकर जरा
घूमो हमारे गाँव में
बन्दगी होती यहाँ है
रात दिन महमान की

-- धर्म पाण्डेय

किसी की याद में अक्सर तड़पना ठीक लगता है
कोई जब दूर जाये तो तरसना ठीक लगता है
परिन्दों को कफस की तीलियों से दूर ही रखना
खुले आकाश में इनका चहकना ठीक लगता है
तुम्हें ये चाँद सूरज और तारे सब मुबारक हों
मुझे खुद नूर से मेरे दमकना ठीक लगता है
ये शामे-गम ये तन्हाई मेरे अन्दर का सूनापन
कभी जब जाम खाली हो मचलना ठीक लगता है
कभी खुद को यूँ तुमसा बना ही लेंगे हम
हमें तेरी ही फितरत में ढलना ठीक लगता है
वो सूरज गर महरबां है उसे महरबां रहने दो
मुझे किरणों की झालर बन
चमकना ठीक लगता है
ये मिट्टी सा बदन मधुर
तेरी बारिश में बिखरा है
मुझे मेरा तुझ ही में यूँ
पिघलना ठीक लगता है

-- मधुर परिहार

गरीबों को फकत, उपदेश की घुट्टी पिलाते हो
बड़े आराम से तुम, चैन की बंसी बजाते हो
है मुश्किल दौर, सूखी रोटियां भी दूर हैं हमसे
मजे से तुम कभी काजू, कभी किशमिश चबाते हो
नजर आती नहीं, मुफलिस की आँखों में तो खुशहाली
कहाँ तुम रात-दिन, झूठे उन्हें सपने दिखाते हो
अँधेरा करके बैठे हो, हमारी जिन्दगानी में
मगर अपनी हथेली पर,
नया सूरज उगाते हो
व्यवस्था कष्टकारी क्यों
न हो, किरदार ऐसा है
ये जनता जानती है सब,
कहाँ तुम सर झुकाते हो

-- महावीर उत्तरांचली

गुनगुनाते हुए आंचल की हवा दे मुझको
उंगलियां फेर के बालों में, सुला दे मुझको
हर एक पल तू मेरे सामने ही रहता है
वफा की राह में चाहे तो भुला दे मुझको
सिलसिला दर्द का दिल में न ये थमने पाये
मेरी रुसवाई का कुछ और सिला दे मुझको
रात भर ख्वाब में आकर मुझे सताता है
भूल जाऊँ तुझे कुछ ऐसी दवा दे मुझको
राहे-उल्फत में तेरा साथ नहीं छोडूँगा
जहाँ बेदर्द ये, जो चाहे सजा दे मुझको
कोई गुनाह-खता, सरकशी न हो मुझसे
प्यार की महक बिखेरूँ, ये दुआ दे मुझको
खार में रह के भी फूलों की तरह मुस्काऊँ
ऐ खुदा हुस्न की कुछ
ऐसी अदा दे मुझको
भूल पायेगा नहीं 'भान'
हसीं लम्हों को
आके उन वादियों में,
फिर से सदा दे मुझको

-- उदय भान पाण्डेय 'भान'

वफा के मंजर यूँ बदले कि वो तस्वीरे-जानां हो गए
बेखुदी में रफ्ता-रफ्ता हम खुद ही निशाना हो गए
मासूम से दिल ने मेरे सजदा किया कुछ इस तरह
चाक दामन कर दिया खुद से बेगाना हो गए
बेवफा ने वफा का सौदा किया कुछ इस तरह
अश्क मोती हो गए हम गम का खजाना हो गए
न जाने कौन सा जादू था उसकी हर एक बात में
नशा सा चढ़ता रहा हम
मौसम सुहाना हो गए
पाक मुहब्बत है बस एक
उसी परवरदिगार की
रंज ओ गम सब भूल के
हम तो दीवाना हो गए

-- अंशु प्रधान

आइने में खरोचें न दो इस कदर
खुद को अपना कयाफा न आये नजर
रेत पर मत किसी की वफा को लिखो
आसमां तक कहीं उड़ न जाये खबर
तुम अभी तक वहीं के वहीं हो खड़े
झील तक आ गया जलजले का असर
रात कितनी ही लंबी भले क्यों न हो
देखना रात के बाद होगी सहर
शख्सियत का मिटाने चले हो निशां
ढूंढ़ते हो मगर आदमी की मुहर
फूल तोड़े गये टहनियां चुप रहीं
पेड़ काटा गया बस इसी बात पर

-- डॉ डी. एम. मिश्र

कभी है गम, कभी थोड़ी खुशी है
इसी का नाम ही तो जिन्दगी है
हमें सौगात चाहत की मिली है
ये पलकों पे जो थोड़ी-सी नमी है

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रश्न

किरण सिंह

गांव वाले चाचा की बेटी का निमंत्रण कार्ड जैसे ही आया मैं तो उछल पड़ी। मन ही मन स्वप्न बुनने लगी कि चलो अब सभी गांव की पुरानी सहेलियों से मिलूंगी कितने बदल गए होंगे सब। कहां जा पाती थी गांव में शादी के बाद। पापा शहर में रहते थे कभी कभार घंटे दो घंटे के लिए ही जाना हो पाता था। पापा कहते थे बीमार हो जाओगी। तुम्हारे बच्चे नहीं झेल पाएंगे गांव की गर्मी आदि आदि, पर अब खुश थी!

शादी में जाने की तैयारियां करने लगी। कौन से रंग की साड़ी पहनूंगी। उस पर मैचिंग चूड़ियाँ और लिपस्टिक। लिपस्टिक से याद आया जब मैं गाँव गई थी और अपने होठों पर काफी कलर की लिपस्टिक लगाई थी। तब चाची बड़े प्रेम से मेरे बगल में बैठते हुए कुछ चिंतित होते हुए पूछी थीं- 'रीना तोहार ओठवा करिया कइसे हो गइल बा? (रीना तुम्हारा ओठ काला कैसे हो गया है?) मैंने कहा चाची मेरा होठ काला नहीं हुआ। ये लिपस्टिक का रंग आजकल के फैशन में है। फिर चाची ने कहा था कि रीना बाकिर इ तोहार लिपिस्टिक के रंग शोभत नइखे लिपिस्टिक लगा के करीया ओठ के लाल कइल जाला कि लाल ओठ के करिया कइल जाला। (ये तुम्हारा लिपस्टिक का रंग सुन्दर नहीं लग रहा है लिपस्टिक लगाकर काले ओठ को लाल किया जाता है या लाल होठ को काला।) उसके बाद 'और इ का उदास रंग के साड़ी पहिर ली। सुहागिन के लाल पीला पहिरे के चाहीं!' इसलिए मैंने खूब चटक रंग की साड़ी, लाल लिपस्टिक, लाल हरी मैचिंग चूड़ियाँ रख लीं और फिर विवाह में जाने के लिए दिन गिनने लगी।

फिर समाप्त हुई प्रतीक्षा की घड़ी। गांव पहुंचते ही भव्य स्वागत। कुछ देर के लिए तो मैं खुद को राजकुमारी महसूस करने लगी थी! फिर चाची मेरा नजर उतारते हुए सबको सुनाते हुए कहने लगीं- 'देखो तो रीना को (मेरे घर का नाम रीना) एतना दिन राजधानी में रहे के बादो बदली नहीं। अउर इहाँ देखो इ सबको दू दिन शहर का गईं लगीं चिरइया कट बार कटा के अंग्रेजी छांटे.!' फिर सबसे बातें करते करते कब शाम हो गई पता ही नहीं चला और शुरू हो गया गाना बजाना ढोलक पर 'बन्नी अपनी सुहाग मांगे डिबिए में!'

तभी मेरी नजर मीना भाभी पर पड़ी जो कि हल्के वस्त्रों में लिपटी होठों पर कृत्रिम मुस्कान बिखेरते हुए पूरे वातावरण को संगीतमय कर रही थीं! अभी पिछले वर्ष ही तो भैया उन्हें श्वेत वस्त्रों का उपहार देकर सदा के लिए चले गए थे, अपने इस सुंदर संसार को छोड़कर! बेचारी मीना भाभी को कितना प्रेम था रंगों से भर भर मांग सिंदूर कलाइयों में अठखेलियाँ करती सुन्दर सुन्दर रंग बिरंगी चूड़ियाँ माथे की बिंदिया सब छीन ली गई थी मीना भाभी से। नियति ने तो उनके साथ क्रूर खेल खेला ही था पर अपने भी कहां कम थे। कुरीतियों और कुप्रथाओं की जंजीरों में जकड़कर छीन लिए थे मीना भाभी के सौन्दर्य प्रसाधन!

फिर भी मीना भाभी अपने होठों पर मुस्कान बिखेरते हुए मुझे भी खींच ले गईं नाचने के लिए। खूब नाची गाईं। इधर कुछ रिश्तेदारी की औरतें आपस में खुसुर-फुसुर कर रहीं थीं। मैं उनका आशय समझ गई थी। शायद वे एक विधवा के चेहरे पर खुशी की एक झलक बर्दाश्त नहीं कर पा रही थीं। या उनकी नजरों में विधवा का खुश रहना गुनाह था शायद! मीना भाभी इन सब बातों से बेखबर नाच गाने के बीच में उठ-उठकर अपना काम भी निपटा आती थी और फिर आकर ढोलकी के थाप के साथ वातावरण में अपना मधुर संगीत घोल रहीं थीं!

दूसरे दिन हल्दी मटकोड़ की रस्म थी। मीना भाभी पूरी तैयारी कर रही थीं। उसके बाद कोहबर लिखना था जिसमें दीवार पर दूल्हा दुल्हन का नाम लिखकर फूल पत्तियों आदि से चित्रांकन किया जाता है जिसमें मीना भाभी पारंगत थीं। सबका कोहबर वही लिखती थीं। बेचारी सुबह से ही लिखने के लिए घोल तैयार कर रही थी। मुझे कई तरह के डिजाइन दिखा रही थी। पूछ रही थी कौन सा बढ़िया रहेगा!

जैसे ही भाभी कोहबर लिखने के लिए जाने लगीं तो चाची की आवाज आयी- 'रुको। तुम्हें यह नहीं पता कि हल्दी और कोहबर की रस्में सिर्फ सुहागिनें ही करती हैं?' उसके बाद तो मीना भाभी के हांथों से हल्दी और रंगों के थाल छलक गए सारे रोके हुए अश्रु बांध तोड़ कर बहने लगे. तमाशा न बन जाए इसलिए शायद वे अपने कमरे में चली गईं! पर उनपर ध्यान कौन देता। शुभ मुहूर्त निकल न जाए इसलिए सभी लोग हल्दी कोहबर आदि रस्मों में व्यस्त हो गए!

पर मेरा मन उन रस्मों में नहीं लगा और मैं मीना भाभी के कक्ष में चली गई। काफी मान मनुहार करने के बाद वे फफक-फफककर रोने लगी कहने लगीं। नाचने गाने में मेरा भी जी नहीं लग रहा था, पर ननद की शादी की खुशी में मैं अपने गम को शामिल नहीं करना चाहती थी और फिर रो-रोकर कहने लगीं कि 'आप ही बताइए कि मेरे पति तो बाद में थे, पहले अम्मा जी के बेटे थे फिर उनके शरीर पर उनका भूत नहीं सवार हुआ और मुझपर उनका भूत सवार हो गया जो मैं शुभ कार्यों में शामिल नहीं हो सकती?'

और मैं निरुत्तर क्या उत्तर देती. मेरा भी मन तो यही प्रश्न कर रहा था कि क्यों इन कुरीतियों के सर्प दंश को सिर्फ पत्नियों को ही झेलना पड़ता है? ■

मंदिर वाली माताजी

प्रीति दक्ष

मेरी कामवाली ने आ कर बताया कि 'दीदी आपकी मंदिर वाली माता जी मर गयीं।' परसों ही तो उन्हें देखा था काफी बीमार लग रही थीं। उनका पोता उन्हें डाक्टर पर ले जा रहा था। एक बार को मन किया कि गाड़ी रोक कर माता जी से बात करूँ पर पोता साथ था इसलिए रह गयी। बात कर लेती तो शायद अच्छा होता! सुनकर लगा कि अफसोस करूँ या खुश होऊं ?

'मंदिर वाली माता जी' ये नाम मैंने ही दिया था उन्हें। पांच सालों से उन्हें सावन के चालीस दिन रोज मिलती थी। मंदिर में रोज दिया जलाने जाऊं तो शाम को वो मेरा इंतजार करती मिलती थीं। पांच सालों में उन्हें एक जैसा ही पाया मैंने, उम्र ८० साल, पतली दुबली, थोड़ी झुकी हुईं, शांत और हमेशा पेट की बीमारी से ग्रसित।

एक अंजाना सा रिश्ता था उनसे। मुझे देखते ही मेरे पास आ जातीं, ढेरों आशीर्वाद देती, फिर इधर-उधर देखती अपने मन की तकलीफ बताती- 'आज बहू ने खूब खाना बनाया, जो बचा वो फैंक दिया, पर मुझे रोटी नहीं दी। मैंने खुद अपने लिए रोटी बनाई।' कभी कहती- 'कई दिनों से मेरे दांत दर्द है रोटी नहीं खायी जाती पर दूध नहीं देती बहू।' याद है मुझे अगले दिन मैं उनके लिए बिना अंडे का केक बनाकर ले गयी थी पर उस दिन वो नहीं आई थीं। दुःख हुआ मुझे, पर जाते वक्त मंदिर के गेट पर मिल गयीं। मैंने उन्हें केक दिया तो उनकी आँखों में आंसू आ गए। अगले दिन कह रही थी ५ दिन बाद पेट भरा कल मेरा।

ऐसा नहीं था कि वो गरीब थीं, ५०० गज की कोठी उनके नाम थी। ना वो विधवा थीं, बनियों की बेटी, खाते-पीते घर की बहू, ४ भाइयों की एकलौती बहन पर कोठी उनके नाम होना उनके लिए जी का जंजाल बन गया। बेटे बहू चाहते कि बुढ़िया मर जाए, पर वो सख्त जान जिए जा रही थीं। सबसे ऊपर की मंजिल पर कमरे में पंखा नहीं चलने देते थे कि बिजली का बिल आएगा , सर्दी में नहाने को गर्म पानी नहीं देते, पेट की तकलीफ से जब दस्त लग जाते तो वो हर बार ठन्डे पानी से नहाती फिर छाती जुड़ जाती तो खांसी बैठ जाती।

मंदिर में बिताये वो १५ -२० मिनट हम दोनों को ही खूब भाते थे, कई बार ये सुनकर मेरा खून खौल जाता था डांटती भी थी मैं उनको कि क्यों सहती हो आप ये सब क्यों नहीं सबको ठीक कर देती? पर वो डरती थीं। जिस दिन मैं लेट होती तो अगले दिन पंडित जी कहते मेरा इंतजार किया उन्होंने।

सावन के आखरी दिन हम दोनों ऐसी हो जाती कि जैसे कितनी पुरानी सहेली जुदा हो रही हो। चालीस दिन का साथ जो छूट रहा होता था। एक दूसरे से वादा करते कि बीच बीच में मिलते रहेंगे मंदिर में। और फिर

(शेष पृष्ठ १७ पर)

कहानी

दो रुपये का नोट

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

यह शायद १९५८ की बात होगी जब हम चार दोस्त शहर के एक हाई स्कूल में पड़ते थे। हम गाँव के ही रहने वाले थे लेकिन सालाना परीक्षा से कुछ देर पहले हम शहर में ही एक कमरा किराए पर ले लेते थे। यूं तो हम रोजाना प्रभात होटल पर ही खाना खाया करते थे लेकिन कभी कभी पहलवान के ढाबे पर भी चले जाते थे। पहलवान के ढाबे पर एक दस-बारह वर्ष का छोटा सा लंगड़ा लड़का काम किया करता था, जो लाठी के सहारे चलता था। बेशक वोह लंगड़ा था लेकिन उसका मुस्कराता चेहरा हर किसी का मन मोह लेता था। लड़के का नाम था खराएती। इस लड़के के साथ हमारा बहुत लगाव सा हो गया था। एक रविवार को हम चारों दोस्त इस पहलवान के ढाबे पर चले गए। पहलवान बाहर कुर्सी पर बैठा था। एक टेबल पर हम चारों दोस्त बैठ गए। खराएती आर्डर लेने के लिए आया और हम ने उसे आर्डर देना शुरू किया और उस के साथ बातें भी करते रहे।

दस पंद्रह मिनट बाद जब खराएती खाना ले कर आ रहा था तो उसका पैर फिसल गिया। खाना तो बिखरा ही, एक प्लेट भी टूट गई। पहलवान भागा आया और खराएती को इतनी जोर से चांटा मारा कि लड़के की आँखों से आंसू बहने लगे। पहलवान बड़बड़ाया, 'साले ने दो रुपये का नुक्सान कर दिया।' हम चारों दोस्त पहलवान की तरफ आये और उससे कहा कि खराएती ने जान बूझकर नहीं किया था, उसका पैर फिसल गिया था। हमारा दोस्त बहादर शुरू से ही बहुत भावुक विचारों का रहा है। उस ने दो रुपये का नोट जेब से निकाला और पहलवान को देने लगा, लेकिन पहलवान ने इंकार कर दिया और पैसे नहीं लिए।

खाना खाकर जब हम ढाबे से बाहिर आये तो बहादर कुछ चुप-चुप सा था, उसके दिल में तो खराएती ही था। कुछ दूर जाकर बहादर बोला, 'यार! यह पहलवान बिचारे गरीब खराएती को यूं छोड़ेगा नहीं और उस की तनख्वाह से दो रुपये जरूर काट लेगा। बहादर ने जेब से दो रुपये का नोट निकाला और वापस जाकर वोह नोट चुपके से खराएती की जेब में डाल दिया।

कुछ सालों बाद हमारे दो दोस्त तो एक पोस्ट ऑफिस में क्लर्क लग गए और मैं और बहादर इंगलैंड आ गए। हमारी शादियां हुईं, बच्चे हुए और बच्चे भी बड़े हो गए। साल दो साल बाद हम इंडिया जाते रहते और कुछ देर बाद वापस चले आते। लेकिन कभी भी किसी का पहलवान के ढाबे पर जाने का इतफाक नहीं हुआ। कुछ वर्ष पहले बहादर और उसकी अर्धांग्नी कमल इंडिया आये और कुछ देर रहकर वापस आ गए। फिर एक दिन दोनों पति-पत्नी हमें मिलने के लिए हमारे घर आये। बातें करते करते बहादर बोला, 'यार गुरमेल! इस दफा इंडिया में एक बहुत ही अजीब बात हुई'।

मैंने पुछा, 'वोह क्या?'

बहादर बोला, 'याद है, बहुत दिन पहले जब हम पहलवान के ढाबे पर खाना खाने जाते थे, तो उस लड़के खराएती से प्लेट टूट गई थी और मैंने उसे दो रुपये दिए थे?' 'हाँ हाँ मुझे याद है' मैंने कहा।

बहादर बोला, 'इस दफा जब हम शहर में शॉपिंग कर रहे थे तो अचानक मुझे खराएती की याद आ गई। सोचा, कैसा होगा खराएती, वहां होगा भी या नहीं। देखने के लिए हम उधर चल पड़े, लेकिन जब हम वहां पुहंचे तो देखा कि वहां तो एक शानदार रैस्टोरैंट बना हुआ था और लोग अंदर जा आ रहे थे। एक हसरत भरी निगाह से मैंने रैस्टोरैंट की तरफ देखा और हम आगे चल पड़े। कुछ दूर ही गए थे कि एक शानदार पगड़ी और लंबी दाढ़ी में एक सरदार जी हमारी तरफ भागे आ रहे थे, जो लाठी के सहारे चल रहे थे।

मैंने हैरानी से उस की ओर देखा। सरदार जी बोले, 'सरदार जी ! मैं खराएती हूँ, याद है आप ढाबे पर खाना खाने आया करते थे, उसी जगह ही अब यह मेरा रैस्टोरैंट है'। जिद करके सरदार जी हमें रैस्टोरैंट के अंदर ले गए। काफी बड़ा और शानदार रैस्टोरैंट बना हुआ था। एक तरफ ऑफिस में बैठकर सरदार जी ने सारी कहानी सुनाई कि 'उस घटना के बाद पहलवान जी एकदम बदल गए थे और क्योंकि उनका कोई और नहीं था, तो पहलवान जी ने मुझे अपना बेटा बना लिया था। पहलवान जी को स्वर्गवास हुए पांच साल हो गए हैं लेकिन जाने से पहले वोह इस रैस्टोरैंट को मेरे नाम कर गए थे'।

फिर सरदार जी एक फोटो में जड़े हुए दो रुपयं के नोट की तरफ इशारा करके कहने लगे, 'आप का दिया हुआ दो रूपए का नोट वोह ही है जो उस दिन आपने मुझे दिया था और यह नोट मेरे लिए वरदान बनकर आया था इसी लिए मैंने इसे फोटो फ्रेम करवा लिया, जब भी इस फ्रेम को देखता हूँ, आपकी याद आ जाती है।'

बहादुर से यह कहानी सुन कर मैं भी हैरान हो गया और मन ही मन में खराएती को मिलने के लिए उत्सुक हो गया। ■

लम्बी कहानी (पहली किस्त)

रक्तदान

कादम्बरी मेहरा, लंदन

यह मेरी पहली नौकरी है। नौकरी के साथ साथ ६ महीने की इंटर्नशिप करनी है। मेरे साथ दस बारह लडकियां और भी हैं। सब अलग अलग शहरों में स्नातक की डिग्री करके आई हैं। हमारी शिक्षिका हैं डा। शारदा करकरे। वरिष्ठ एवं तेजस्वी। ऊंचा कद, गंभीर आवाज और निर्मल व्यवहार। कुछ भी हो जाए माथे पर शिकन नहीं। चट्टान की तरह अडिग व्यक्तित्व। काम ज्यादा बात कम। हम सभी उन्हें शारदा मैम पुकारते हैं। कुछ नियम हैं इस विभाग के जो सबके लिए सामान्य हैं। निर्धन हो या धनवान सबको मानने ही पड़ते हैं।

शारदा मैम्म अपने सिद्धांतों पर अडिग रहती हैं। ऐसा ही एक नियम है रक्तदान के सम्बन्ध में - जो भी मरीज अस्पताल से रक्त लेगा उसे उसकी भरपाई रक्त से ही करनी होगी। उसका कोई रिश्तेदार उसी मात्रा में अपना खून दे वापिस अस्पताल के कोष को। इस प्रकार अस्पताल का रक्तकोष कभी खाली नहीं होता। शारदा मैम की दलील है कि रक्त बेचा नहीं जाएगा। जो लोग पैसे से रक्त खरीदकर मरीज को बचाना चाहते हैं वे बाहर से रक्त खरीदें। वर्षों से यही व्यवस्था चली आ रही है। शारदा मैम के रहते विभाग का रक्तकोष सदासुचारू रूप से भरा रहता है। पट्टियों, रूई, सफाई के उपकरण आदि पर भी यही नियम लागू होता है मगर इन चीजों के बगैर चल जाता है। पैसा वसूल करके सामान बाहर से खरीदा जा सकता है। मगर रक्त जैसी वस्तु किसी केमिस्ट से तो मिलेगी नहीं।

विभाग में पैर रखते ही इन नियमों का खुलासा कर दिया गया। हम नई डाक्टरनियों को विशेष रूप से आगाह कर दिया गया। मैम की डांट से सब घबराते थे मगर उनकी बात बेहद पते ठिकाने की होती थी। मेरी नजरों में उनका रुतबा बहुत ऊंचा था।

मेरे पहले तीन केस कुछ ठीक नहीं बैठे। मैं बेहद नर्वस हो जाती थी अतः शारदा मैम ने एक दिन मुझे बुलाकर अच्छी खासी झाड पिलाई। उनका कहना था कि आत्मविश्वास के बिना किसी का भी उपकार नहीं किया जा सकता। जब तक आप हरेक से प्रभावित होते रहेंगे अपने आपको कमतर समझते रहेंगे। पहले अपनी शक्तियों को गिनो गिनो और उनकी सारिणी बना लो। फिर उनको अपने कार्यक्षेत्र में इस्तेमाल करो। दूसरों की सफलताओं के बारे में सोचना छोड़ दो।

उस दिन से मैं बहुत सतर्क रहती हूँ। मेरी सतर्कता के साथ ही शारदा मैम की पैनी दृष्टि मुझपर कुछ और गड़ गयी है। खासकर जहां मरीजों के साथ पेश आने का सवाल हो। दरअसल नए नए डाक्टरों को किस तरह मरीज चला जाते हैं इसका अच्छा अनुभव था उनको। मेरी जुबान लड़खड़ा जाती थी। मेरी भावनाएं एकदम तरोताजा थीं। जीवन की भयावहता को इतने पास से देखने का अवसर पहली बार मिला था। इसलिए भी दिल

(शेष पृष्ठ २३ पर)

इतिहास से सबक सीखने वाला समझदार कहलाता है

डा. विवेक आर्य

सीरिया में संघर्ष के चलते लाखों लोग देश छोड़कर पलायन कर रहे हैं। यह जानना बेहद आवश्यक है की पलायन करने वाले और पलायन के लिए मजबूर करने वाले दोनों मुसलमान हैं। पलायनकर्ता लोग किसी भी मुस्लिम देश में न जाकर संपन्न यूरोप के देश जैसे जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि में बसने के लिए उन देशों की सीमाओं पर जमा हो गए हैं। विश्वभर के मानव अधिकार कार्यकर्ता इन शरणार्थियों को उन देशों में शरण देने का दबाव बना रहे हैं। इसके दूरगामी परिणाम पर किसी का ध्यान नहीं गया है।

२००५ में समाजशास्त्री डा. पीटर हैमंड ने गहरे शोध के बाद इस्लाम धर्म के मानने वालों की दुनियाभर में प्रवृत्ति पर एक पुस्तक लिखी, जिसका शीर्षक है 'स्लेवरी, टैररिज्म एंड इस्लाम-द हिस्टोरिकल रूट्स एंड कंटेम्परारी थ्रैट'। इसके साथ ही 'द हज' के लेखक लियोन यूरिस ने भी इस विषय पर अपनी पुस्तक में विस्तार से प्रकाश डाला है। जो तथ्य निकलकर आए हैं, वे न सिर्फ चौंकाने वाले हैं, बल्कि चिंताजनक हैं।

उपरोक्त शोध ग्रंथों के अनुसार जब तक मुसलमानों की जनसंख्या किसी देश-प्रदेश क्षेत्र में लगभग २ प्रतिशत के आसपास होती है, तब वे एकदम शांतिप्रिय, कानूनपसंद अल्पसंख्यक बनकर रहते हैं और किसी को विशेष शिकायत का मौका नहीं देते। जैसे अमरीका में वे (०.६ प्रतिशत) हैं, आस्ट्रेलिया में १.५, कनाडा में १.६, चीन में १.८, इटली में १.५ और नार्वे में मुसलमानों की संख्या १.८ प्रतिशत है। इसलिए यहां मुसलमानों से किसी को कोई परेशानी नहीं है।

जब मुसलमानों की जनसंख्या २ से ५ प्रतिशत के बीच तक पहुंच जाती है, तब वे अन्य धर्मावलंबियों में अपना धर्मप्रचार शुरू कर देते हैं। जैसा कि डेनमार्क, जर्मनी, ब्रिटेन, स्पेन और थाईलैंड में जहां क्रमशः २, ३.७, २.७, ४ और ४.६ प्रतिशत मुसलमान हैं। जब मुसलमानों की जनसंख्या किसी देश या क्षेत्र में ५ प्रतिशत से ऊपर हो जाती है, तब वे अपने अनुपात के हिसाब से अन्य धर्मावलंबियों पर दबाव बढ़ाने लगते हैं और अपना प्रभाव जमाने की कोशिश करने लगते हैं। उदाहरण के लिए वे सरकारों और शॉपिंग मॉल पर 'हलाल' का मांस रखने का दबाव बनाने लगते हैं, वे कहते हैं कि 'हलाल' का मांस न खाने से उनकी धार्मिक मान्यताएं प्रभावित होती हैं। इस कदम से कई पश्चिमी देशों में खाद्य वस्तुओं के बाजार में मुसलमानों की तगड़ी पैठ बन गई है। उन्होंने कई देशों के सुपरमार्कीट के मालिकों पर दबाव डालकर उनके यहां 'हलाल' का मांस रखने को बाध्य किया। दुकानदार भी धंधे को देखते हुए उनका कहा मान लेते हैं।

इस तरह अधिक जनसंख्या होने का फैक्टर यहां से मजबूत होना शुरू हो जाता है, जिन देशों में ऐसा हो चुका है, वे फ्रांस, फिलीपींस, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, नीदरलैंड, त्रिनिदाद और टोबैगो हैं। इन देशों में मुसलमानों की संख्या क्रमशः ५ से ८ फीसदी तक है। इस स्थिति में पहुंचकर मुसलमान उन देशों की सरकारों पर यह दबाव बनाने लगते हैं कि उन्हें उनके क्षेत्रों में शरीयत कानून (इस्लामिक कानून) के मुताबिक चलने दिया जाए। दरअसल, उनका अंतिम लक्ष्य तो यही है कि समूचा विश्व शरीयत कानून के हिसाब से चले।

जब मुस्लिम जनसंख्या किसी देश में १० प्रतिशत से अधिक हो जाती है, तब वे उस देश, प्रदेश, राज्य, क्षेत्र विशेष में कानून-व्यवस्था के लिए परेशानी पैदा करना शुरू कर देते हैं, शिकायतें करना शुरू कर देते हैं, उनकी 'आर्थिक परिस्थिति' का रोना लेकर बैठ जाते हैं, छोटी-छोटी बातों को सहिष्णुता से लेने की बजाय दंगे, तोड़-फोड़ आदि पर उतर आते हैं, चाहे वह फ्रांस के दंगे हों, डेनमार्क का कार्टून विवाद हो या फिर एम्सटर्डम में कारों का जलाना हो, हरेक विवाद को समझबूझ, बातचीत से खत्म करने की बजाय खामख्वाह और गहरा किया जाता है। ऐसा गुयाना (मुसलमान १० प्रतिशत), इसराईल (१६ प्रतिशत), केन्या (११ प्रतिशत), रूस (१५ प्रतिशत) में हो चुका है।

जब किसी क्षेत्र में मुसलमानों की संख्या २० प्रतिशत से ऊपर हो जाती है तब विभिन्न 'सैनिक शाखाएं' जेहाद के नारे लगाने लगती हैं, असहिष्णुता और धार्मिक हत्याओं का दौर शुरू हो जाता है, जैसा इथियोपिया (मुसलमान ३२.८ प्रतिशत) और भारत (मुसलमान २२ प्रतिशत) में अक्सर देखा जाता है। मुसलमानों की जनसंख्या के ४० प्रतिशत के स्तर से ऊपर पहुंच जाने पर बड़ी संख्या में सामूहिक हत्याएं, आतंकवादी कार्रवाइयां आदि चलने लगती हैं। जैसा बोस्निया (मुसलमान ४० प्रतिशत), चाड (मुसलमान ५४.२ प्रतिशत) और लेबनान (मुसलमान ५९ प्रतिशत) में देखा गया है। शोधकर्त्ता और लेखक डा. पीटर हैमंड बताते हैं कि जब किसी देश में मुसलमानों की जनसंख्या ६० प्रतिशत से ऊपर हो जाती है, तब अन्य धर्मावलंबियों का 'जातीय सफाया' शुरू किया जाता है (उदाहरण भारत का कश्मीर), जबरिया मुस्लिम बनाना, अन्य धर्मों के धार्मिक स्थल तोडना, जजिया जैसा कोई कर वसूलना आदि किया जाता है। जैसे अल्बानिया (७० प्रतिशत), कतर (७८ प्रतिशत) व सूडान (७५ प्रतिशत) में देखा गया है।

किसी देश में जब मुसलमान आबादी का ८० प्रतिशत हो जाते हैं, तो उस देश में सत्ता या शासन प्रायोजित जातीय सफाई की जाती है। अन्य धर्मों के अल्पसंख्यकों को उनके मूल नागरिक अधिकारों से भी वंचित कर दिया जाता है। सभी प्रकार के हथकंडे अपनाकर जनसंख्या को १०० प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा जाता है। जैसे बंगलादेश (८३ प्रतिशत), मिस्र (९० प्रतिशत), गाजापट्टी (९८ प्रतिशत), ईरान (९८ प्रतिशत), ईराक (९७ प्रतिशत), जोर्डन (९३ प्रतिशत), मोरक्को (९८ प्रतिशत), पाकिस्तान (९७ प्रतिशत), सीरिया (९० प्रतिशत) व संयुक्त अरब अमीरात (९६ प्रतिशत) में देखा जा रहा है।

यूरोप के अनेक देशों में प्रजनन दर संसार के सभी देशों में सबसे कम हैं। ऐसे में भारी संख्या में मुस्लिम शरणार्थी उन देशों में जाकर धर्म के आधार जनसंख्या के समीकरण को किस प्रकार से प्रभावित करेंगे इसका अनुमान लगाना सरल है। किसी भी मुस्लिम देश ने जिनकी सीमा तक सीरिया से लगती थी एक भी शरणार्थी को अपने यहाँ पर शरण क्यों नहीं दी? क्या इसे इस्लामिक साम्राज्यवाद का फैलाव करने की सोची समझी साजिश नहीं कहा जायेगा? मेरे विचार से इस समस्या का एक ही उचित समाधान है- ISIS का सफाया, जिससे किसी भी मुसलमान को शरणार्थी बनने की आवश्यकता ही नहीं होगी। अंत में एक सन्देश के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ- 'इतिहास से सबक सीखने वाला समझदार कहलाता है।' ■

(पृष्ठ १५ का शेष)

मंदिर वाली माताजी

अगले साल सावन तो आएगा ही तब तो मिलना रोज होगा ही।

कामवाली हर महीने उनकी कोई न कोई खबर सुना ही देती कि माता जी को उनके घर वालों ने पागल करार दे दिया है। मारते पीटते हैं। एक बार तो घर भी गयी थी उनके, पर उन्होंने मना कर दिया अगर कोई उनसे मिलने आये, तो उनके घर वाले घर से निकलना बंद कर देते हैं।

आज उनके जाने की खबर सुनकर दुःख हुआ कि अब सावन के वो चालीस दिन कौन मेरा मंदिर में इंतजार करेगा। पर सुकून मिला कि उन्हें अपनी तकलीफों से छुटकारा मिला। भगवान 'मंदिर वाली माताजी' की आत्मा को शांति दें। सखी तुम सदा याद आओगी। ■

लघुकथा

परछाई

छोटे से बच्चे को दीपक बेचते देख रमेश ठिठका। उसके रुकते ही पालथी के नीचे किताब दबा बच्चा बोला, 'अंकल कित्ते दे दूँ?'

'दीपक तो बड़े सुन्दर हैं, बिल्कुल तुम्हारी तरह। सारे ले लूँ तो?'

'सारे? लोग तो महंगा कह सामने वाली दुकान से इतनी महंगी बिजली वाली लाईट खरीद रहें।'

उसकी बात सुन अतीत सामने पा रमेश मुस्करा पड़ा। 'बेटा सारे के सारे दीपक गाड़ी में रख दोगे?'

'क्यों नहीं अंकल!' मन में लड्डू फूट पड़ा। सीधे हजार की नोट पा सोचा आज दादी खुश हो जाएँगी।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

मोदी का दीवाना हुआ लंदन

जवाहर लाल सिंह

आज पूरे विश्व में मूल रूप से दो समस्याएं हैं- एक आतंकवाद और दूसरा ग्लोबल वार्मिंग. आतंकवाद से पूरा विश्व किसी न किसी रूप में ग्रसित है. इसका सबसे ताजा उदाहरण फ्रांस ही है. जिसमे सैंकड़ो लोग मारे गए हैं और हजारों प्रभावित हुए हैं. इसके पहले भी जनवरी में फ्रांस के एक प्रेस 'शार्ली हेब्दो' के मुख्यालय पर हुआ था जहाँ ११ लोग मारे गए थे. ग्लोबल वार्मिंग भी आने वाले समय में पूरे विश्व को तकलीफ देनेवाले हैं. इन दोनों विषयों पर पूरे विश्व को चिंतन कर इसके स्थायी हल की तरफ कार्य करने की जरूरत है.

जिस तरह से प्रधान मंत्री मोदी का स्वागत लंदन के वेम्बली स्टेडियम में हुआ, जिस तरह से वहां रहनेवाले भारतीयों ने प्रधान मंत्री का शानदार स्वागत किया, यह भारत के लिए गर्व की बात तो है ही. प्रधानमंत्री ऐसे मौकों पर अपने आप को बेहतरीन ढंग से पेश करने में हर संभव कोशिश करते हैं, जैसे ग्लोबल वार्मिंग से मुक्ति के लिए दुनिया के १०२ देशों को आह्वान किया कि वे सूर्यपुत्र हैं और वहां सूर्य की रोशनी भरपूर रहती है तो क्यों नहीं सौर ऊर्जा को इन देशों में बढ़ावा दिया जाय इससे गैरपारंपरिक बिजली तो मिलेगी ही, कोयले, पानी आदि प्राकृतिक संसाधनों की बचत भी होगी और ग्रीन हाउस गैसों का उत्पादन भी कम होगा. बिजली की बचत भी जरूरी है, साथ ही जरूरी है भारत के उन १८ हजार गांवों में बिजली पहुँचाना, जो अभी भी बिजली के पहुँच से दूर हैं.

प्रधान मंत्री ने अपने भाषण में अलवर, राजस्थान के इमरान खान की भी चर्चा की जिसने मोबाइल में में ५० फ्री एजुकेशनल एप्प बनाये हैं. वेम्बली में लगभग ६०० भारतीय कलाकारों ने अपने हुनर का प्रदर्शन किया जिससे विदेशों में हमारा सर ऊंचा हुआ. वहीं से उन्होंने अहमदाबाद से लंदन के लिए डायरेक्ट फ्लाइट की भी घोषणा की, जिससे वहां उपस्थित अधिकांश गुजराती और पंजाबी लोगों में हर्ष की लहर दौर गयी. मोदी के अच्छे दिन की चर्चा डेविड कैमरन ने भी की. सबसे बड़ी बात यह लगी की लेडी कैमरन वहां साड़ी में नजर आयीं और पूरे कार्यक्रम में वे भी मौजूद रहे.

'ब्रेनड्रेन' देशप्रेमी भारतीयों के लिए सदैव दुख का विषय रहा है. पर दूसरा पहलू भी महत्वपूर्ण रहा कि तमाम प्रतिभाओं को स्वदेश में अनुकूल माहौल और सम्मान न मिलने के कारण ही उन्हें विदेश में रोजी-रोटी तलाशनी पड़ी. प्रवासी भारतीय अब हर देश में पचासों हजार की तादाद में 'मोदी-मोदी' के नारे लगाते हुए अपनी खुशी और उत्साह का प्रदर्शन कर रहे हैं. जाहिर है कि उन्हें 'मोदी' से कोई लगाव हो या न हो भारत के उस प्रधानमंत्री को देखकर उन्हें खुशी होती है जिसने कई दशक बाद भारत को विदेशी धरती पर एक खास सम्मान दिलाया है. मोदी के नेतृत्व में भारत को जो सम्मान और रुतबा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मिल रहा है, उसने प्रवासी भारतीयों का सीना 'छप्पन इंच का' कर दिया। आत्म-गौरव उन्हें प्रफुल्लित कर रहा है. इसका सार्वजनिक प्रदर्शन करने से वो गुरेज नहीं कर रहे. उनका दबा हुआ भारत-प्रेम मोदी को देखकर कुलांचे मार रहा है. मोदी ने दशकों बाद उन्हें वह खुशी व्यक्त करने का मौका दिया जिसकी चाहत वर्षों-दशकों से वो सीने में दबाये हुए थे. 'मोदी-मोदी' के उनके नारे में वास्तव में 'भारत-भारत' की हुंकार ही छिपी है.

अब आते है वहां के संवाददाताओं से पूछे गए सवाल और मोदी के जवाब पर- 'भारत बुद्ध की धरती है, गांधी की धरती है और हमारी संस्कृति समाज के मूलभूत मूल्यों के खिलाफ किसी भी बात को स्वीकार नहीं करती है. हिन्दुस्तान के किसी कोने में कोई घटना घटे, एक हो, दो हो या तीन हो, सवा सौ करोड़ की आबादी में हमारे लिए हर घटना का गंभीर महत्व है. हम किसी को बर्दाश्त नहीं करेंगे. कानून कड़ाई से कार्रवाई करता है और करेगा। भारत एक विविधिता पूर्ण लोकतंत्र है जो संविधान के तहत चलता है और सामान्य से सामान्य नागरिकों, उनके विचारों की रक्षा को प्रतिबद्ध है, कमिटेड है'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीबीसी के रिपोर्टर के एक प्रश्न के जबाब में ये बातें कहीं. उस संवाददाता ने यह प्रश्न किया था कि भारत क्यों लगातार असहिष्णु स्थल बनता जा रहा है? उस रिपोर्टर ने भारत में हाल की असहिष्णुता की घटनाओं का हवाला भी दिया था. प्रधानमंत्री मोदी ने न सिर्फ उचित जबाब दिया बल्कि सारी दुनिया को यह आश्वासन भी दिया कि भारत के किसी भी हिस्से में असहिष्णुता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. हालाँकि यह बातें बहुत पहले भारत में कही जानी चाहिए थी. इसे कहने में श्री मोदी ने काफी देर कर दी और दूसरे-दूसरे मुद्दे में उलझकर रह गए, फलस्वरूप बिहार में उनकी पार्टी तीसरे नंबर की पार्टी बनकर रह गयी.

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरन के साथ वार्ता के बाद हुए संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में 'द गार्डियन' के रिपोर्टर ने पीएम मोदी से लंदन की सड़कों पर हो रहे प्रदर्शन के बारे में पूछा था और गुजरात में उनके कार्यकाल पर भी सवाल खड़ा किया था कि गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर उनके रिकॉर्ड को देखते हुए वह उस सम्मान के हकदार नहीं हैं, जो विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के नेता को सामान्य तौर पर मिलता है.

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने जवाब में कहा, 'अपना रिकॉर्ड दुरुस्त कर लीजिए. २००३ में मैं यहां आया था और मेरा बहुत स्वागत, सम्मान हुआ था. यू.के. ने मुझे कभी यहां आने से नहीं रोका. कोई प्रतिबंध नहीं लगाया. समायाभाव के कारण मैं यहां नहीं आ पाया, यह अलग बात है. कृपया अपना नजरिया ठीक कर लें.' प्रधानमंत्री मोदी ने उस रिपोर्टर को बहुत सटीक, सही और करारा जबाब देकर निरुत्तर कर दिया.

'द गार्डियन' समाचार पत्र के एक पत्रकार ने संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में मोदी के साथ खड़े ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरन से सवाल किया कि मोदी का देश में स्वागत करते हुए वे कितना सहज महसूस कर रहे हैं, खासकर इस तथ्य को देखते हुए कि उनके प्रधानमंत्री पद के पहले कार्यकाल के समय मोदी को गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर ब्रिटेन आने की अनुमति नहीं दी गई थी. कैमरन ने अपने जवाब में कहा, 'मुझे मोदी का स्वागत करने में प्रसन्नता है. वह एक विशाल और ऐतिहासिक जनादेश के बाद यहां आए हैं. जहां तक अन्य मुद्दों का सवाल है, उसकी कानूनी प्रक्रियाएं हैं.'

बिट्रिश प्रधानमंत्री ने कितना सटीक जबाब दिया है. हमारे देश में प्रधानमंत्री मोदी को मिले विशाल और ऐतिहासिक जनादेश की आज विदेशों में जय-जयकार हो रही है. जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा ब्रिटिश संसद में दिए गए भाषण की तारीफ की है और एक अच्छे राजनीतिज्ञ का परिचय दिया है. उन्होंने एक ट्विटर अकाउंट पर किए गए एक ट्वीट के जवाब में कहा, 'भारतीय प्रधानमंत्री ने ब्रिटिश संसद में वहां के सांसदों के समक्ष बेहतरीन भाषण दिया. हम उससे क्यों गौरवान्वित नहीं हो सकते. ' यह देश के लिए गौरव की बात है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेहद शानदार और कई मायनों में ऐतिहासिक भाषण ब्रिटिश संसद में दिया. उसकी जितनी भी तारीफ की जाये, कम है. अपने ब्रिटेन दौरे के अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने न सिर्फ ब्रिटिश पार्लियामेंट में शानदार और ऐतिहासिक भाषण दिया, बल्कि लंदन के वेंबले स्टेडियम में भारतीय समुदाय के ६० हजार से ज्यादा लोगों की रिकार्डतोड़ और ऐतिहासिक भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'हम दुनिया से अब मेहरबानी नहीं चाहते. हम बराबरी चाहते हैं, मैं १८ महीनों के अनुभव से कह सकता हूं कि आज भारत के साथ जो भी बात करता है बराबरी से बात करता है.' यह पूरे देश के लिए गौरव की बात है. उन्होंने कहा कि 'भारत अब विकास के पथ पर चल पड़ा है. भारत के गरीब रहने का कोई कारण नजर नहीं आता. दुनिया भारत में एक नई संभावना देख रही है. भारत के प्रति दुनिया का नजरिया बदला है. पहले हाथ मिलाते थे अब हाथ पकड़ कर रखते हैं. यह बदलाव भारत की सफलता की निशानी है.'

अब आता हूँ अपनी बात पर. कुछ बातों पर मोदी जी अपनी ही पीठ बार-बार ठोकते नजर आते हैं. जनधन, स्वच्छता आदि पर वे बहुत बार बोल चुके हैं. तीस से अधिक विदेश यात्राओं के अगर परिणाम दिखेंगे

(शेष पृष्ठ २३ पर)

पुरस्कार वापसी का सच

बिपिन किशोर सिन्हा

प्रख्यात अन्तर्राष्ट्रीय लेखिका तसलीमा नसरीन ने अपने एक बयान में कहा है कि पहले मुझे लग रहा था कि सच में साहित्यकार पुरस्कार वापिस करके अपने दुख की अभिव्यक्ति कर रहे हैं, परन्तु अब भारत में जिस तरह से पुरस्कार वापिस किए जा रहे हैं और जो कारण दिया जा रहा है, सच में ये सब भारत सरकार के विरोधियों का एक षड्यंत्र है, ताकि भारत यूनाइटेड नेशन में स्थाई सदस्य न बन सके।

तसलीमा की बातों में गहराई और सच्चाई है। इन तथाकथित बुद्धिजीवियों को देश के वातावरण में कथित सांप्रदायिकता और असहिष्णुता से बहुत तकलीफ है, मानो भारत ईरान, सऊदी अरब, पाकिस्तान या बांग्ला देश बन गया हो। पिछले दिनों ईरान में दो कवियों को ९९ कोड़े लगाए जाने की सजा सिर्फ इसलिए सुनाई गई कि इन कवियों ने गैर मर्द और गैर औरत से हाथ मिलाये थे। इन कवियों के नाम हैं- फातिमे एखटेसरी और मेहंदी मूसावी। इसीतरह ढाका में हत्या के शिकार लेखक और ब्लागर अविजित राय के साथ काम करनेवाले एक प्रकाशक की कट्टरपंथियों ने गला काट कर हत्या कर दी। वहीं इससे कुछ घंटे पहले ही दो सेक्यूलर ब्लागरों और एक अन्य प्रकाशक पर जानलेवा हमला हुआ। दुनिया भर के अखबारों में घटना की चर्चा हुई, तस्वीरें भी छपीं, लेकिन भारत के इन बुद्धिजीवियों ने संवेदना या निंदा का एक शब्द भी उच्चारित किया।

पुरस्कार वापस करने वाले तमाम बुद्धिजीवी बुजुर्ग हैं। इन सबने इमरजेन्सी देखी है। तब इन्दिरा गांधी ने सारे मौलिक अधिकार समाप्त कर दिए थे। उस समय न किसी को जुलूस निकालने का अधिकार था, न सभा करने का, न स्वतंत्र चिन्तन का, न बोलने का और न ही लिखने का। कुलदीप नय्यर की पुस्तक 'The Judgement' इन्दिरा गांधी, कांग्रेस और इन सत्तापोषित बुद्धिजीवियों का कच्चा चिट्ठा है। किस तरह संजय गांधी ने परिवार नियोजन के नाम पर नाबालिग बच्चों की भी नसबन्दी कराई थी, कम से कम चांदनी चौक, जामा मस्जिद और तुर्कमान गेट के वाशिंदे क्या अब तक भूल पाए हैं? ये बुद्धिजीवी उस समय इन्दिरा गांधी के सम्मान में कसीदे काढ़ रहे थे।

१९८४ में हजारों सिक्खों को कांग्रेसियों ने मौत के घाट उतार दिया, बिहार के जहानाबाद में लालू के राज के दौरान दलितों का नरसंहार हुआ, भागलपुर में भयंकर दंगा हुआ, गोधरा में सन् २००२ में साबरमती एक्सप्रेस की बोगियों में आग लगाकर सैकड़ों हिन्दू तीर्थयात्रियों को जिन्दा जला दिया गया, कश्मीर में हजारों हिन्दुओं की हत्या की गई, बहु-बेटियों से बलात्कार किया गया और अन्त में पूरी कश्मीर-घाटी के हिन्दुओं को भगाकर देश के दूसरे भागों में शरणार्थी बना दिया गया, परन्तु तक इन बुद्धिजीवियों ने चूं तक नहीं की। देश का सांप्रदायिक माहौल खराब करने के लिए श्रीनगर, कलकत्ता, दिल्ली, चेन्नई, बंगलोर इत्यादि शहरों में विज्ञापित करके सड़क के बीचोबीच मीडिया के कैमरों के सामने 'बीफ' खाया और परोसा गया, तब इन बुद्धिजीवियों ने विरोध का एक स्वर भी नहीं निकाला।

सम्मान वापस करने वाले, सब-के-सब चिर काल से राष्ट्रवादियों का विरोध करते आ रहे हैं। इन्हें सम्मान अच्छे लेखन के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रवाद का विरोध और चाटुकारिता के लिए मिला है। ये सभी २००२ से ही नरेन्द्र मोदी का विरोध करते आए हैं। ये वही लेखक हैं, जिन्होंने अमेरीका को पत्र लिखा था कि नरेन्द्र मोदी को वीसा न दिया जाय। चीन, पाकिस्तान, सी.आई.ए. और नेहरू खानदान के लिए काम करने वाले इन (अ)साहित्यकारों ने मोदी को रोकने के लिए पश्चिमी जगत से भी हाथ मिलाया, ईसाई लाबी को भी सक्रिय किया। वाशिंगटन पोस्ट, टाइम्स आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में गत आम चुनाव के पहले मोदी के विरोध में सैकड़ों लेख लिखवाए, लेकिन भारत की जनता ने दिग्भ्रमित हुए बिना मोदी को प्रधान मंत्री बना दिया। २०१४ के जनादेश को न इन (अ)साहित्यकारों ने स्वीकारा और न इनके राजनीतिक आकाओं ने।

ये सभी सियासी लड़ाई हारने के बाद प्रधान मंत्री के खिलाफ दुष्प्रचार के जरिए लड़ाई लड़ने की योजना पर काम कर रहे हैं। दूसरों को असहिष्णु बताने वाले ये (अ)साहित्यकार मोदी के प्रति पूर्वाग्रह और असहिष्णुता के सबसे बड़े शिकार हैं। ये २०१४ के जनादेश को भी हजम नहीं कर पा रहे हैं। सब तरफ से निराश होने के बाद इनके आका राज्यसभा में अपने बहुमत के कारण किसी भी विकास के एजेन्डे का विरोध करने पर आमादा हैं, तो ये वो पुरस्कार, जिसके योग्य ये कभी थे ही नहीं, वापिस करके कम्युनिस्टों, कांग्रेसियों, आतंकवादियों, सांप्रदायिक तत्त्वों और सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता का विरोध करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय ताकतों का समर्थन कर रहे हैं। इन (अ)साहित्यकारों का न लोकतंत्र में विश्वास है, न सर्वधर्म समभाव, न शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व और ना ही धार्मिक और वैचारिक सहिष्णुता में तनिक भी आस्था है। अब तक सत्ता की मलाई चाट रहे ये (अ)साहित्यकार अपनी दूकान बंद होने की संभावना के कारण बौखलाहट में विक्षिप्त हो गए हैं। ■

सहिष्णुता

कृष्ण कांत वैदिक

सहिष्णुता का अर्थ है- सहनशीलता या क्षमाशीलता। निंदा, अपमान और हानि में अपराध करने वाले को दंड देने का भाव न रखना और अन्य लोगों के धार्मिक कर्मकाण्ड, खानपान और रीति-रिवाजों को सम्मान देते हुए उनसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना सहिष्णुता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, सहिष्णुता उनका विशेष गुण रहा है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं जिनमें क्षमा का मुख्य स्थान है। आपस्तम्ब स्मृति के अनुसार क्षमा प्राणियों का उत्तम गुण है। किसी व्यक्ति द्वारा किए गए दुर्व्यवहार, शारीरिक कष्ट या आर्थिक हानि किए जाने से मन में क्रोध उत्पन्न होता है, जो शब्दों में प्रकट कर दिया जाता है या प्रतिक्रिया स्वरूप मानसिक या शारीरिक कष्ट दिया जाता है। सज्जन व्यक्ति अपने विरुद्ध किए गए अपराध को भूल जाते हैं तथा क्षमा प्रदान कर देते हैं। परस्पर एक दूसरे के अपराध को क्षमा करने की उदारता, हम में होनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति के प्रति जाने-अनजाने में हुए दुव्यवहार के लिए क्षमा मांगने से एक-दूसरे के प्रति मनोमालिन्य सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

महाभारत के अनुसार क्षमारूपी गुण सब को वश में कर लेता है। क्षमारूपी तलवार जिसके हाथ में है, उसका दुर्जन क्या बिगाड़ेगा? महाभारत में ही अन्यत्र यह भी कहा गया है कि क्षमा को दोष नहीं मानना चाहिए, यह निश्चय ही परम बल है। क्षमा निर्बल मनुष्यों का गुण है और बलवानों का आभूषण है। जैसे तृणरहित स्थान में जलती हुई अग्नि अपने आप शांत हो जाती है, उसी प्रकार क्षमावान् व्यक्ति के साथ बैर रखने वाले का बैर भी कुछ हानि नहीं पहुंचा सकता है। सहिष्णुओं को लोग निर्बल मान लेते हैं और क्षमाशीलता के गुण को भीरुता मानते हुए अवगुण समझने लगते हैं परन्तु यह परम बल है क्योंकि केवल शक्तिशाली व्यक्ति ही क्षमा कर सकता है। ऋग्वेद के अन्तिम मंत्र का भावार्थ यह है कि विश्व के समस्त निवासियों के संकल्प समान हों। उनके मन व भावनाएं समान हों। यदि उनके विचारों और भावनाओं में समानता होगी तो सहिष्णुता स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो सकती है। सहिष्णुता हमारी संस्ंति के रोम-रोम में बसती है। सहिष्णुता से ही हम राष्ट्र और विश्व में प्रेम और बन्धुत्व का प्रसार कर सकते हैं। ■

(पृष्ठ १७ का शेष)

लघुकथा : परछाई

पर थोड़ा अचरज से फिर पूछा, 'अंकल, लोग सहानुभूति जता भी एक दर्जन दीपक नहीं लेते। पर आप सारे!'

'बेटा, क्योंकि तेरी ही जगह कभी मैं था।'

-- **सविता मिश्रा**

कर्नाटक में हिंदी की स्थिति

डॉ सुनील कुमार परीट

कर्नाटक राज्य दक्षिण भारत का एक बडा राज्य है। इसका भू विस्तार १,९१,७५६ व.कि.मी. है। यहाँ की आबादी लगभग ६ करोड से भी ज्यादा है, और साक्षरता का प्रमाण ७५ प्रतिशत से भी ज्यादा है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत में नौवां स्थान और भौगोलिक दृष्टि से सातवाँ स्थान प्राप्त है। कर्नाटक चंदन एवं सोने की खान है। इतना सबकुछ होते हुए भी यहाँ की शिक्षा पद्धति मात्र निराली है ।

भारत में स्वतंत्रता के बाद शिक्षा पद्धति किस माध्यम में हो यही एक बडी समस्या थी और उसी समस्या से कर्नाटक भी जूझ रहा था। भारत में एक सूत्र शिक्षा पद्धति के बारे में अनेक समस्याएँ थी, तो तब 'कोठारी और मेहता आयोग' ने सन् १९६४ में 'त्रिभाषा सूत्र' बनाया। इस त्रिभाषा सूत्र के अनुसार प्रादेशिक भाषा कन्नड, राष्ट्रभाषा हिन्दी और अंग्रेजी को द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढाया जाना चाहिए। मगर कर्नाटक में तो अंग्रेजी भाषा को ही द्वितीय स्थान दिया गया। यहाँ 'त्रिभाषा सूत्र' प्रादेशिक या प्रथम भाषा- कन्नड, द्वितीय भाषा- अंग्रेजी और तृतीय भाषा- हिन्दी के रुप में लागू किया जा रहा है। यह सूत्र पहली कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक लागू किया गया था। परन्तु इस संदर्भ में भी हिन्दी भाषा को अन्याय ही हुआ है।

सब मानते है हिन्दी संसार की अत्यंत सरल एवं सुंदर भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है, परंतु कर्नाटक में अंग्रेजी भाषा को जितना महत्व दिया गया है, उतना महत्व हिन्दी भाषा को नहीं है। अब देखिए कर्नाटक में पहली कक्षा से ही अंग्रेजी पढाई जाती है, लेकिन राष्ट्रभाषा हिन्दी छठी कक्षा से पढाई जा रही है। यहाँ के सरकार के अनुसार या मनोवैज्ञानिक सूत्रों के अनुसार पता नहीं, कर्नाटक में पहली कक्षा से मातृभाषा कन्नड के साथ-साथ अंग्रेजी पढाई जाती है, पर राष्ट्रभाषा हिन्दी पढाई नहीं जा सकती। यह कितना विपर्यास है, यहाँ की शिक्षा पद्धति का। यह है कर्नाटक में राष्ट्रभाषा हिन्दी की दयनीय परिस्थिति। और यही है कर्नाटक में राष्ट्रभाषा हिन्दी की वास्तविकता।

आओ यह भी जान लें कि पद्धति कहाँ तक चलती है। सिर्फ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी दसवीं कक्षा तक पढाई जाती है। अब सोचने की बात यह है कि दस सालों तक मातृभाषा को ही पढाते समय बच्चे ठीक ढंग से मातृभाषा नहीं सीख पाते है तो इस पाँच साल में एक अपरिचित भाषा को सिखाना खिलवाड ही मानना योग्य है। उसके उपरांत इंटरमिडिएट कालेजों में हिन्दी को विकल्प के रुप में रखा गया है। अगर छात्र हिन्दी भाषा को आगे भी सीखने की तपाक में रहता है पर सरकारी इंटरमिडिएट कालेजों में हिन्दी विषय ही नहीं होता है। ५० प्रतिशत से भी ज्यादा कालेज अनेक संघ-संस्थाओं द्वारा चलाये जाते हैं, वहाँ पर मात्र कुछ हदतक हिन्दी पढाई जाती है। इससे और एक संकट भी पैदा हुआ है कि माध्यमिक पाठशाला के हिन्दी भाषा के अध्यापकों ने हिन्दी में एम.ए., एम.फिल. पीएच.डी. में अनेक स्नातकोत्तर क्षैक्षिक योग्यताएँ प्राप्त की है लेकिन उन्हे कोई पदोन्नति नहीं मिलती। क्योंकि उच्चतर सरकारी महाविद्यालयों में हिन्दी विषय ही नहीं है।

कर्नाटक के प्राथमिक स्कूलों से लेकर महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में हिन्दी को पढना-पढाना, सीखना-सिखाना उत्तर भारत की मात्रा में तो बहुत कम ही माना जाता है। प्रशासनिक एवं कार्यालयीन हिन्दी की बात करें तो सभी सरकारी कार्यालयों में, बैंकों में कागजात हिन्दी में होते हैं पर उसका कोई उपयोग नहीं करते क्योंकि वे हिन्दी नहीं जानते। और इसका मूल कारण है प्रारंभिक शिक्षा पद्धति।

कर्नाटक में अनेक सरकार आयी-गयी, पर चिंता की बात यह रह गयी है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी को कर्नाटक में उसको योग्य स्थान-मान देने में कोई चिंतन-मनन नहीं हो रहा है। हम सब राष्ट्रभाषा प्रेमियों की यही आशा है कि इस दिशा में कोई ठोस कदम उठाया जाये। नहीं तो कुल मिलाकर हिन्दी की स्थिति-गति इसी तरह आगे बढती गई तो एक दिन हिन्दी कहीं खो जायेगी। किसी और राष्ट्रभाषा राजभाषा की तलाश करनी होगी। इसका एक ही हल है कि देश भर में एक रूप की शिक्षा पद्धति हो। ■

समीक्षा

संग्रहणीय एवं उपयोगी निबंध संग्रह

शशांक मिश्र 'भारती' का निबंध संग्रह 'माध्यमिक शिक्षा और मैं' लेखक के अध्यापन काल में लिखे हुए अनेक लेखों और संस्मरणों का संग्रह है। उनके लेख मुख्यतः शिक्षा, शिक्षा प्रणाली और बाल साहित्य पर केन्द्रित हैं। इनके अतिरिक्त लोक साहित्य और भारतीय संस्कृति पर भी कुछ लेख सम्मिलित किये गये हैं।

सभी लेखों का स्तर उच्चकोटि का है और वे किसी माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थी के लिए बहुत उपयोगी हो सकते हैं। निबंध प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के लिए यह संग्रह सहायक हो सकता है। अनेक लेखों से नई-नई जानकारियां मिलती हैं।

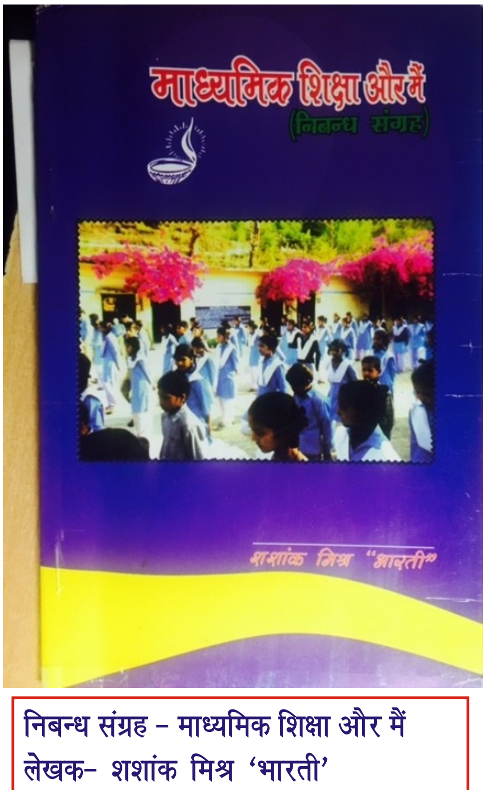

निबन्ध संग्रह - माध्यमिक शिक्षा और मैं
लेखक- शशांक मिश्र 'भारती'
प्रकाशक- बालसाहित्य शोध एवं संवर्धन समिति
पृष्ठ संख्या- ११०, मूल्य- रु. १५०

लेखक ने अपने गुरुजनों और शिक्षकों के बारे में अपने संस्मरण बहुत विस्तार से और गहराई से प्रस्तुत किये हैं जो पठनीय होने के साथ-साथ प्रेरणादायक भी हैं। उन्होंने कुछ लेखों में शैक्षिक जगत में भ्रष्टाचार पर भी प्रकाश डाला है।

पूरी पुस्तक में वर्तनी की गलतियां नहीं हैं, यह संग्रह की एक विशेषता है। पुस्तक की छपाई अच्छी है, परंतु मुखपृष्ठ अधिक आकर्षक हो सकता था। कागज की गुणवत्ता की दृष्टि से मूल्य उचित रखा गया है।

-- विजय कुमार सिंघल

(पृष्ठ २१ का शेष)

गीत

महाठगबंधन की नौका में देखो कितने पाल रहे
पप्पू चप्पू चला रहे और हवा हेकड़ीवाल रहे
ठान लिया था अब कौरव ने चक्रव्यूह का जाल रहे
अभी तो मिलके वोट बटोरो पीछे जो भी हाल रहे
अपनी नौका में इक 'माँझी' ले टूटी पतवार गया
देख सियारों के टोले से एक सिंह फिर हार गया
चक्रव्यूह की इस रचना में नहीं थे नेता ही केवल
साथ निभाया अभिनेता ने और मीडिया का था बल
उफन रहा जयद्रथ मीडिया बदले की ज्वाला में जल
गैरों को क्या दोष यहाँ शत्रुघ्न ही गया राम को छल
नौटंकी कर कर्ज नमक का चुकता साहित्यकार गया
देख सियारों के टोले से एक सिंह फिर हार गया
यूँ तो उसको मिले वही कि जैसी किस्मत बाकी है
ये न समझो आने वाले दिनों कि ये इक झांकी है
उठके जन जागृति जगाओ शपथ ये भारत मां की है
एक लड़ाई हार गए पर
युद्ध अभी भी बाकी है
ये न हो कि फिर से गिद्ध
विदेशी 'पंजा' मार गया
देख सियारों के टोले से
एक सिंह फिर हार गया

-- पुनीत 'कुमार' नई देहलवी

बाल कविताएं

तितली रानी

तितली रानी तितली रानी, बगिया की तुम हो महारानी
रंग बिरंगे पंख तुम्हारे, देख उन्हें होती हैरानी
पवन संग उडती फिरती हो, फूल फूल का रस पीती हो
अगर पकड़ना चाहे तुमको, झट से नभ में जा छिपती हो
छोटी हो पर बडी सयानी, तितली रानी तितली रानी
ईश्वर की तुम सुंदर रचना, अपने पंख बचाकर रखना
भंवरा काला गुन-गुन करता, तुमको तो चुप रहकर उड़ना
देख तुम्हें सब खुश हो जाते, बच्चों के तन-मन खिल जाते
जैसे हो बारिश का पानी, तितली रानी तितली रानी

चंदा मामा

सूरज ने सामान समेटा, तब चंदा मामा मुस्काए
चटक चांदनी छिटक गई, फौज सितारों की संग लाए

विटामिन

सेहत अच्छी होगा तो
अच्छा होगा मन
हरी साग ताजे फल लो
दूध का करना सेवन
विटामिन ताकत देगा खूब
स्वस्थ बनेगा तुम्हारा जीवन

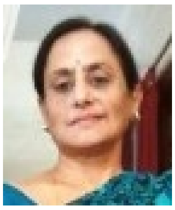

-- अमृता शुक्ला

इंतजार हर साल तुम्हारा, सेंटा क्लाज है लगता प्यारा
सुन्दर लाल चमकता चोंगा, श्वेत बर्फ सी प्यारी दाढ़ी
उपहारों की गठरी कंधे पर, रेंडियर खींच रहा है गाड़ी
बच्चों को करता वो प्यार, है इंतजार क्रिसमस का रहता
खुश होते बच्चे मिलकर के
इंतजार गिफ्टों का रहता
आओ हम सब खुशी मनायें
क्रिसमस का त्यौहार मनायें
धर्म जाति का भेद भुला कर
मिलजुल कर त्यौहार मनायें

-- कैलाश शर्मा

आओ मिलकर कुछ काम करें, छुट्टी के दिन साथ रहें
शरीर में आये आलस्य को, काम कर इसे दूर भगायें
दादा-दादी की फुलवारी को, सबसे पहले ठीक करें
आओ मिलकर कुछ काम करें
अपने से छोटे को, खेल-खेल में पाठ पढायें
जो भी हम पढ़ चुके हैं, उन्हें सारी बात समझायें
आओ मिलकर कुछ काम करें
माँ-पापा को आराम कहाँ
उनके कामों में हाथ बँटाकर
आज देंगे आराम उन्हें हम
साथ-साथ बैठकर हम सब
छुट्टी का भरपूर आनन्द उठायें
आओ मिलकर कुछ काम करें

-- निवेदिता चतुर्वेदी

हरदम घर में कंप्यूटर पर करते रहते काम
चैटिंग, सर्फिंग और टाइपिंग वही सुबह से शाम
निकलो घर से खुली हवा में करो बाग की सैर
मत खिलवाड़ करो सेहत से तभी रहेगी खैर
ज्यादा देर अगर बैठे तो है केवल नुकसान
मेरी इन बातों पर भैया क्यों न देते ध्यान
होगा सिर में दर्द तुम्हारे आँखें भी कमजोर
छोड़ो भी अपना कंप्यूटर
चलो प्रकृति की ओर
खुली फिजा में मिलती
ठंडक आओ इसके पास
तुम्हें बुलाते फूल-तितलियाँ
व हरियाली घास

-- डॉ. फहीम अहमद

बाल गीत

दादा जी के चश्मे जी

कान पकड़कर चढ़े नाक पर रोब जमाते चश्मे जी
दादा जी की आँखें बनकर , राह दिखाते चश्मे जी
छपा हुआ अखबार मच्छरों जैसा लिपा-पुता दिखता
अक्षर-अक्षर साफ दिखा खबरें पढ़वाते चश्मे जी
धूल गंदगी या उंगली का ठप्पा उन्हें पसंद नहीं
साफ मुलायम कपड़े से खुद को पुंछवाते चश्मे जी
दादा जी की हर दिनचर्या इनके बिना अधूरी है
सदा बुढ़ापे की लाठी बन
साथ निभाते चश्मे जी
कभी भूल या लापरवाही
से जब भी खो जाते ये
दादा जी को दादी जी से
डॉट खिलाते चश्मे जी

-- अरविन्द कुमार 'साहू'

गीत

पहले दिल्ली फिसल गई उसके बाद बिहार गया
देख सियारों के टोले से एक सिंह फिर हार गया
१५ वर्ष के कुशासन को राज-ऐ-जंगल कहते थे
खून डकैती और फिरौती खूब बिहारी सहते थे
रा'वन के गलियारों में घूस के नाले बहते थे
पशुओं का चारा खाने के लिए जेल जो रहते थे
आज उसी भ्रष्टाचारी को चुन इसबार बिहार गया
देख सियारों के टोले से एक सिंह फिर हार गया
एक सुनहरे कल को जिसने आशावान निहारा था
साथ मिलाके कन्धा जिसने जंगलराज सुधारा था
क्यों फिर उसने देके कन्धा ठग को एक पुकारा था?
क्या वो इतना बेचारा था और न कोई चारा था?
कुर्सी की खातिर अपनी गैरत को मार कुमार गया
देख सियारों के टोले से एक सिंह फिर हार गया

(शेष पृष्ठ २० पर)

शिशु गीत

१. नया साल

नया साल आने वाला, पिकनिक हमको जाना है
मम्मी-पापा से बोला, करना नहीं बहाना है
चिड़ियाघर को जाएँगे, खूब धमाल मचाएँगे

२. प्रॉमिस

पापा प्रॉमिस पूरा करिए, फर्स्ट क्लास में आया हूँ
और सभी पीछे छूटे हैं, इतने नंबर लाया हूँ
छुट्टी लेकर आप आइए, मुझे टैडी बीयर दिलाइए

३. सर्दी

सर्दी आई-सर्दी आई, निकली बक्सा खोल रजाई
जैकेट-कंबल के मौसम में, भाती छत पर धूप सिंकाई

४. कुहासा

सभी तरफ है घिरा कुहासा, कैसे मैं जाऊँगा स्कूल
डीएम अंकल छुट्टी दे दो, हम बच्चे बगिया के फूल
सपने थोड़े गढ़ लेंगे, दो दिन घर में पढ़ लेंगे

५. हॉकर भैया

हॉकर भैया बहुत मेहनती
सुबह-सुबह आ जाते हैं
सर्दी-गर्मी जो मौसम हो
अखबार हमें पढ़वाते हैं
मन में पलता सपना है
उनको भी कुछ बनना है

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

गीत

दिवाली पर पिया

दीवाली पर पिया,
चौमुख दरवाजे पर बालूँगी मैं दीया। ओ पिया!
उभरेंगे आँखों में सपनों के इंद्रधनुष
होठों पर सोनजुही सुबह मुस्कराएगी
माथे पर खिंच जाएँगी भोली सलवटें
अगवारे पिछवारे फसल महमहाएगी
हेर-हेर फूलों की पाँखुरी जुटाऊँगी
आँगन-चौबारे छितराऊँगी मैं पिया। ओ पिया!

माखन मिसरी बातें शोख मावसी रातें
अल्हड़ सौगंधों की नेह-सनी सौगातें
फिर होंगे हरे-भरे दिन रंगत नई-नई
ताजा होंगी फिर-फिर सावनी मुलाकातें
पास बैठ कर मन की गाँठें सुलझाऊँगी
सिरहाने गीत बन रिझाऊँगी मैं जिया। ओ पिया!
आना जी, मावस को साँझ ढले आना
दूर यों अकेले में दिल मत बहलाना
साथ दीप बालेंगे सुनेंगे हवाओं में
खुशमिजाज चिड़ियों का बस स्वर थहराना
मन से मन जोड़ूँगी, हर संयम तोड़ूँगी
सुख-दुख से जुड़कर सहलाऊँगी मैं हिया। ओ पिया!

-- डॉ. ओम निश्चल

पाठक की सहिष्णुता

कमल कुमार सिंह

आजकल देश में असहिष्णुता पे खूब बातें हो रही है, किसी को देश अच्छा नहीं लग रहा तो कोई ईराक सीरिया का अखबार पढ़ भारत में डर रहा है, "रक्तपात" की बातें करने वालो को भी असहिष्णुता की चिंता हो रही है, पार्टी के नेशनल मीटिंग में बात पसंद न आने पर बाउंसर से पिटवाने वाले भी मानते है की देश असहिष्णु हो रहा है, जानवरों का चारा खाने वाले भी इस चिंता में आगे है, धार्मिक आधार में विशेष सुविधावों का लाभ लेने वालो की असहिष्णुता पे चिंतित होना भी जायज है, इन सब के बीच भी यदि सबसे शांत और सौम्य है तो वो है एक अच्छा पाठक, वो आज के दौर में सबसे जादा सहिष्णु है, चुप है, उसे कोई शिकायत नहीं उसके स्तर का मटेरियल नहीं मिल रहा. आज के माहौल में अच्छा पढना और सुनना गायब है, गायब यूँ है की अभाव है, और जब अच्छे मटेरियल नहीं, अच्छे वक्ता नहीं तो खाक अच्छा पढेंगे या सुनेंगे ?

अखबार उठाओ तो गाय को लात क्यों मारी से ले के "स्पेशल तेल" तक का विज्ञापन आम बात है, देश में कितनी फर्जी लोग है या उनकी फर्जी कम्पनियों का उदय है ये भी पता लगता है जब १०-२० की संख्या में उनके बारे नोटिस पढने को मिलता है, की देखो ये दिवालिया है, फर्जी है, उनके पास मत जाना, और जो गए वो निनांत आपिया थे, कम्पनी ने उनको आपिया बना दिया. युगल प्रेमी कितने परेशान है, और होटल वाला कितना असहिष्णु भी अखबारों की हेड लाइन होती है, या तो शादीशुदा न होने पे कमरा देने की असमर्थता व्यक्त करने पर प्रेमी युगल असहिष्णु होक उस पर टूट पड़ने की खबर होती है, या मनेजर स्वयं "कैमरा सहित रूम" दे के असहिष्णुता का परिचय दने की. लड़की के पड़ोस के लौंडे के साथ फरारी से ले के, बाबु, फूफा, बुआ, दीदी की अंत्येष्टि तक की खबरे छाप जैसे भगवान् को नोटिस भिजवाया जा रहा हो, बाबू जी मरे हो तो उनकी फोटो थोड़ी बड़ी रखी जाती है, आखिर उनके बाद तो अब सब उनके छपवाने वाले का ही है. मसाज करके बोडी मस्त रखे टाइप का चिंतन जानकारी पते के साथ लिखी होती, अखबार ये भी बताता है कुछ लोग इस देश में महा कुंठित है या खलिहर-अलहदी आदि टाइप के लोगो के लिए भी अखबार में विशेष स्थान है, तमाम नंबर होते है "फोन घुमाए, चटपटी बाते करें".

सम्पादकीय कालम में आजकल निम्बू से मुहांसे कैसे मिटाए की जानकारी होती है, अ नलाइन मिडिया और अखबारों में सेक्स पावर कैसे बढाए या कहाँ किस अवस्था में करे की भरपूर जानकारी होती है, या कौन सी अभिनेत्री किसके साथ पकड़ी गयी की विस्तृत और प्रामाणिक जानकारी होती है. किताबो में मस्त राम, और सचित्र किताबे नौजवान पीढ़ी की पहली पसंद और सुलभ है, जिसके सहारे वो काफी कल्पना शील हो जाता है और वैसलीन के डब्बे तक को देख उसके मस्तिष्क में क्रांतिकारी विचार कौंध जाते है, लेकिन उनके घर में साहित्य नदारद, हो भी न क्यों? साहित्य और साहित्यकार तक ऐसे कि उनके या उनके लिखे के बारे में जनता को पता नहीं जब तक वो असहिष्णुता पर अपना अवार्ड नहीं लौटाते, ऐसे माहौल में " द्र रंगीन चित्रों सहित" किताबे मजबूती से मार्केट में पैर जमा रही है. पत्र पत्रिका को उठावो तो आप इस जुल्मी दुनिया में कितने कमजोर है इसका एहसास आपको होता है, और इसका आपके रिश्ते पे क्या प्रभाव पड़ सकता है बखूबी समझया जाता है, मजबूत होने के लिए पता भी लिखा होता है, आपका नाम पता गुप्त रखने की गारंटी के साथ.

इतने जुल्म सहने के बाद भी एक अच्छा पाठक कश्मीरी पंडितों की तरह सहनशील है, चुप है, उसका दर्द बाटने वाले न कोई नेता है न ही धार्मिक संघठन वो बस मेरी तरह अपना दर्द लिख देता है. ■

असहनीय असहिष्णुता, सहा नहीं जाए रे, दंगों के बिना रहा भी नहीं जाए रे

डॉ मनोहर लाल भण्डारी

वाकई भारत में बहुत ही ज्यादा और असहनीय असहिष्णुता का वातावरण है, सबका दम घुटने लगा है, खासतौर पर कुछ खास लोग बेहद बेचैन हैं-

विदेशों में मोदी छा रहे हैं, सम्मान पा रहे हैं, उन्हें बिला वजह बहुत अहमियत दी जा रही है, विदेशों से सम्बन्ध अच्छे बन रहे हैं, कैसे सहन हो?

विदेशों से निवेश तय हो रहे हैं, कैसे सहन करें?

दंगे बन्द हो गए, रोटियां कैसे सेंकें ?

दंगे बन्द अखबारों में सुर्खियों भरे लेख लिखकर हिन्दुओं को कैसे कोसें, साहित्य के पुरस्कार कैसे मिलें?

दंगे बन्द, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को बदनाम कर, संघ को कटघरे में कैसे खड़ा करें ?

दंगे बन्द हैं तो टी.आर.पी. बढ़ाने के बेहतरीन अवसरों से वंचित हो गए हैं, सहन कैसे करें ?

दंगे बन्द तो भारत, भाजपा, संघ आदि को विश्व में बदनाम करने के मौके खत्म, कैसे सहन हो?

सीमापार से आतंकी नहीं आ पा रहे है, सीमा पार से आ रहे घुसपैठियों को मार गिराया जा रहा है, मानवता की हत्या को कैसे सहन करें ?

घुसपैठियों द्वारा मारे जा रहे सैनिकों और सेना के अधिकारियों को सोश्यल मीडिया पर बहुत सम्मान मिल रहा है, इससे तो सैनिकों का हौसला बहुत बढ़ेगा, भला कैसे सहन करें ?

प्रधानमंत्रीजी विदेश यात्रा में हमें ले नहीं जा रहे, विदेश जाने की लत सी पड़ चुकी है, वहां ऐश करने की तलब असहनीय हो गई, क्या करें ?

आम मुसलमान अपने काम में शान्ति से मगन है, धन्धें अच्छे से चल रहे हैं, तरक्की में मगन हैं, मन अशान्त तो होगा ही, खाना तक नहीं पच रहा है, पाचनसुधा भी बेअसर है, क्या करते ?

आम मुसलमानों के बच्चें अपढ़ रहकर छोटे रोजगारों की बजाय मेडिकल क लेजों और अन्य प्रकार की उच्च शिक्षा में पहले के मुकाबले तुलनात्मक रूप से ज्यादा आने लगे हैं, आम मुसलमान पढ़ने में आगे बढ़ेंगे तो किसे असुरक्षित सिद्ध कर, उन्हें अपना हथियार बनायेंगे, बड़ी बेचैनी है।

इतना भड़काने के महीनों बाद भी देश के हिन्दू मुस्लिम एक दूसरे की जान के दुश्मन नहीं बनें हैं, असहनीय शान्ति है, असहिष्णुता की हद है।

मुसलमान गौ सेवा करने लगे हैं, बेहद बेचैनी है।

मुसलमान हिन्दुओं और हिन्दुस्तान की तारीफ करने लगे हैं, उल्टी, दस्त, होने लगे हैं।

मुसलमान संघ के प्रचलन जुलूसों में फूल बरसाने लगे हैं, दिल के दौरे जैसी स्थिति है।

मुस्लिम संत मुस्लिमों को हिन्दुओं की तारीफ करने लगे हैं। बोहरा समुदाय के सबसे बड़े संत मोदीजी की सार्वजनिक तारीफ कर रहे हैं, हमें तो जानलेवा अस्थमा का अटैक आने लगा है।

आखिर पता चल ही गया

अभी अभी पता चला है कि सारी असहिष्णुता की बड़ी जड़, हिन्दुओं की जागरूकता है। पता नहीं, क्यों इन दिनों हिन्दू अपने साथ हो रहे अत्याचारों, भेदभावों, आदि के खिलाफ मुंह खोलने लगा है, यह असहनीय है। हिन्दुओं को चाहिए कि जूते खाते रहें, पिटते रहें, लुटे जाते रहें, लतियाते रहें, मगर गरियाने की कोशिश नहीं करें, यह असहनीय है। और इसमें मोदीजी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ही हाथ है।

सभी हिन्दुओं से अनुरोध है कि देश में सहिष्णुता की स्थिति को स्थापित करने तथा सेक्यूलरों, लेखकों, बड़े साहित्यकारों, इतिहासकारों की बिगड़ती सेहत की खातिर 'जैसे थे' वाली स्थिति में आकर पुनः सभी लोगों से लात मारने या पीटने का अनुरोध करें ताकि देश सहिष्णु हो जाए।

जो भी हिन्दू इस अपील को स्वीकारेगा, सेक्यूलर उसे खुश होकर ईनाम में एक जूता टिकाकर उपकृत करेगा। भिया, हमें (यानी देश को) बचालो, ये तो सहने की अन्तिम हद है। ■

टीका टिप्पणी

आईना बोलता है !

नितीश जी ने महिलाओं से किया हुआ वादा तो निभाया पर पुरुष प्रेंति की बलि चढ़ा दी। ऐसा नहीं है कि नशाबंदी कोई गलत कदम है, पर यह प्रयोग, विवादास्पद सफलता के साथ पहले भी किया जा चुका है। गुजरात में नशाबंदी है तो क्या वहाँ शराब नहीं मिलती? और क्या बिहार के लोग नशा छोड़ देंगे? होगा यही कि अवैध शराब का कारोबार चल निकलेगा और पुलिस वालों की चाँदी हो जाएगी।

मात्र निषेध लगाने से मनुष्य प्रेंति से जुड़ी समस्याओं का निदान कभी सफल नहीं हुआ है। हमें पहले यह देखना होगा कि शराब का सेवन किया क्यों जाता है। शराब, जहाँ उच्च वर्ग में एक शौक है, पाश्चात्य सभ्यता से जुड़े होने की पहचान है, वहीं कई लोगों के लिये यथार्थ से मुँह मोड़ने का साधन है, जीवन की उन विषम परिस्थितियों से, जिनसे पार न मिल पा रहा हो, बचने का तरीका है। जीवन की जंग से निश्फल जूझते हुए सब आत्महत्या नहीं कर लेते, बहुत से लोग ऐसे त्रासदी का इलाज शराब से करने लगते हैं। जिन्दगी की जद्दोजहद को भूल कर दो पल चैन के पाना चाहते हैं। ऐसे शराब सेवियों पर निषेध नहीं लागू हो सकता। अगर उन्हें आसानी से बाजार से उपलब्ध नहीं होती तो वे घर पर भी बना सकते हैं। और यही होता भी है। जिनकी आदत बन चुकी हो उन्हें सुधारना आसान नहीं है।

इस निषेध से जहाँ अवैध शराब के कारोबार को बढ़ावा मिलेगा, वहीं शराब की तस्करी भी खूब होगी। और इस तस्करी से किन को फायदा होने वाला है, किसकी लालबत्ती गाड़ियाँ इस्तेमाल होंगी, यह बताने की जरूरत नहीं है। हाँ, अगर कुछ असर पड़ेगा तो गाहे-बगाहे शौक फरमाने वालों पर जो अवैध शराब के अड्डे जानते नहीं और बाजार में पाएँगे नहीं। राजस्व तो अब भी आएगा पर सरकारी खजाने में नहीं।

-- मनोज पाण्डेय 'होश'

(पृष्ठ ७ का शेष)

कहानी : जगमग दीप

बार मेरी ओर देखा। तभी भैया ने माँ के चरण छूए तो प्रसन्न होकर भाभी के साथ-साथ मुझे व प्रतिमा को भी गले लगा लिया। माँ ने भैया-भाभी की आंखों को पढ़ लिया था। पुनः आशीर्वचन देते हुए दीपावली की शुभकामनाएं दीं।

माँ की आंखों में खुशी की चमक देखकर लग रहा था दीपावली के शुभ अवसर पर अन्य दीपों के साथ माँ के हृदयरूपी दीप भी जल उठे। जिनकी ज्योति ने सारे घर को जगन्नाथ कर दिया। प्रतिमा ने आंखों ही आंखों में पूछा, 'आपको भैया के आने की खबर पहले से ही पता थी ना!' मैंने भी मुस्कुराकर 'हा' में जवाब दे दिया।

दीप जलाते श्रवण ने प्रतिमा को कहा, 'देखा प्रतिमा तुमने अपने अहं को छोड़कर माँ के अहं की रक्षा करके पूरे घर के वातावरण को सुखमय कर दिया। इसी अहं के कारण ही तो घर-घर में झगड़े हो रहे हैं जो परिवार को टूटने की कगार पर पहुंचा देते हैं।'

'आप ठीक कह रहे हैं, पर इसका सारा श्रेय तो आपको ही जाता है।' घर की मुंडेर पर दीप रखते हुए प्रतिमा बोली।

'ईश्वर से प्रार्थना है कि हमेशा इसी तरह खुशी के दीप जलते रहें।' कहकर श्रवण ने प्रतिमा को गले लगा लिया। दोनों की आंखें चमक उठीं। (समाप्त)

(पृष्ठ १८ का शेष)

मोदी लंदन यात्रा

तो बोलने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी. कृषि, शिक्षा और स्वास्थ्य में अपेक्षित निवेश और रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे ताकि ये भारतीय विदेशों की जगह अपने देश में ही रहकर देश का अपेक्षित विकास करें. भारत के नौजवान मोदी जी को आशा भरी नजरों से देख रहे हैं. उनका प्रयास यथोचित है पर उनकी टीम के कुछ लोग या अफसरशाही उनके कार्य में रोड़ा अटका रही है. उन्हें इससे आगे निकलना ही होगा. सबको साथ लेकर चलने की प्रतिबद्धता का मतलब विपक्ष को भी साथ लेकर चलना होना चाहिए. कौन विपक्ष जनता और देश का विकास नहीं चाहेगा और अगर नहीं चाहेगा तो जनता उसका जवाब देगी. ■

(पृष्ठ ४ का शेष)

बाबा रामदेव को समझें

बाबाजी के अनेक उत्पादों को अपना चुके हैं।

अस्तु, यह पुण्यभूमि है, परमात्मा की असीम अनुकम्पा से बाबाजी आम जनता के विश्वास तथा सहयोग से सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करते ही जाएंगे, इसमें संशय नहीं है। उनके वृहद, सतत विकासशील और सफल देसी साम्राज्य से यह ध्वनित होता है कि भारत के नागरिक स्वदेशी को तेजी से अपना रहे हैं और आम देसी जनता ने उन्हें भारतरत्न या नोबेल सम्मान से अलंत कर दिया है।

अब समय आ गया है कि हम हजारों वर्षों की गुलामीजनित फूट डालो और फूंक डालो मानसिकता से मुक्ति पाकर देसी प्रतिभाओं की सफलता को हमारी अपनी सफलता मानते हुए खुले दिल से सराहें और देसी सफलता का वैश्विक जश्न आयोजित करें। ऐसा किया गया तो यकीन मानिए भारत के दूरदराज के गांवों की प्रतिभाएं अविश्वसनीय आविष्कार करने के पराक्रम दिखाने लगेंगी। ■

(पृष्ठ १६ का शेष)

कहानी : रक्तदान

में दया का सागर उमड़ा पड़ता था। शारदा मैम की कठोरता अक्सर खल जाती थी। इसके बावजूद मेरा काम परिष्कृत होता गया। शारदा मैम मुंह पर किसी की तारीफ तो कभी भी नहीं करती थीं, मगर मैं देख रही थी कि कई पेंचीदा केस वह मेरी ओर खिसका रहीं थीं। हर रोज एक नया चैलेंज।

उस दिन सोमवार था। सुबह-सुबह एक कम उम्र की युवती, कीर्ति दिखाने आई। अपनी अठारह वर्ष की उम्र से कहीं कम वह नजर आई। रंग एकदम पीला। कृशकाय देह। चेहरे पर गहरी उदासी और हताशा। उसके साथ उसकी भाभी उसे दिखाने आईं थीं। भाभी गहने, साड़ी आदि से समृद्ध नजर आईं। जैसे ही वह बोलने लगी, उसके पति व देवर ने मेरा दरवाजा ठेलकर अन्दर पदार्पण किया। दोनों ही हट्टे-कट्टे व वाचाल। बड़ा भाई उसकी भाभी का पति था। नाम था उमेश सिंह। छोटा भाई अविवाहित रहा होगा। उसने अपना नाम गणेश सिंह बताया। (अगले अंक में जारी...)

(पृष्ठ ४ का शेष)

बॉडी सर्विसिंग कार्यक्रम

तीसरा दिन- दिन में चार बार ४-४ घंटे बाद एक पाव मौसमी फल (सेव)।

चौथा और पाँचवाँ दिन- दिन में चार बार ४-४ घंटे बाद किसी रसदार फल (सन्तरा या मुसम्मी या अनन्नास) का जूस।

छठा दिन- दिन में चार बार ४-४ घंटे बाद एक पाव मौसमी फल (पपीता)।

सातवाँ दिन- नाश्ता अंकुरित अन्न तथा फल, दोपहर भोजन- उबली हरी सब्जी और सलाद, दोपहर बाद- फल का जूस, रात्रि भोजन- दोपहर जैसा।

आठवाँ दिन- नाश्ता-अंकुरित अन्न तथा फल, दोपहर भोजन- रोटी, उबली हरी सब्जी और सलाद, दोपहर बाद- फल का जूस, रात्रि भोजन- दोपहर जैसा।

विशेष

१. परहेज- ऊपर बतायी गयी वस्तुओं के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओं का पूर्ण परहेज करें। फ्रिज का पानी न पियें। नमक कम से कम लें।

२. दिन भर में कम से कम साढ़े तीन या चार लीटर सादा पानी पियें अर्थात् हर एक या सवा घंटे पर एक गिलास। जितनी बार पानी पीयेंगे उतनी बार पेशाब आयेगा। उसे रोकना नहीं है।

३. भोजन के बाद पानी न पियें। केवल कुल्ला कर लें। उसके एक घंटे बाद पानी पियें।

४. सभी तरह की दवायें बिल्कुल बंद रहेंगी।

५. नहाने के साबुन का प्रयोग न करें। गीली तौलिया से रगड़कर नहायें। सिर को मुल्तानी मिट्टी से सप्ताह में दो बार धोयें। सिर में केवल शुद्ध नारियल का तेल डालें।

६. यदि यह कार्यक्रम चलाते हुए कोई उपद्रव हो, जैसे उल्टी, दस्त, बुखार, खांसी, जुकाम, सिर दर्द, बदन दर्द आदि, तो उसे अच्छा लक्षण मानें और कोई दवा न खायें। ये उपद्रव एक-दो दिन में अपने-आप शान्त हो जायेंगे। ■

जन चेतना कार्टून पोस्टर प्रदर्शनी 'खरी-खरी' के ३० वर्ष पूर्ण

लखनऊ। यहां १४ नवम्बर, २०१५ को दिल्ली के श्री किशोर श्रीवास्तव द्वारा तैयार की गई जन चेतना कार्टून पोस्टर प्रदर्शनी 'खरी-खरी' के ३० वर्ष पूर्ण करने के अवसर उसका बाल दिवस के उपलक्ष्य में 'हमराह फाउंडेशन' के सौजन्य से भव्य आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध साहित्यकार एवं उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के निदेशक डॉ. सुधाकर अदीब और अध्यक्षता वरिष्ठ व्यंग्यकार और अट्टहास पत्रिका के संपादक श्री अनूप श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर स्वच्छ भारत विषय पर अनेक बच्चों को एक चित्रकला प्रतियोगिता में पुरस्कृत भी किया गया। समारोह का संचालन टीवी एंकर कु. विपनेश माथुर (नॉएडा) ने किया और आभार व्यक्त किया संस्था की अध्यक्ष श्रीमती रीता प्रकाश ने।

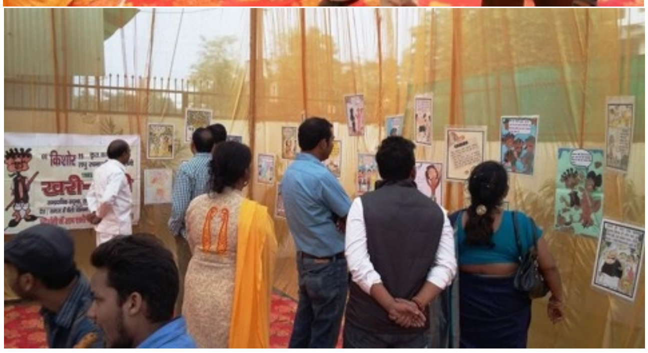

इस अवसर पर डॉ अदीब ने श्री किशोर की व्यंग्य चित्रकारी, गायन, अभिनय आदि क्षेत्रों की प्रतिभाओं का ज़िक्र करते हुए उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का धनी कलाकार बताया और कहा कि उनकी प्रदर्शनी के कार्टून केवल हंसाते या गुदगुदाते ही नहीं हैं अपितु वे संदेशपरक भी हैं जिनकी आज हमारे समाज में बहुत ज़रूरत है। कार्यक्रम के अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री अनूप श्रीवास्तव ने जन जागरूकता के लिये ऐसी प्रदर्शनियों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रदर्शनी के माध्यम से श्री किशोर द्वारा दहेज़, जातपात, कन्या भ्रूण हत्या, भ्रश्टाचार, परिवार नियोजन, सांप्रदायिकता, पर्यावरण, यौन उत्पीड़न और भाषा आदि संबंधी उठाये गये मुद्दे इस प्रदर्शनी को एक मिशन का रूप देते हैं।

इससे पूर्व इस प्रदर्शनी के बारे में बोलते हुए संस्था के पदाधिकारी श्री आशीष मौर्य ने बताया कि इस प्रदर्शनी के अब तक सौ से भी अधिक प्रदर्शन दिल्ली सहित झाँसी, ललितपुर, साहिबाबाद, मथुरा, आगरा, देवबंद, खुर्जा, गाजियाबाद, बिजनौर, गोरखपुर (उ.प्र.), अंबाला छावनी (हरियाणा), जबलपुर (म.प्र.), शिलांग (मेघालय), बेलगाम (कर्नाटक), सोलन (हि.प्र.), हिम्मत नगर (गुजरात), नांदेड, कोल्हापुर, मुंबई (महाराष्ट्र), भरतपुर, राजसमन्द, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान), खटीमा (उत्तराखंड), पटियाला (पंजाब) और गंगटोक (सिक्किम) में हो चुके हैं। इसे कई राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी किया जा चुका है।

इस अवसर पर लखनऊ के कला प्रेमियों सहित फेसबुक, वाट्सअप और ट्यूटर आदि सोशल साइटों से जुड़े देशभर के अनेक कलाप्रेमी उपस्थित थे, जिनमें सर्वश्री राम प्रकाश वर्मा (कानपुर), नवीन शुक्ला (झाँसी), राकेश श्रीवास्तव (इलाहाबाद), पूजा श्रीवास्तव (कानपुर), कादम्बिनी पाठक (दिल्ली), सुमन श्रीवास्तव (बाराबंकी), मीता राय (गाज़ियाबाद), जितेन्द्र चतुर्वेदी (बहराईच), अनुराग मिश्र 'गैर' (लखनऊ), अरुण नागर (उरई), आशा पांडे ओझा (माउन्ट आबू), पूनम प्रकाश शुक्ल (मुंबई), आशीष मौर्य, अनुराग अस्थाना, अमित सक्सेना (लखनऊ) और रचना श्रीवास्तव (इलाहाबाद) के नाम उल्लेखनीय हैं। ■

दोहे

टिमटिमा दीपक गए, फैला दिया उजास।
दीवाली ले आ गई, आशा और उल्लास।।
जगमग किसने है किये, नभ के दीप हजार।
बिन बाती बिन तेल के, जलते हर इक बार।।
नैनों से नयना मिले, जले हजारों दीप।
सिंधु मन तूफान उठा, भाव छुपे थे सीप।।
दीप सजा रोशन किया, घर का हर इक द्वार।
छल-कपट को त्याग दे, हो रोशन त्यौहार।।

-- गुंजन अग्रवाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पत्रकारों से दिवाली मिलन

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के मीडिया सेल की ओर से पत्रकारों के लिए प्रधानमंत्री मोदी के साथ दिवाली मिलन समारोह आयोजित किया गया। नियत समय पर पत्रकार आये जिनका भाजपा नेताओं ने स्वागत किया। अंदर देशभक्ति के गानों ने पत्रकारों को मंत्रमुग्ध कर रखा था। प्रधानमंत्री मोदी, अध्यक्ष अमित शाह के अलावा वित्तमंत्री अरुण जेटली, रोड एंड ट्रांसपोर्ट मंत्री नितिन गटकरी, शहरी विकास मंत्री वेंकैय्या नायडू तथा संगठन मंत्री राम लाल मंच पर उपस्थित थे।

अमित शाह और उसके बाद नरेंद्र मोदी ने अपने भाषणों में पत्रकारों को दिवाली की शुभकामनाएं देते हुआ कहा कि हमारे समाज में उत्सव अपने आप में एक बहुत बड़ी ताकत हैं, जो समाज को गति देते हैं और नई उमंग भी देते हैं। हमारे उत्सवों के सामाजिक, आर्थिक पहलुओं की अगर समीक्षा की जाए जो अच्छी स्टोरी निकल सकती है।

पत्रकारों ने मोदी जी के साथ जमकर सेल्फी भी खींचीं। फिर सामूहिक भोजन हुआ। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री बनने के बाद दूसरी बार नरेन्द्र मोदी ने पत्रकारों के साथ सीधे बातचीत की। ■

कार्टून

-- काजल कुमार

जय विजय मासिक

कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई (महा.)
मो 09919997596; ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल
सहसम्पादक- विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान)
'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।